राउल वेल (शि.लालेख) के नीचे के दाहिने कोने का पुष्प

मित्र प्रकाशन गौरव ग्रंथ माला—६

राउल वेल

और

उसकी भाषा

संपादक

माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।

मूल्य
पाँच रुपये

मुद्रक :
वीरेन्द्रनाथ घोष
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।

प्रकाशकीय वक्तव्य

'राउल वेल' (राजकुल विलास) ग्यारहवीं शताब्दी का एक प्रेम-काव्य है। इस रचना की सामान्य भाषा दक्षिण कोसली है। इसके रचनाकार का नाम रोड है। सम्पूर्ण रचना एक शिला पर उत्कीर्ण है। यह शिला धार (मालवा) में प्राप्त हुई थी और इस समय यह प्रिंस आफ़ वेल्स म्युज़ियम, बम्बई में रखी हुई है। यद्यपि शिला दाहिने और बायें किनारे पर कुछ क्षत हो गयी है फिर भी "शिलालेख निश्चित रूप में अपने समग्र रूप में प्राप्त है; और यह किसी और बड़े लेख का अंश मात्र नहीं है। यह इससे ज्ञात होता है कि लेख '(ॐ) नमः सिद्धे (भ्यः)' से प्राप्त है और लेख की अन्तिम पंक्तियों के दोनों छोरों पर कमल-वन के रूप में पुष्प बने हुए हैं, जिससे यह प्रकट है कि लेख इसी स्थान पर समाप्त हुआ है।"

प्रस्तुत शिलालेख का विषय कलचरि राजवंश के किसी सामंत की सात नायिकाओं का नखशिख वर्णन है। प्रथम नखशिख की नायिका का ठीक पता नहीं चलता। दूसरे नखशिख की नायिका महाराष्ट्र की और तीसरे नखशिख की नायिका पश्चिमी राजस्थान अथवा गुजरात की है। चौथे नखशिख में किसी टक्किणी का वर्णन है। पाँचवें नखशिख का सम्बन्ध किसी गौड़ीया से है और छठे नखशिख का सम्बन्ध दो मालवीयाओं से है। ये सारी नायिकायें इस सामंत की नव-विवाहितायें हैं।

'राउल वेल' का रचनाकार कवि रोड इसी सामंत का, इस कृति के नायक का ही बंदी था। वह एक वृद्ध, अनुभवी कवि था और उसने अपने आश्रयदाता को प्रसन्न करने के लिये ही इस श्रृंगारिक रचना को तैयार किया था।

१९४५ ई० में दामोदर पण्डित कृत 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' की भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुए डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने कहा था—"जिस भाषा का विवरण इसमें दिया गया है, वह निस्सन्देह एक वास्तविक बोल-चाल की भाषा का उदाहरण है. . . और इसलिये 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' का मूल्य नव्य भारतीय आर्य भाषा शास्त्र के अध्ययन के लिये और भी अधिक है।" प्रस्तुत ग्रंथ के संपादक डा० माताप्रसाद गुप्त का कथन है कि, "यह उसी (उक्ति-व्यक्ति प्रकरण) प्रकार की दूसरी मूल्यवान् सामग्री है, जो यहाँ प्रकाशित की जा रही है; और कुछ बातों में उससे अधिक भी मूल्यवान् कही जा सकती है। यह 'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' से भी पूर्व की रचना है. . .एक कवि की कलापूर्ण अभिव्यक्ति है, जिसमें पद्य ही नहीं गद्य का भी प्रयोग उसके द्वारा अधिकार-पूर्वक किया गया है; और जिसके सम्बन्ध में एक बड़ी भारी बात यह है कि उसका पाठ शिलांकित होने के कारण अपने मूल रूप में सुरक्षित है।"

काव्य कला और रस की दृष्टि से इसका महत्व तो अधिक है ही, भाषा की दृष्टि से भी इसका महत्व सर्वाधिक है। भाषा शास्त्र के अध्येताओं और शोधकर्ताओं को इस शिलालेख के अनुशीलन से अनेक ज्ञातव्य बातें मालूम होंगी। शिलालेख में दक्षिण कोसली के अतिरिक्त अन्य नव्य आर्य भाषाओं के प्राचीनतम रूप देखने को मिल सकते हैं जिनका अनुशीलन करके भाषाओं के इतिहास में एक नवीन अध्याय जोड़ा जा सकता है। यह जान कर सहज ही आह्लाद होता है कि "कुछ नव्य भारतीय आर्य भाषायें ग्यारहवीं शती ईस्वी में ही इतनी प्रौढ़ हो चली थीं कि उनमें सरस काव्य-रचना हो सकती थी, वे केवल बोल-चाल की रचनायें नहीं रह गयी थीं।"

अपनी 'गौरव ग्रंथ माला' के अन्तर्गत ऐसी महत्वपूर्ण रचना को प्रकाशित करके मित्र प्रकाशन अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है।

डा० माताप्रसाद गुप्त ने ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ का संपादन करके भाषा एवं साहित्य के इतिहास में जो एक नवीन कड़ी जोड़ दी है, उसके लिये हिन्दी संसार उनका सदैव ऋणी रहेगा।

हमें आशा और विश्वास है कि यह ग्रंथ सर्वत्र समादृत होगा।

श्रीकृष्ण दास

उत्तर प्रदेश

के

मुख्य मंत्री

माननीय

श्री चन्द्रभानु गुप्त

को

सादर समर्पित

—माताप्रसाद गुप्त

विषय-सूची

पृष्ठ-संख्या

प्रस्तावना

प्राय: तीन वर्ष हुए, डॉ० हरिशंकर शर्मा ने, जो भूपाल कॉलेज, उदयपुर में प्राध्यापक हैं और उस समय मेरे निर्देशन में 'हिन्दी के आदिकालीन जैन साहित्य' पर कार्य कर रहे थे, प्रिंस आव् वेल्स म्यूज़ियम, बंबई से एक प्राचीन शिलालेख की छाप अपने उक्त कार्य के प्रसंग में मँगाई थी। देखने पर यह लेख स्वतंत्र अनुसंधान के लिए उपयुक्त प्रतीत हुआ, इसलिए मैंने इस पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया। कुछ समय बाद, जब इसका संपादन मैंने अधिकांश में कर लिया था, मुझे ज्ञात हुआ कि भारतीय विद्या भवन, बंबई के डॉ० हरिवल्लभ चूनीलाल भायाणी इस पर मुझसे पूर्व से कार्य कर रहे थे। अत: इस संबंध में मैंने उन्हें लिखा। उन्होंने लिखा कि उनका कार्य भी समाप्तप्राय था और मेरे कार्य से पहले से चल रहा था, इसलिए उनका कार्य प्रकाशित हो जाता तब मैं अपना प्रकाशित करता। तदनुसार जब उन का कार्य १९५९ के जून–जुलाई में भारतीय विद्या भवन की मुख-पत्रिका 'भारतीय विद्या' में (भाग १७, अंक ३–४, पृ० १३०–१४६) प्रकाशित हो गया, तब मैंने अपना कार्य 'हिन्दी अनुशीलन' के धीरेन्द्र वर्मा अंक में प्रकाशित किया।

भायाणी जी ने अपने लेख में एक भूमिका देने के अनंतर शिलालेख का पाठ और अर्थ दिया था और मैंने भी इस लेख में यही किया था, किन्तु शिलालेख के संबंध के हम दोनों के विचारों और निष्कर्षों में पर्याप्त अंतर था। इस प्रकार के मतभेद को देखते हुए मैंने शिलालेख पर और अधिक पूर्णता के साथ कार्य करने की आवश्यकता समझी और उसी का परिणाम प्रस्तुत कृति है। इसमें रचना के विषय के समस्त अध्ययन को यथासंभव पूर्णता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इसमें न केवल रचना का पाठ और उसका अर्थ ही संशोधित रूप में दिए गए है, रचना की एक सम्पूर्ण शब्दानुक्रमणी भी शब्दों की व्युत्पत्ति, व्यवहृत अर्थ तथा स्थल-निर्देश के साथ दे दी गई है। भाषा के अध्ययन के प्रसंग में इसमें आने वाली सात भाषाओं के सम्पूर्ण व्याकरण-रूपों का अलग-अलग उल्लेख किया गया है और तदनंतर उनका तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करते हुए यह भी दिखाया गया है कि वे तत्कालीन अपभ्रंश और औक्तिक भाषाओं में कहाँ तक मिलते हैं। इसी प्रसंग में रचना की सामान्य भाषा पर भी विचार किया गया है। भाषा-विषयक इस अध्ययन का लक्ष्य

मुख्यतः यह रहा है कि शिलालेख में आने वाली समस्त भाषाओं का, जो कि सात नव्य भारतीय आर्य भाषाओं के प्राचीनतम तत्व प्रस्तुत करती हैं, निरूपण हो सके, उनका तुलनात्मक अध्ययन हो सके, जिनका नाम उनकी नायिकाओं की प्रादेशिकता का उल्लेख नष्ट हो जाने के कारण ज्ञात नहीं है, उनका नाम निश्चित किया जा सके और सबसे अधिक इस बात का निश्चय किया जा सके कि रचना की सामान्य भाषा भी कोई है या नहीं, और है तो वह कौन-सी है। आशा है कि भाषा-विषयक प्रस्तुत अध्ययन को इसी दृष्टि से देखा जायगा।

मुझे हर्ष है कि हमारी भाषाओं के इतिहास की इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण नवीन उपलब्धि से यह प्रमाणित हो जाता है कि हिंदी, और हिंदी की भाँति ही कुछ अन्य नव्य भारतीय आर्य भाषाएं भी, ग्यारहवीं शती ईस्वी में इतनी प्रौढ़ हो चली थीं कि उनमें सरस काव्य-रचना हो सकती थी, वे केवल बोलचाल की भाषाएं नहीं रह गई थीं। अनेक विद्वान् हिन्दी और इसी प्रकार अन्य नव्य भारतीय आर्य भाषाओं का विकास कुछ पहले से मानते हुए भी साहित्य में उनका प्रयोग सं० १४०० के पूर्व नहीं मानते। इस लेख के नख-शिख-काव्य ने उनकी इस धारणा को भली-भाँति निर्मूल प्रमाणित कर दिया है, जो कि ग्यारहवीं शती का पुरानी कोसली का व्याकरण 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' नहीं कर सका था।

इस पुस्तक के रूप में अपना अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए १ जनवरी, १९६१ को मैंने शिलालेख को बम्बई जाकर देखा, तो ज्ञात हुआ कि ऊपर तथा नीचे की एक-एक पंक्ति तथा नीचे के दाहिने कोने का पुष्प उसके फ्रेम में दबे हुए हैं और बाईं ओर ऊपर के कोने का टुकड़ा ग़लत चिपकाया हुआ है। इसके अतिरिक्त ऊपर तथा नीचे की पंक्तियों के अक्षर शिलाखंड को चिपकाने के लिए लगाई गई सीमेंट से भरे हुए हैं। यह देखकर मैंने म्यूज़ियम के डाइरेक्टर डॉ० मोतीचन्द्र जी से जब उस फ्रेम को हटवा कर ऊपर तथा नीचे की पंक्तियों के अक्षरों में भरी हुई सीमेंट को निकलवाने का अनुरोध किया तो उन्होंने तत्काल अपने गैलेरी एसिस्टेंट श्री बी० वी० शेटी, एम० ए० को इस कार्य के लिए नियुक्त किया, जिन्होंने अत्यन्त तत्परता से शिलालेख का फ्रेम हटवा कर अक्षरों में भरी हुई सीमेंट स्वयं खुरच-खुरच कर निकाली। इस कार्य से दो अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य प्रमाणित हुए : एक तो यह कि लेख इसी शिलाखंड पर प्रारंभ और समाप्त हुआ है और दूसरे यह कि लेख किसी शासन आदि के रूप में नहीं उत्कीर्ण हुआ है। लेख के आदि में आए हुए '[ॐ] नमः सिद्धे[भ्यः]' ने लेख का प्रारंभ निर्विवाद

कर दिया और चूंकि ठीक उसके बाद आई हुई 'रोडें राउल वेल वखाणी' पंक्ति दूसरी बार लेख के अन्त में भी आती थी, इसलिए उसने यह प्रमाणित कर दिया कि रचना वहीं पर समाप्त हुई थी जहाँ यह पंक्ति दूसरी बार आती थी। नीचे के दाहिने कोने पर जो कलापूर्ण आकृति अपने पूर्ण आकार में उद्घाटित हुई, वह कोई मुद्रा या राजकीय प्रतीक का न हो कर कमल-वन की निकली। ठीक इसी प्रकार की एक आकृति लेख के नीचे के बाएं कोने पर भी दी हुई रही होगी, जिसका दाहिना छोर मात्र उस कोने के टूट कर निकल जाने के कारण शेष है। इस परिष्कृत और पूर्ण रूप में शिलालेख की एक नवीन छाप डा० मोतीचन्द्र जी ने बनवा कर मुझे भेंट की, जिसे इस पुस्तक के प्रारम्भ में दिया जा रहा है। मैं इस समस्त कृपापूर्ण सौजन्य के लिए डॉ० मोतीचंद्र जी का अत्यधिक आभारी हूँ, साथ ही उनके गैलेरी ऐसिस्टेंट श्री बी० वी० शेटी को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने उनके आदेश पर अत्यन्त तत्परता के साथ लग कर लेख के दबे हुए अंशों का उद्धार किया और उसकी एक अत्यन्त स्पष्ट छाप मेरे लिए अपने निरीक्षण में तैयार कराई। डॉ० मोतीचंद्र जी ने शिलालेख को प्रकाशित करने की अनुमति पहले ही दी थी, और रचना में आने वाले वस्त्राभरणों के संबंध में अपनी विशेषज्ञता से भी मुझे लाभान्वित किया; इसके लिए मैं उनका और भी अधिक आभारी हूँ।

इस कृति को अंतिम रूप में सर्वश्री प्रो० धीरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष, भाषा-विज्ञान विभाग, सागर विश्वविद्यालय, डॉ० बाबूराम सक्सेना, उपाध्यक्ष केन्द्रीय हिंदी कमीशन, दिल्ली, तथा डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, निदेशक, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली ने देख कर मेरा उत्साह-वर्द्धन किया है, इसके लिए मैं इन तीनों विद्वानों का हृदय से कृतज्ञ हूँ।

अंत में मैं श्री मित्र प्रकाशन (प्राइवेट) लि० तथा उसके पुस्तक विभाग के अध्यक्ष श्री श्रीकृष्ण दास का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को अधिक से अधिक शुद्धता से छाप कर प्रकाशित करने में अभीसिप्त उत्साह दिखाया है।

जयपुर
१५-४-६२

माताप्रसाद गुप्त

संकेत और संक्षेप

अ०	:	अव्यय
अक०	:	अकर्मक क्रिया
अधि०	:	अधिकरण कारक
अप०	:	अपभ्रंश
अपा०	:	अपादान कारक
उ०	:	उत्तरी अपभ्रंश
उक्ति०	:	'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण' की डॉ० सुनीतिकुमार चैटर्जी लिखित व्याकरण-संबंधी भूमिका
एक०	:	एकवचन
करण०	:	करण कारक
कर्त्ता०	:	कर्त्ता कारक
कर्म०	:	कर्म कारक
तगारे	:	डॉ० गणेश वासुदेव तगारे लिखित 'ए हिस्टॉरिकल ग्रामर आव् अपभ्रंश'
तृ०	:	तृतीय
द०	:	दक्षिणी अपभ्रंश
द्वि०	:	द्वितीय
नख०	:	नखशिख
प०	:	पश्चिमी अपभ्रंश
पु०	:	पुरुष
पु०	:	पुल्लिंग
पू०	:	पूर्वीय अपभ्रंश
प्र०	:	प्रथम
बहु०	:	बहुवचन
भवि०	:	भविष्यत् काल
भूत०	:	भूतकाल
मूल	:	मूल रूप

मपू०	:	मध्यपूर्वीय औक्तिक भाषा
विकृत	:	विकृत रूप
वि०।विशे०	:	विशेषण
संदेश०	:	'संदेश रासक' की डॉ० हरिवल्लभ चूनीलाल भायाणी लिखित व्याकरण-संबंधी भूमिका
संप्र०	:	संप्रदान कारक
संबंध०	:	संबंध कारक
संबो०	:	संबोधन कारक
संभा०	:	संभावनार्थ
सक०	:	सकर्मक क्रिया
सर्व०	:	सर्वनाम
सा०	:	सामान्य
स्त्री०	:	स्त्रीलिंग

विशेष—आगे रचना की भाषा के विषय के विवेचन में विभिन्न शब्दों अथवा शब्द-रूपों के साथ दी गई संख्याएँ शिलालेख की पंक्तियों की हैं। उक्ति०, तगारे तथा संदेश० के स्थल-निर्देश उनके अनुच्छेदों के द्वारा किए गए हैं।

भूमिका

दामोदर पंडित के 'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण'[1] की भाषा-विषयक भूमिका समाप्त करते हुए डॉ० सुनीतिकुमार चैटर्जी ने १९४५ में लिखा था, "उक्तिव्यक्ति-प्रकरण के माध्यम से हमें जिस प्रकार नव्य भारतीय आर्यभाषाएं मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषाओं से विकसित हुई हैं उसके अध्ययन के लिए कुछ मूल्यवान सामग्री प्राप्त हुई है : इसमें हमें मुख्यतः कोसली (या पूर्वी हिंदी) और साधारणतः ऊपर और नीचे की गंगा की घाटी की आर्य बोलियों के इतिहास का अध्ययन करने के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साक्ष्य मिला है। जिस भाषा का विवरण इसमें दिया गया है वह निस्संदेह एक वास्तविक बोलचाल की भाषा का उदाहरण है—वह पश्चिमी अपभ्रंश की भांति की कोई कम या अधिक कृत्रिम साहित्यिक भाषा मात्र नहीं है, और इसलिए 'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण' का मूल्य नव्य भारतीय आर्यभाषा शास्त्र के अध्ययन के लिए और भी अधिक है।" इस पुस्तक में जिस रचना का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है, उसके संबंध में ठीक-ठीक वही कहा जा सकता है जो ऊपर 'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण' के संबंध में कहा गया है; यह उसी प्रकार की दूसरी मूल्यवान् सामग्री है जो यहां प्रकाशित की जा रही है, और कुछ बातों में उससे भी अधिक मूल्यवान् कही जा सकती है। यह 'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण' से भी पूर्व की रचना है, जो किसी पंडित द्वारा केवलभाषा-परिचय के लिए नहीं प्रस्तुत की गयी है, जिस प्रकार 'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण' की गई है; बल्कि एक कवि की कलापूर्ण अभिव्यक्ति है, जिसमें पद्य ही नहीं, गद्य का भी प्रयोग उसके द्वारा अधिकार-पूर्वक किया गया है और जिसके संबंध में एक बड़ी भारी बात यह है कि उसका पाठ शिलांकित होने के कारण अपने मूल रूप में सुरक्षित है।

१. शिलालेख और उसकी दशा

यह शिलालेख प्रिंस आव वेल्स म्यूज़ियम, बंबई में रक्खा हुआ है। इसका आकार ४५"×३३" है। कहा जाता है कि यह धार (मालवा) से प्राप्त हुआ था।[2] वर्त्तमान रूप में यह भग्न अवस्था में है। लेख के बाएं भाग में शिलाखंड कर्णवत् ऐसा टूट गया है कि उसके चार टुकड़े हो गए हैं, और तोड़ पर पत्थर की पत इस प्रकार निकल गई हैं कि प्रत्येक पंक्ति के तीन-चार अक्षर नहीं रह गए हैं। इसके अतिरिक्त शिलाखंड के नीचे के बाएं कोने पर एक टुकड़ा निकल गया है। इतना ही नहीं, लेख को तीन स्थानों पर उसके दाहिने भाग में ऊपर तथा नीचे के अंशों के पत्थर को किसी अन्य काम में लाने के लिए छेनी के क्षत-विक्षत तथा किया गया है, इस कारण लेख का कुछ

१—प्रकाशक—भारतीय विद्याभवन, चौपाटी, बम्बई।

२—दे० म्यूजियम में लेख पर लगी हुई सूचना।

महत्वपूर्ण अंश अपाठ्य हो गया है। लेख की प्रथम पंक्ति की शिरोरेखा तथा उसके ऊपर का अंश और अंतिम पंक्ति का, जिसमें लेख संबंधी कुछ उपयोगी विवरण रहे होंगे, शिरोरेखा के नीचे का प्रायः समस्त अंश पत्थर को कहीं पुनः जड़ने के लिए छोटा करने के कारण काट कर निकाल दिए गए हैं। म्यूज़ियम में लेख की प्रथम तथा अंतिम पंक्तियों के अक्षरों में शिला-खंड को एक अन्य फलक पर चिपकाने के लिए प्रयुक्त की गयी सीमेंट भर गयी थी, किन्तु अब जैसा प्रस्तावना में बताया जा चुका है वह सीमेंट निकाल दी गई है। ये दोनों पंक्तियां पहले शिलालेख के फ्रेम में दबी सी हुई थीं, किन्तु अब वे दिख रही हैं। शिलाखंड के चिपकाने में अवश्य एक भूल अब भी रह गई है—वह यह कि ऊपर के बाएं कोने का टूटकर निकला हुआ टुकड़ा एक पंक्ति ऊपर चिपकाया हुआ है। आगे लेख का जो पाठ प्रस्तुत किया गया है, उसमें इस त्रुटि का परिहार कर दिया गया है।

शिलालेख निश्चित रूप में अपने समग्र रूप में प्राप्त है और यह किसी और बड़े लेख का अंश मात्र नहीं है, यह इससे ज्ञात होता है कि लेख '[ऊं] नमः सिद्धे [भ्यः]' से प्राप्त है और लेख की अंतिम पंक्तियों के दोनों छोरों पर कमल-वन के रूप में पुष्प बने हुए हैं, जिससे यह प्रकट है कि लेख इसी स्थान पर समाप्त हुआ है। लेख की अंतिम से पूर्व की पंक्ति में आई हुई एक अर्द्धाली, जो लेख के प्रारंभ में भी आती है, इसे और भी निश्चित कर देती है।[1]

२. रचना और लेखन-तिथि

लेख किस तिथि का है, अंतिम पंक्ति के कट कर निकल जाने के कारण यह अनिश्चित रह जाता है। काव्य का नायक कोई गौड़ क्षत्रिय लगता है: नखशिख में उसे 'गौड' संबोधित किया गया है—

१—गौड तुंहुं एक को पनु अउरु वर... (पंक्ति २८)
२—अइसउ करिउ तुहुं (?) लेख। (पंक्ति ३२)

१—डॉ० हरिवल्लभ चूनीलाल भायाणी का विचार है कि यह शिलाखंड बीच का है, इसके पूर्व और पश्चात् भी कम से कम दो अन्य शिलाखंड रहे होंगे और उनके इस अनुमान का आधार ऊपर उद्धृत अंतिम पंक्ति में 'भासहुं' के पूर्व 'आठहुं' पाठ की कल्पना है, जिसके अनुसार संपूर्ण रचना में आठ नखशिख रहे होंगे (भारतीय विद्या, भाग १७, अंक ३—४, पृ० १३०)। मेरा विचार इससे भिन्न था और मैंने यह माना था कि शिलालेख पूर्ण है (हिंदी अनुशीलन, धीरेन्द्र वर्मा अंक, पृ० २२)। मुझे प्रसन्नता है कि लेख का पुनरुद्धार कराने पर मेरा अनुमान पूर्णतः ठीक प्रमाणित हुआ।

३—स देखि . . . तुम्हा [रा] जे वेस ते सब भावहि कूडा (पंक्ति ३९)
४—त एवं तुम्ह नही छोडि कउ (पंक्ति ४०)
५—तुम्हइं . . . . . तुम्हहि सरिसउ वोलहि को जूझइ (पंक्ति ४४)

नायिकाओं में से नाम केवल एक 'राउल' का मिलता है :

१—आउंडउ जो राउ [ल सो] हुइ । (पंक्ति ११)
२—थणहि सो ऊंचउ किअउ राउल । (पंक्ति १२)
३—राउल दीसतु सउ जणु मोहइ । (पंक्ति १३)
४—सा वाखर णहुं राउल कइसी । (पंक्ति १४)

रचना का नाम 'राउल वेल'=राजकुल-विलास है, इसलिए शिलालेख के व्यक्ति राजकुल के प्रतीत होते हैं, किन्तु प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री से इन पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता है। लेख के अंत में दोनों छोरों पर दो आकृतियां हैं, जिनमें से एक भग्न है; जो शेष है वह कमल-वन की है, और जो भग्न है निश्चय ही वह भी उसी की रही होगी। इस प्रकार की आकृतियां लेखों के अंत में उनकी समाप्ति सूचित करने के लिए दी जाती हैं। ऐसी परिस्थितियों में लेख का समय-निर्धारण केवल लिपि-विन्यास के आधार पर संभव है। इसकी लिपि संपूर्ण रूप से भोज देव के 'कूर्मशतक' वाले धार के शिलालेख से मिलती है (दे० इपिग्राफिया इंडिका, जिल्द ८, पृ० २४१)—दोनों में किसी भी मात्रा में अंतर नहीं है, और उसके कुछ बाद के लिखे हुए अर्जुनवर्म देव के समय के 'पारिजात मंजरी' के धार के शिलालेख की लिपि किंचित् बदली हुई है (दे० इपिग्राफिया इंडिका, जिल्द ८, पृ० ९६)। इसलिए इस लेख का समय 'कूर्मशतक' के उक्त शिलालेख के आस-पास ही, अर्थात् ११वीं शती ईस्वी होना चाहिए।

३. रचना और लेखन-स्थान

इसका रचना-स्थान भी लेख की अंतिम पंक्ति के कट कर निकल जाने से अज्ञात हो गया है। अत: केवल लेख के अन्तर्साक्ष्य की सहायता से रचना-स्थान का निर्धारण किया जा सकता है।

रचना की सामान्य भाषा, जैसा हम आगे देखेंगे, पुरानी दक्षिण कोसली है और लेख में दक्षिण तथा पूर्व भारत के अनेक प्रदेशों के निवासियों को हीन अथवा वर्णित नायिकाओं और उनके वेशों के लिए झंखते हुए कहा गया है, यथा :

१—गोल्ले आ[नं]दिअ तुझचि देसु।
आनिक तेंह चा तो वेसु ॥ (पंक्ति ९)

२—एहु कानोडउं का इसउ झांखइ।
वेस अम्हाणउं ना जउ देखइ ॥ (पंक्ति १०)

३—केहा टेल्लिपुतु तुहुं आंखहि। (पंक्ति १५

४—ऐहा वेहु सुहावा टेल्ल।
आन्न तु संदा डहि परइ वोल्ल।। (पंक्ति १८

५—सो देखिउ आठम्विहि करउ चां[दु] इसउ भावइ।
केर एहु ओअिउ जूनउ ठेंचउ। (पंक्ति ३०

६—(गौड़ नायक से) स देखि—तुम्हारा जे वेस ते सव भावहिं कूडा
(पंक्ति ३९

७—अरे गौड हो गोल्ला हो वोलउ जो जसु भावइ। (पंक्ति ४१

इसलिए रचना-स्थान ऐसा होना चाहिए जो गोल्लों (गोदावरी प्रदेश के निवासियों) कानोडों (कर्णाट-ओड्र प्रदेश के निवासियों), टेल्लों (तिलंगाना - निवासियों), ओड्र (उड़ीसा - निवासियों) और गौडों (गौड़ देशवासियों) के क्षेत्रों से मिलता हुआ हो। इस प्रकार का प्रान्त दक्षिण कोसल है, जहां पर कोसली का ही एक रूप अब तक बोला जाता है। इसलिए इस रचना का रचना-स्थान दक्षिण कोसल होना चाहिए ऊपर कहा जा चुका है कि शिलालेख धार में प्राप्त बताया गया है, किंतु यह धार में उत्कीर्ण हुआ ही लगता है, उपर्युक्त कारणों से काव्य-रचना वहाँ हुई नहीं प्रतीत होती है। हम आगे देखेंगे कि रचना का भाषा-पक्ष भी इसी परिणाम की पुष्टि करता है।

४. रचना का विषय

ग्यारहवीं तथा बारहवीं शती में दक्षिण कोसल त्रिपुरी के कलचुरि वंश के राजाओं के शासन में था, और कलचुरि गौड़ नहीं थे, इसलिए यह लेख उनके किसी सामंत के संबंध का ही हो सकता है। इस लेख का विषय उक्त सामंत की सात नायिकाओं का नखशिख है। कुल छः नख-शिख इस लेख में आते हैं : पहला पंक्ति १ से ५ तक, दूसरा पंक्ति ५ से १० तक, तीसरा पंक्ति १० से १४ तक, चौथा पंक्ति १५ से १९ तक, पांचवां पंक्ति १९ से २८ तक तथा छठा २८ से ४६ तक। प्रथम नखशिख की नायिका प्रारंभ की पंक्तियों तथा कुछ अन्य अंशों के खंडित हो जाने से ज्ञात नहीं है, किन्तु जैसा हम आगे देखेंगे उसकी भाषा से वह पश्चिमी मध्यदेश की प्रतीत होती है। इसी प्रकार दूसरे की नायिका महाराष्ट्र की तथा तीसरे की नायिका पश्चिमी राजस्थान या गुजरात की ज्ञात होती है। चौथा नख-शिख किसी टक्किणी के संबंध का है, पांचवां किसी गौडीया के संबंध का और छठा दो मालवीयाओं के संबध का। इन अंतिम तीन नायिकाओं के प्रादेशिक नाम रचना में इस प्रकार आए हैं—

१—एही टक्किणी पइसति सोहइ। (पंक्ति १८

२—अइसो उवेसु जो गउडिन्हु केरउ। (पंक्ति २७

३—ज पुणु मालवी उवेसुहि आवंतु (पंक्ति २८)

४—कापडहिर करउ ज गोरी तहि सिंदूरी हि वेसु (पंक्ति ४३)

ज साम्वली तहिर पाटणी हि करउ। (पंक्ति ४३)

ये समस्त नायिकाएं उक्त सामंत की नव-विवाहिताएं ज्ञात होती हैं। नव वधू के लिए एक शब्द 'ओलअणी' का उल्लेख हेमचंद्र ने 'देशी नाम माला' में किया है। (१. १६०) । यह शब्द अव + लग् से बना ज्ञात होता है, जिससे बना हुआ 'ओलग' शब्द इस रचना में तीन स्थानों पर आया है—

१—जहिं घरे अइसी 'ओलगं' पइसइ। (पंक्ति १४)

२—मुह ससि 'ओलगं' च. . .नावइ। (पंक्ति २२)

३—जणु मुहचंद 'ओलग' णहं नखत वाल सतावीस

हा. . . .री आई अइसउ नावइ। (पंक्ति ३७)

'ओलग' का अर्थ सामान्यतः 'सेवा' या 'चाकरी' होता है, और इस अर्थ में यह शब्द 'बीसलदेव रास' (प्रस्तुत लेखक द्वारा संपादित संस्करण) में 'ऊलग' रूप में अनेक बार आया है—

१—ऊलग कइ मिसि गम करउं। (३५. ५)

२—सइंभरि धणीय किउं ऊलग जाइ। (३७. १)

३—ऊलग जाण कहइ धणी कउण। (३९. १)

४—किणि दुष देवर ऊलग जाइ। (४६. ६)

५—ऊलग जाण कउ षरउ कुसूत। (४८. २)

६—स्वामी ऊलग जाण की षरीय जगीस। (६०. १)

७—सषीय इणि कति नाह कोइ ऊलग जाइ। (६५. ६)

८—तिहि घरि ऊलग काइं करेइ। (७५. ६)

९—ऊलग पूगि घरि आवियउ भरतार। (१२१. १)

१०—म्हाकउ वार्‌यउ तू किउं ऊलगइं जाइ। (१२५. ४)

किन्तु छठे नख शिख में कहा गया है कि वर्णित मालवीयाओं को पति से मिलने के लिए सजाया जा रहा है :

समुदाइ कज मुह करी सोभ सजइ (पंक्ति ३६)

इस लिए यह प्रकट है कि इस रचना में वर्णित नायिकाएँ सामंत की नव-विवाहिताएँ हैं।

५. रचना का नाम और उसका कवि

इस रचना का कवि कौन था और रचना का नाम क्या था, यह भी ज्ञातव्य हैं। रचना के प्रारंभ और अंत में आता है—

रोड (डें) राउल व(वे)ल वखाणा (णी)। जइ...आपणु ज[ाणी]।
(पँक्ति १)

रोडें राउलवेल वखा [णी।] [सा]तहं भासहं जइसी जाणी।
(पंक्ति ४६)

अत: प्रकट है कि इसका कवि रोड और इस रचना का नाम 'राउलवेल' (=राजकुल-विलास) है। इसमें किसी सामंत के रावल (राजभवन) की रमणियों का वर्णन हुआ है, इसलिए नाम नितांत सार्थक है। इसका कवि रोड कौन था, इसके संबंध में हमें कहीं से कुछ ज्ञात नहीं होता। शिलालेख में वह अपने को 'वंडिरा' (बंदी) कहता है (पंक्ति १९, २२, २४, २६), इसलिए वह इस काव्य के नायक का बंदी था, यही ज्ञात होता है। रचना के समय वह वृद्ध भी था, क्योंकि उसे 'राहू' (=पलित केश वाला) कह कर संबोधित किया गया है (पंक्ति १९)। वह किसी राजा या राणा का आश्रित भी था, क्योंकि उसने रचना के प्रारंभ में कहा है :

हासे(सें) तोसे(सें) राजइ राणइ। (पंक्ति १)

यह शब्दावली रचना के अन्त में पुन: आता है :

एउ निसुणत ---त --।
--उ (?) हासें तोसें सोइ [॥]

असंभव नहीं कि यहाँ पर त्रूटित अंशों में उक्त आश्रयदाता का नाम आता रहा हो।

राउलवेल की भाषा

१. रचना की भाषा-समस्या

'राउल वेल' की भाषा पर विचार करते समय निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होती है—

१—पूरे काव्य की भाषा एक ही है, अथवा उसके भिन्न-भिन्न अंशों की भिन्न भिन्न ? अथवा सामान्य रूप से एक किन्तु विभिन्न अंशों में कुछ भिन्न-भिन्न ? यहां यह स्मरणीय है कि रचना के सात अंश हैं : आदि-अंत तथा छः नखशिख जो छः विभिन्न प्रदेशों की नायिकाओं के हैं।

२—पूरे काव्य की भाषा यदि एक है तो वह कौन-सी है, यदि उसके विभिन्न अंशों की भिन्न-भिन्न हैं तो वे कौन-कौन सी हैं, और यदि सामान्यतः एक और विभिन्न अंशों में किसी अंश में भिन्न-भिन्न, तो वह सामान्य भाषा कौन-सी है, और रचना के विभिन्न अंशों में जिन-जिन भाषाओं के तत्त्व मिलते हैं वे कौन-कौन सी हैं ?

३—रचना जिस समय की है, उस समय की अपभ्रंश और औक्तिक भाषाओं के जो उदाहरण उपलब्ध हैं, उनसे तुलना करने पर रचना की भाषा या भाषाओं के संबंध में क्या परिणाम निकाले जा सकते हैं ? यह कहने की आवश्यकता नहीं कि रचना उत्तर-कालीन अपभ्रंशों अथवा औक्तिक भाषाओं, अथवा उनके किसी प्रकार के मिश्रित रूप में ही प्रस्तुत की गयी है और वह प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के किसी रूप में अथवा मध्ययुगीन भारतीय आर्यभाषा के आदि अथवा मध्यकालीन रूपों में नहीं है।

उपर्युक्त प्रश्नों पर विचार करने के लिए एक तो यह आवश्यक है कि रचना के विभिन्न अंशों के भाषा-तत्वों का अलग-अलग निरूपण किया जावे, तदनंतर उनका परस्पर तुलनात्मक अध्ययन किया जावे और साथ ही यह भी देखा जावे कि तत्कालीन अपभ्रंश तथा औक्तिक भाषाओं में वे तत्त्व किन-किन क्षेत्रों की भाषाओं में पाए जाते हैं। यह कार्य बहुत ही दुर्गम होता, किन्तु अपभ्रंशों और पुरानी कोसली का जो भाषा-तात्विक अध्ययन इधर हुआ है, उसकी सहायता लेने पर यह कार्य बहुत-कुछ सुगम हो जाता है। इस प्रकार के कार्य तीन हैं : पहला है, डॉ० गणेशवासुदेव तगारे का 'ए हिस्टॉरिकल ग्रामर आव् अपभ्रंश' :, दूसरा है डॉ० हरिवल्लभ चूनीलाल भायाणी का 'संदेश रासक' की भूमिका में किया गया उसके व्याकरण का अध्ययन, और तीसरा है डॉ० सुनीति-कुमार चैटर्जी का 'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण' की भूमिका में प्रस्तुत किया गया उसके व्याकरण का अध्ययन। डॉ० तगारे ने केवल पश्चिमी, दक्षिणी तथा पूर्वी अपभ्रंशों का अध्ययन प्रस्तुत किया है, क्योंकि तब तक जब कि उन्होंने अपना ग्रंथ प्रस्तुत किया और क्षेत्रों का अपभ्रंश साहित्य उपलब्ध न था। डॉ० भायाणी का अध्ययन उत्तरी अपभ्रंश का है, क्योंकि 'संदेश रासक' की रचना मुलतान में हुई थी। डॉ० चैटर्जी का अध्ययन मध्यदेशीय

अपभ्रंश की पूर्वी शाखा के एक औक्तिक रूप पुरानी कोसली का है, क्योंकि 'उक्तिव्यक्ति-प्रकरण' में काशी की तत्कालीन औक्तिक भाषा का परिचय प्रस्तुत किया गया है। इन तीन अध्ययनों ने मेरे काम को काफ़ी सुगम बना दिया।

ये अध्ययन लेखन-प्रणाली ध्वनि-तत्त्व, शब्द-रचना और वाक्य-विन्यास के विभागों में किए जाते हैं। वाक्य-विन्यास की दृष्टि से कोई भी अन्तर तत्कालीन विभिन्न अपभ्रंशों और औक्तिक भाषाओं में नहीं मिलता है, इसलिए उसका अध्ययन प्रस्तुत प्रसंग में अनावश्यक होता, और ध्वनितत्त्व के अध्ययन उपर्युक्त तीन रचनाओं में समान नहीं हैं : डॉ० तगारे का अध्ययन बहुत विस्तार से हुआ है, डॉ० भायाणी का कुछ ही कम विस्तार से हुआ है। किन्तु डॉ० चैटर्जी का अध्ययन संक्षिप्त है। इन अध्ययनों की शैलियां भी परस्पर कुछ भिन्न हैं। फलतः इन अध्ययनों से रचना के विभिन्न अंशों के ध्वनि-तत्व विषयक उपर्युक्त दृष्टि से किए जाने वाले अध्ययन में अपेक्षित सहायता नहीं मिल सकती थी, इसलिए प्रस्तुत अध्ययन लेखन-प्रणाली तथा शब्द-रचना की दृष्टियों से ही प्रस्तुत किया गया है, और हम देखेंगे कि इस अध्ययन से ऊपर के प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में हमें यथेष्ट सहायता मिलती है।

२. लिपि और लेखन-वैशिष्ट्य

कहने की आवश्यकता नहीं कि लेख की लिपि पुरानी देवनागरी है। इसमें 'व' तथा 'ब' एक ही प्रकार से लिखे गए हैं। उदाहरणार्थ, नीचे आने वाले 'ब' से प्रारम्भ होने वाले शब्द भी 'व' से लिखे गए हैं : वढा १५, वाधउ ४, वाध ६, वाधेन्हु २०, वाधी ३७, वाल ३७, वाहडिअउ १२, वींवी ३५, वुद्धि २२, वूझइ ४५, वूधि ३६, वृहस्पति ३२, वोल्लें ६, वोलइ २८, वोलउ ४१, वोलु २७, वोलु ३४, वोलु ३५, वोलहि ४४, तंवोलें २।

पंचम वर्णों में से ङ और ञ का प्रयोग नहीं हुआ है। संयुक्त पंचम वर्ण के रूप में ण, न तथा म का प्रयोग कभी-कभी हुआ है, यथा : माण्डणु ३, चीन्तवंतहं ७, गम्वारिम्व ९, तरुणिम्व १०, अम्हाणउ १०, म्वालउ १३, काम्व ४०, ४२, पाम्वइ ४२। किन्तु संयुक्त पंचम वर्ण 'ण्' तथा 'न्' के स्थान पर भी प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग हुआ है, यथा :

ङ : अंगि १७, अंगेर २५, अणंग १७, मंगल ३७, वेरंगा १७, संकरीहि ३१, संगउं १७

ञ् : कंचुआ ४, संझहि १७

ण् : कंढि १६, कंढी १६, गंठिआ २३, मंडिय्यइ १६, मंडन १६, वंडिरो १९, २२, २४, २६, वेंटी २६, संडन १६

न् : आंतु ६, आ[नं]दिअ ९, चंद १५, चंदु ३७, चंदहाईं २५, २५

अनुनासिक ध्वनियों के लिए भी अनुस्वार के विन्दु का ही प्रयोग हुआ है, यथा : आंगउ ४, आंगहिं ७, आंगहिं २५, आंट २३, आंतरे २४, ऊंचउ १२, ३०, ऊंचा ३७, कांचडिअउ ११, कांचुली ४०, कांचू १२, कांठहि ७, कांटहि २३, कांठी ३, ७, १२, २५, गांगहि २५, चांगउ ४, चांगा ९, चांदहि २१, चांदा २५, चांदहि २५, चांदु ३३, चांद ३५, जाउं २८, जें ६, १५, झांखइ ९, १०, झांखहि १५, तंइं १९, तइंसहुं २८, तहं ५, ३३, ३८, ३९, ४६, पांवइ ४, अपांविवेकरीं ३४, पांवइ ४१, भउहीं २१, भउंह ३०, मांड ७, मांडी ९, १०, मांडेउ २८, मांडणु २३, २५, ३८, मांझें २४, मांझि ३८, मांझु ४५, रांगे २२, लांवउ १२, वींवी ३५, संगउं १७, हांस १४, हीं ३९, ४३, हिं ४४, हुं ३८, तुहुं २८, तुहुं ३२।

तीन वर्ण इसमें दो तरह से लिखे गए हैं; ये हैं : उ, ऊ तथा ओ। प्रायः तो इनके नीचे की नोक को वैसा ही रहने दिया गया है जैसी वह अब भी रहती है, किंतु कभी उसे कुछ आगे लाकर पुनः नीचे की ओर मोड़ कर दाहिनी ओर बढ़ा दिया गया है :

उ : सामान्य रूप में: यथा : अछउ ६, ताउं ६, भाउअ १०, राउल १०, कानोडउं १०, इसउ १०, अम्हाणउं १०, जउ १०, आउंडउ ११, राउ [लु] ११, नउ ११, दीनउ ११, नउ ११, वानउ ११, चडिअउ ११, उमातउ १२, राउल १२, वाउल १२, वाहडिअउ १३, म्वालउ १३, दीहउ १३, चाहउ १३, राउल १३, सउ १३, नेउरा १३, राउल १४, राउलु १४, जइसउं १४, सउ १६, उवीसहिं १८, संगउं १७, पाखउ १८, भउहीं २१, जालउ २३, तागउ २३, कइसउ २४, जइसउ २५, जउणहि २५, मिलिअउ २५, उजालु २५, विउढणु २६, रूउ २६, तारउ २६, उवेसु २७, गउ २७, तोरउ २७, गउडि २७, राउलें २७, अउर २८, करिउ २९, सारिखउं २९, इउं २९, एउ २९, सोलडहउ २९, दीनउ २९, किसउ २९, जिसउ २९, सिंदूरिअउ २९, करउ २९

उ : अतिरिक्त मोड़ के साथ : यथा: भा [ल] उ २, [आ] छउ २, रातउ २, भालउ ३, गाढउ ४, बाघउ ४, आंगउ ४, भालउ ४, मांडेउ २८, उवेसुहि २८, काम्वदेउ २८, जाउं २८

ऊ : सामान्य रूप में : यथा: कोऊ ५, ऊ-रु ८, ऊजल ८, ऊचउ १२, ऊपरं २०, ऊपर २१, ऊपरि २९, ऊतरिअउ २१, ऊजला ३२

ऊ : अतिरिक्त मोड़ के साथ : यथा : रातऊ ४, ऊंचउ ३०, ऊंचा ३७, ऊजलाहं ४८

ओ : सामान्य रूप में : यथा : ओख ७, ओलगं १४, ओलगं २२, ओढिअल २६, ओडिअउ २०, ओठइं २५

ओ : अतिरिक्त मोड़ के साथ : यथा : ओलग ३७, ओड़ु २८।

कहीं-कहीं पर अल्पप्राण और महाप्राण के संयुक्त वर्णों में से केवल महाप्राण वर्ण को दे कर काम चलाया गया लगता है, : यथा : वयुं ४५।

इन छोटी-मोटी विषमताओं के अतिरिक्त लेख सुव्यवस्थित ढंग से लिखा गया है और अशुद्धियां बहुत कम मिलती हैं, यथा :

ची (चि) न्तवंतहं ७, म (मं) डन १६, मू (सू?) झइ ३२, जगी (गि) ३४।

३. रचना के शब्द-रूप

आदि-अन्त

संज्ञा शब्दों की स्थिति इस प्रकार है—

संज्ञा : कर्ता (मूल):

एक० स्त्री० प्रत्ययहीन : राउल वेल १, राउल वेल ४६

संज्ञा : कर्त्ता (विकृत) अथवा करण :

एक० पुं० :-ें : रोडें १, ४६

संज्ञा : संबंध :

एक० पुं० आकारान्त : –इ : राजइ १, राणइ १

बहु० स्त्री० आकारान्त : –हं :भासहं ४६

संज्ञा : अधिकरण :

एक० पु० अकारान्तः –ें : हासें १, ४६, तोसें १, ४६

सर्वनाम शब्दों की स्थिति इस प्रकार है—

तृतीय पुरुष सर्व० : कर्ता :

एक० पु० : –ो : सो १

तृतीय पुरुष सर्व० : कर्म :

एक० पुं० : –ु : एउ ४६

संबंधवाचक सर्वनाम : कर्ता :

एक ० पुं० : –ो : जा (जो) १

निजवाचक सर्वनाम : संबंध :

एक० पुं० : –णु : आपणु १

विशेषण शब्दों की स्थिति इस प्रकार है—

विशे० गुणवाचक :

एक० स्त्री० : –ी : जइ[सी?] १, जइसी ४६
विशेष्य के कारक चिह्न के साथ : –हं : [सां]तहं भासहं ४६
क्रिया शब्दों की स्थिति इस प्रकार है—

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

तृ० पु०, एक० पुं० : –अइ : जाणइ १, वखाणइ १

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

एक० पुं० : –अत : निसुणत ४६

क्रिया : सामान्य भूत तथा भूत कृदन्त :

तृ० पु० एक० स्त्री० : –ी : वखाणा(णी) १, ज[ाणी] १. वखा[णी] ४६, जाणी ४६

अव्यय शब्दों की स्थिति इस प्रकार है—

अव्यय : कार्य प्रणाली सूचक :

जेम्व १, तेम्व १

प्रथम नखशिख

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्त्ता (मूल) :

एक०पुं०। स्त्री० विभिन्न स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में प्रयुक्त मिलते हैं:

पुं० : कंचुआ ४, कछडा ४, कवि २, कोह ५,
स्त्री० : जाला कांठी ३, वेटिया ५, सोह ५

एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ु प्रत्यय युक्त भी मिलते हैं : फूलु २, अह [रु] २, माण्डणु ३, पहिरणु ४

एक०स्त्री०संज्ञा शब्दों के कोई प्रत्यययुक्त रूप नहीं मिलते हैं।

बहु० पुं० अकारान्त : –ां : वनां ५
बहु० स्त्री० संज्ञा शब्दों के कोई प्रत्यययुक्त रूप नहीं मिलते हैं।

संज्ञा : कर्ता (विकृत) :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (मूल) :

एक० पुं० संज्ञा शब्दों के कोई प्रत्ययहीन रूप नहीं हैं।
एक०स्त्री० संज्ञा शब्दों के प्रत्ययहीन रूप हैं : तूलिम्व ५, सोह २, सोह ४
एक०पुं० अकारान्त संज्ञा-शब्द –ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं : काजलु २
एक० स्त्री० संज्ञा-शब्दों के प्रत्यययुक्त कोई रूप नहीं हैं।
बहु० पुं० अथवा स्त्री० के न कोई प्रत्ययहीन रूप मिलते हैं, और न प्रत्यययुक्त।

संज्ञा : कर्म (विकृत)

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : करण :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।
एक०पुं० संज्ञा शब्दों के साथ–ें प्रत्यय मिलता है : तंवोलें २, आहरणें ५
एक०स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।
बहु० पुं० अथवा स्त्री० के भी कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : संप्रदान :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : संबंध :

संज्ञा शब्दों के सामासिक रूप मिलते हैं : जालाकंठी ३,
एक०पुं० में -हुं प्रत्यय मिलता है : तरुणिहुं माण्डणु ३
बहु०स्त्री० में –न्हु प्रत्यय लगा मिलता है : पायेन्हु सोह ५

[ऐसा ज्ञात होता है कि संबंधी के एक० होने पर –हुं प्रत्यय तथा बहु० होने पर –न्हु प्रत्यय लगा है, संबंधवान के लिंग का कोई प्रभाव इन प्रत्ययों पर नहीं पड़ता है।]

संज्ञा : अधिकरण :

प्रत्ययहीन : एक० स्त्री० तूलिम्व ५
एक०पुं०संज्ञा शब्द : अकारान्त : –इ ।–ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

　　–इ : गलइ ३
　　–ु : घरु ५

एक०स्त्री० के उदाहरण नहीं हैं।
बहु०पुं० के उदाहरण नहीं हैं।
बहु०स्त्री० –हिं प्रत्यय के साथ मिलते हैं : आंखिहिं २

संज्ञा : संबोधन :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है—

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

–हिं :कर्म (विकृत) एक०पुं० : मोंहि ५

वही : द्वितीय पुरुष :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

वही : तृतीय पुरुष [अनिश्चयवाचक सर्वनाम तथा संकेतवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

विभिन्न कारकों में प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है :

–ो : कर्त्ता० (मूल) एक०पुं० : सो ३

–ु : कर्त्ता० (मूल) एक०पुं० : आनु ३

–ू : वही : कोऊ ५

–ाहि : कर्म० (विकृत) एक०पुं० : ताहि ५

–ासु : संबंध० एक०स्त्री० : तासु ४

–ाकरि : वही : ताकरि ३

वही : संबंध वाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

प्रयुक्त प्रत्यय युक्त रूप इस प्रकार है :

–ा : वि० एक०पुं० : जा ५

–सु : सर्व०कर्म० (विकृत) एक०पुं० : जसु ३

–ो : वि० एक०स्त्री० : जो ५

वही : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

वही : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है—

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग केवल निम्नलिखित हैं :

एक० पुं०।स्त्री० : आन २, एह ३

प्रत्यय युक्त प्रयोग निम्नलिखित हैं :

–ी : एक०स्त्री० : अइ[सी] ५

–उ।ऊ : एक०पुं० : भा [ल] उ २, तरलउ २, [आ] छउ २, तुछउ २, रातउ २, भालउ ३, रातऊ ४, चांगउ ४, गाढउ ४, भालउ ४

–ु : बहु० पुं० : आनु ५

[–ु।उ प्रत्यय पुं० अकारान्त विशेषण के साथ प्रत्यययुक्त पुं० विशेष्य के पूर्व प्रयुक्त हुए हैं। –ी प्रत्यय स्त्री०अकारान्त विशेषण के साथ प्रयुक्त हुआ है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है—

क्रिया : सामान्य वर्तमानकाल :

– अइ : तृ०पु० एक० पुं०।स्त्री० : भावइ २, दीजइ २, देइ २, सुहावइ ३, [पां] वइ ३, भावइ ४, पांवइ ४, आवइ ५, पांवइ ५

– अंथि : तृ० पु० बहु० पुं० : मोहंथि ३

क्रिया : संभावनार्थ वर्तमान :

– अइ : तृ० पु० एक० पुं०।स्त्री० : रूचइ ३

– ईजइ : तृ० पु० एक० पुं०।स्त्री० : मांडीजइ ४

क्रिया : सामान्यभूत और भूत कृदन्त :

– अउ : तृ० पु० एक० पुं० भूत कृदन्त : वाधउ ४

[सामान्य भूत में अकर्मक क्रियाओं के वचन और लिंग कर्त्ता के अनुसार और सक०क्रियाओं के कर्म के अनुसार है ।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत् :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : विधि

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रियार्थक संज्ञा :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थान सूचक :

–ं : तहं ५

अव्यय : काल सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : कार्य प्रणाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : संयोजक :

–ं : जं ३

अव्यय : निषेध सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : निश्चय सूचक :

– ऊ : कोऊ ५
– इ : एहइ ३

अव्यय : संबोधन सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : परिमाण सूचक :

प्रत्ययहीन अति : अति ४, अति ५
" सुठु : सुठु ४
– : मणु मणु २, मणु मणु ५, विणु ५

अव्यय : प्रश्न सूचक :

प्रत्ययहीन कि : कि ३, कि ४, कि ५

द्वितीय नखशिख

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्ता (मूल) :

एक० पुं०।स्त्री० विभिन्न प्रकार के स्वरांत संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में प्रयुक्त मिलते हैं :

पुं० : ओख ७, वोडा ७, काछडा ८, मेढी ९, काचू ८
स्त्री० : पाहंसिया ९, कांठी ७, चांगिम्व ६, पाटी ८
एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ु प्रत्यय के साथ भी प्रयुक्त मिलते हैं :
जोवणु ८, वेसु ९, मयणु १०

बहु० पुं०।स्त्री० विभिन्न प्रकार के स्वरांत संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में प्रयुक्त मिलते हैं :

पुं० : अहि ६, गोह ७
स्त्री० : रेख ७, पाहंसिया ९
बहु० पुं० आकारान्त संज्ञा शब्दों के प्रत्यययुक्त रूप भी मिलते हैं
रीठे ८, तागे ८, गोल्ले ९
बहु०स्त्री० के कोई प्रत्यययुक्त रूप नहीं मिलते हैं।

संज्ञा : कर्त्ता (विकृत) :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : कर्म (मूल) :

एक०पुं० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में प्रयुक्त नहीं हैं।
एक०स्त्री० विभिन्न स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :
दिठि ७, लोणचि ९, गम्वारिम्व ९, तरुणिम्व १०
एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं :
वलु ९
एक०स्त्री० संज्ञा शब्दों के प्रत्ययों के साथ कोई उदाहरण नहीं हैं।
बहु० पुं० अथवा स्त्री० संज्ञा शब्दों के भी प्रत्ययों के साथ कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (विकृत) :

एक० पुं० में –हि प्रत्यय मिलता है :
वलिअहि ६
एक०स्त्री० तथा बहु० के उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : करण :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : संप्रदान :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : संबंध :

प्रत्ययहीन या सामासिक रूप नहीं हैं।

एक० संबंधी के साथ एक०पुं० में –ह् प्रत्यय मिलता है :

पडिह् ८

बहु० संबंधी के साथ बहु० पुं० में –हं प्रत्यय मिलता है :

ची (चि)न्तवंतहं ओख ७

एक० स्त्री० में दो प्रत्यय मिलते हैं : –हि तथा चि। ची :

–हि एक० संबंधी के साथ आता है :

लिअहि चांगिम्व ६

–चि।ची बहु० संबंधी के साथ उसमें –हं प्रत्यय लगाकर आता है :

धडिवनहं चि रेख ७, लोकहं ची दिठि ७

बहु० संबंधवान के उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : अधिकरण :

एक० पुं० संज्ञा शब्द अपने प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं, यथा : राउल १०

एक०स्त्री० के प्रत्ययहीन उदाहरण नहीं हैं।

एक० पुं० शब्द अकारान्त में : ि,–ि हि प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं:

कांठिहि ७, पुडि ८

एक०स्त्री० के प्रत्यययुक्त उदाहरण नहीं हैं।

बहु० पुं० शब्द–ें तथा –िहिं प्रत्ययों के साथ मिलते हैं :

अकारान्त में: –ें: विअइल फूल्लें ६

अकारान्त में:–िहि : का [नि] हिं ७, आंगिहिं ७, हाथिहिं ८,

पाइहिं ९

बहु० स्त्री० के उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : संबोधन :

एक० पुं०।स्त्री० में प्रत्ययहीन प्रयोग मिलते हैं, यथा : हुणि ९, भाउअ १०,

स्त्री० तथा बहु० के उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथमपुरुष :

कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष :

किसी कारक में प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति इस प्रकार है:

–ोही :कर्म० (विकृत): एक०स्त्री०:तोही १०

–ज्ञचि :करण०एक०स्त्री०: तुज्ञचि९

–ो :संबंध०एक०पुं० ; तो९

सर्वनाम : तृतीय पुरुष [तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम एवं संकेतवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन रूप किसी कारक में नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है :

–े : कर्ता० (मूल) । कर्म० (विकृत) एक०पुं०।स्त्री० : ते ६, ते ७, ते ९

–न्ह : कर्ता० (मूल) बहु० पुं० : सान्ह ८

–ें : कर्म० (विकृत) तथा वि० बहु०पुं० : जें ६

–ेंहचा : करण० एक०पुं० : तेंहचा ९

–ेंहचें : ,, बहु० ,, : तेंहचें ६

सर्वनाम : संबंधवाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है :

–ो : वि० एक०पुं० : जो ८

–े : ,, ,, स्त्री० : जे ६, जे ७

सर्वनाम : [प्रश्नवाचक तथा प्रश्नवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग केवल निम्नलिखित है :

कर्ता० (मूल) एक०पुं० : को १०

प्रत्यययुक्त प्रयोग भी निम्नलिखित ही है :

–ा :वि० एक०पुं० : चा ९

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :

एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : आनिक ७, आनि [क] ९,आनिक ९,आविल ८, ऊजल ८, दढ ८,लान्ह ८

प्रत्यययुक्त प्रयोग निम्नलिखित हैं :

–ु एक०।बहु० पुं० : आंतु ६, आनिकु ८, आनिकु ८ आविलु ८

[–ु प्रत्यय पुं० अकारान्त विशेषण शब्दों के साथ लगा है जो विशेष्य के प्रत्यययुक्त होने पर अथवा स्वतः विशेष्य के रूप में प्रत्युक्त होने पर अथवा विशेष्य के अनंतर प्रयुक्त हुए हैं।]

–ी : एक० स्त्री० : गाढी ८, आपुली ९, अइसी १०, पातली १०

[–ी प्रत्यय अकारान्त –आकारान्त विशेषण शब्दों के साथ ही प्रयुक्त हुआ है।]

–ा : एक०पुं० : लाठा ७, गाढा ८, थाढा ८, चांगा ९

[यह यहां विचारणीय अवश्य है कि ये विशेषण चरणों के अन्त में आते हैं, और असंभव नहीं कि छंद की आवश्यकताओं के कारण दीर्घान्त किए गए हों।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

–असि : द्वि० पु० एक० पुं० : देखसि ६
– अइ : तृ०पु० एक० पुं०।स्त्री० : सोहइ ७, खोहइ ७, आखइ ९
– उ : तृ० पु० बहु० पुं० : देसु ९
–अहिं : ,, ,, ,, ,, : आछहिं ६

क्रिया : संभावनार्थ वर्तमान :

– अइ : तृ० पु० एक० स्त्री० : झांखइ ९
– एं : तृ०पु० बहु० पुं० : वोल्लें ६

क्रिया : सामान्य भूत और भूतकृदन्त :

–इअ : तृ०पु० बहु० पुं० भूत कृदन्त : आ[न]दिअ ९
–ई : तृ०पु० एक० स्त्री० भूत कृदन्त : माढी ९, मांडी ९, मांडी १०, सो[ही] १०

[सामान्यभूत अक० क्रियाओं के वचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सक० क्रियाओं के कर्म के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत् :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

– अ : एक० : वाध ६, मांड ७, भण ९

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

– अतु : तृ पु० एक० पुं० : वानतु ६
–अत : तृ० पु० एक०पुं० : देखत १०

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : विधि :

एक ही प्रयोग मिलता है:

–अउ : तृ० पु० एक० पुं०।स्त्री० : अछउ ६

क्रियार्थक संज्ञा :

एक०पुं० – एवउ : करेवउ ११

अव्यय शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थान सूचक :

–ु : एथु ८

अव्यय : काल सूचक :

–उं : ताउं ६

अव्यय : स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : संयोजक :

–ु : जणु ८

अव्यय : निषेध सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : निश्चय सूचक :

–ू।उव : बानू ८, मयणुव १०

जी : जी ८

निरु : निरु ९

अव्यय : संबोधन सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : परिमाण सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : प्रश्न सूचक :

कि : कि ६

तृतीय नखशिख

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्ता (मूल) :

एक०पुं०।स्त्री० : विभिन्न प्रकार के स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में प्रयुक्त मिलते हैं :

पुं० : लांवझ १२, कांचू १२,

स्त्री० : करडिम्व ११, राउ[ल] ११, कांठी १२, झुणि १३, वाखर १४, राउल १४, साहूर १२,

एक०पुं० : अकारान्त संज्ञा शब्द –ु प्रत्यय के साथ भी मिलते हैं : पहिरणु १३, घरु १४, राउलु १४

एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –उ प्रत्यय के साथ भी मिलते हैं : वानउ ११, म्वालउ १३

बहु०पुं० : प्रत्ययहीन : जण १३

बहु०पुं० : अकारान्त संज्ञा शब्द –ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं : जणु १३

बहु० स्त्री० : ईकारान्त संज्ञा शब्द –उ प्रत्यय के साथ भी मिलते है :

स्त्री० : काचडिअउ ११, वाहडिअउ १२

संज्ञा : कर्ता (विकृत) :

कोई उदाहरण नहीं मिलते हैं।

संज्ञा : कर्म : (मूल):

एक०पुं० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में प्रयुक्त नहीं हैं।

एक०स्त्री० संज्ञा शब्द भी प्रत्ययहीन रूपों में नहीं मिलते हैं।

एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं : वेसु १०, काज [लु] ११

एक०स्त्री० संज्ञा शब्द प्रत्यययुक्त रूप में नहीं मिलते हैं।

संज्ञा : कर्म (विकृत) :

एक० पुं० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

एक ० स्त्री०: –हिं प्रत्यय के साथ मिलते हैं : सोहहि ११

बहु० पुं० शब्द –ा प्रत्यय के साथ मिलते हैं : तरुणा १२

बहु० पुं० शब्द –ु प्रत्यय के साथ भी मिलते हैं : जणु १३,

बहु०स्त्री० शब्द –हिं प्रत्यय के साथ मिलते हैं : थणहिं १२, सोहहिं १३

संज्ञा : करण :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : संप्रदान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : संबंध :

प्रत्ययहीन सामासिक रूप मिलता है :

एक स्त्री० : हांस गइ १४

एक०पुं० के प्रत्यय युक्त उदाहरण नहीं हैं।

एक० स्त्री० में –णी प्रत्यय मिलता है, जो बहु०पुं० संबंधी के साथ लगता है, यथा :

झुणि नउराणी १४

बहु० पुं० के भी प्रत्यययुक्त उदाहरण नहीं हैं।

बहु० स्त्री० में–हिं प्रत्यय मिलता है, जो बहु० पुं० संबंधी के साथ लगा हुआ है : हार्थहिं सोहहिं १३

संज्ञा : अधिकरण :

प्रत्ययहीन संज्ञा शब्द एक०पुं० में केवल निम्नलिखित हैं : राउल १३

बहु० पुं० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं : कान १४

स्त्री० के प्रत्ययहीन उदाहरण नहीं हैं।

एक०पुं० –इ । –े प्रत्ययों के साथ मिलते हैं :

(अकारान्त में) –इ : गलइ १२

,,		–े : घरे १४

एक०स्त्री० अकारान्त शब्द –ं प्रत्यय के साथ मिलते हैं : ओलगं १४

बहु० पुं० ।स्त्री० अकारान्त। इकारान्त शब्द –हिं प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

कार्नाहिं ११, आंखिहिं ११

संज्ञा : संबोधन :

कोई उदाहरण नहीं है :

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त केवल एक उदाहरण है :

–ाणउं : संबंध० बहु० पुं० : अम्हाणउं १०

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष :

कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम : तृतीय पुरुष : [तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम एवं संकेतवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन रूप केवल निम्नलिखित है :

सर्व० कर्त्ता० (मूल) एक०स्त्री०: इन १२

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है :

–ो : सर्व० कर्त्ता० (मूल) । कर्म० (मूल) तथा वि० एक० पु० :सो ११, सो ११, सो १२, सो१२,सो १३

–ा : सर्व० कर्त्ता० (मूल) एक०स्त्री० : सा १४

–हिं : सर्व०कर्म०: (विकृत): बहु०पु० : आनहिं ११

–ु : वि० बहु० : एहु १०

सर्वनाम : संबंधवाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन रूप नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति निम्नलिखित है :

–ो : सर्व० कर्म ० एक० पु० : जो ११

–हिं : सर्व० अधि० एक० पु० : जहि १४

–ा : वि० एक०स्त्री० : जा १४

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग केवल निम्नलिखित हैं :

कर्म०एक०पु० : का १०, काइं १२

प्रत्यययुक्त प्रयोग भी केवल निम्नलिखित हैं :

–सु : संबंध० (?) एक०पु० : कासु १४

–सुतणी : संबंध०एक०पु० : कासुतणी १२

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं है।

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है :

एक० ।बहु० पु०।स्त्री० : वाउल १२, सयल १३, सुठु १३, गोरइ १७ ।

प्रत्यययुक्त प्रयोग निम्नलिखित हैं :

–उ ।उं: एक० बहु।०पु : इसउ १०, आउंडउ ११,डहरउ ११, लांवउ १२, रात [उ] १२, उमातउ १२, ऊंचउ १२, दीहउ १३, जइसउं १४

–ु : बहु० पु० : सउ १३

[–ु।उ प्रत्यय ऐसे पुं० अकारान्त विशेषण शब्दों के साथ ही प्रयुक्त हुए हैं जो प्रत्यययुक्त विशेष्य के पूर्व, विशेष्य के रूप में स्वतः अथवा विशेष्य के अनंतर आए हैं।]

–ी : एक०स्त्री० : पुलूकी १२, अइसी १४, कइसी १४,अइसी १४

[–ी प्रत्यय अकारान्त।आकारान्त विशेषण शब्दों के साथ ही लगा है।]

–ा : बहु० पुं० : खूता १३

–ुं : बहु० पुं० : तहुं १३

[–ु प्रत्यय ऊपर आ चुका है, बहुवचन रूप देने के लिए उसके साथ –ं लगाया गया है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

–अइ : तृ०पु० एक० पुं०।स्त्री० : [सो] हइ ११, थइ ११, मोहइ ११, जाणइ ११, थइ ११, भ[ा]वइ १२, करइ १२. सोहइ १३, मोहइ १३, सुहावइ १४, भावइ १४, पइसइ १४, दीसइ १४

–इ : तृ०पु० एक०पुं० : आथि १३

–अति : तृ०पु० एक०स्त्री० : चालति १४

–अहि : तृ० पु० बहु० पुं० : चार्हहि १३

क्रिया : संभवानार्थ वर्तमान :

–अइं : तृ०पु० बहु० पुं० : झांखइं १०, देखइं १०

क्रिया : सामान्यभूत और भूत कृदन्त :

–इअउ : तृ०पु० एक०पुं० भूत कृदन्त : किअउ १२, माठिअउ १३

–ईनउ : तृ०पु० एक०पुं० भूत कृदन्त : दीनउ ११

–ई : ,, ,, ,, स्त्री० ,, : ढिठी १२

[सामान्यभूत अक०क्रियाओं के वचन और लिंग कर्त्ता के अनुसार तथा सक० के कर्म के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत् :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

एक ही उदाहरण है :

–ें: एक०: फरहरें पर १३

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

–अतु : तृ०पु० एक० पुं० : देखतु १२, दीसतु १३

–अंत : तृ०पु० बहु० पुं० : जोवन्त १२

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : विधि :

–अउ : द्वि० पु० एक० पुं० : चाहउ १३
–उ : द्वि०पु० एक० पुं० : कोक्कु ११, कोकु १२

क्रियार्थक संज्ञा :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थान सूचक :

–ु : एथु ११, तेथु १३

अव्यय : काल सूचक :

–ं : तं १४

अव्यय : स्थिति सूचक :

पर : फरहरें पर १३

अव्यय : कार्य प्रणाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : संयोजक :

–उ।ो : जउ १०, जो ११
–ु : अनु ११

अव्यय : निषेध सूचक :

प्रत्ययहीन न : न११, न १३, न १४,
–उ : नउ ११, नउ ११
–ा : ना ११

[किन्तु न से ना छंद की मात्राओं को पूरा करने के लिए किया गया लगता है।]

अव्यय : निश्चय सूचक :

–इ : सयलइ १३
–हुं : णहुं १४
–उं : कानोडउं १०

अव्यय : संबोधन सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : परिमाण सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : प्रश्न सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

चतुर्थ नखशिख

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्ता (मूल) :

एक० पुं०।स्त्री० : विभिन्न स्वरांत संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

पुं० : कछडा १७, वछडा १८, कंय्यू १७

स्त्री० : कंठी १६, टक्किणि १८

एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ु तथा –उ प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं :

–ु : सन्नाहु १७, संगउं १७, पहिरणु १७, जणु १८, जणु १८

–उ : पाखउ १८

ए०स्त्री० के कोई प्रत्यययुक्त रूप नहीं मिलते हैं।

बहु० पुं० अकारान्त शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

गन्न १६, टेल्ल १८, मंडन संडन १६, वोल्ल १८

बहु०स्त्री० के कोई प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं मिलते हैं।

बहु०पुं० अकारान्त संज्ञा-शब्द –ा प्रत्यय के साथ मिलते हैं, यथा : हीआ१५

बहु० स्त्री० के प्रत्यययुक्त प्रयोग नहीं मिलते हैं।

संज्ञा : कर्ता (विकृत) :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (मूल) :

एक० पुं० अथवा स्त्री०संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में नहीं मिलते हैं।

एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ुप्रत्यय के साथ मिलते हैं : कय्यलु १६

एक०स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

बहु० स्त्री० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं : वत्थु १७

बहु० पुं० के उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (विकृत) :

एक० पुं० अथवा स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

बहु० पुं० –ु प्रत्यय के साथ मिलता है : जणु १६

बहु०स्त्री० –ं प्रत्यय के साथ मिलता है : गोरीं १५

संज्ञा : करण :

प्रत्ययहीन रूप नहीं हैं।

एक० पुं० में दो प्रत्यय मिलते हैं :–ं तथा –ेण , जिनमें से दूसरा प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का एकारान्त का प्र यय है।

–ं : मुहुं १५

–ेण : एकेणवि १६

एक० स्त्री० में–हि प्रत्यय मिलता है : कंयूयडिअहि १६

बहु० पुं० अथवा स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : संप्रदान :

एक० पुं० अथवा स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

बहु० पुं० में –ा प्रत्यय मिलता है : टीहा १५

स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : अपादान :

एक० पु० में –इं प्रत्यय मिलता है : पाखइं १८

संज्ञा : संबंध :

प्रत्ययहीन स मासिक रूप मिलते हैं :

एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : अड्डा पाहु १५, अणंग संनाहु १७, कंयूयू विब्यहिं १७
चंद सवाणा १५, टेल्लि पुतु १५

एक० पुं० में –हि तथा –केरा मिलते हैं :

–हि का प्रयोग एक० संबंधी के साथ हुआ है : संझहि जोन्हहि संगउं १७

–केरा का प्रयोग बहु०संबंधी में –हिं प्रत्यय लगा कर किया गया है :
घाघरेहिं केरा पहिरणु १७

एक० स्त्री० के उदाहरण नहीं हैं।

बहु० पुं० में –हं प्रत्यय प्रयुक्त मिलता है, इसमें संबंधी भी बहु० है :
अक्खंदहं हीआ १५

बहु० स्त्री० के उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : अधिकरण :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

एक० पुं० अकारान्त शब्द –ि ,–उ तथा –हु प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

–ि : कंठि १६, अंगि १७

–उ : पाखउ १८

–ह : पाह १५

एक० स्त्री० के उदाहरण नहीं हैं।

बहु० पुं०।त्री० शब्द –हिं प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

अंघिहिं १६, थणहिं १७, वियूयहिं १७

संज्ञा : संबोधन :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

एक० पुं० में –ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं : टेल्लिपुतु १५

स्त्री० तथा बहु० के कोई उदाहरण न प्रत्ययहीन प्रयोगों के हैं और न प्रत्यय युक्त के।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष :

केवल दो उदाहरण मिलते हैं जो कर्ता० (मूल) के हैं और प्रत्ययहीन हैं :

कर्ता (मूल) एक०पुं० : तुहुं १५, तुहुं १५

सर्वनाम : तृतीय पुरुष [तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम एवं संकेतवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग कोई नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त प्रयोग विभिन्न कारकों में निम्नलिखित हैं :

–ो : कर्ता० (मूल)।कर्म० (मूल) एक०पुं०।स्त्री० :सो १५, सो १५, सो १७

–े : कर्म० (विकृत) बहु०पुं० : ते १७

–ें : कर्म० (विकृत) बहु०पुं० : जें १५

–सु : संबंध० एक०स्त्री० तसु १८

करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण और संबोधन कारकों के उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम : संबंधवाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन रूप नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति इस प्रकार है :

–ो : सर्व० कर्म० (मूल) तथा वि० एक०पुं० : [जो?] १५, जो १६, जो १७, जो १७

–े : वि० बहु० पुं० : जे १७

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम : [तथा निजवाचक विशेषण]।

कोई उदाहरण नहीं हैं।

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :—

एक०।बहु०, पुं०।स्त्री० : केह १५, दुइ १६, पर १५, सब १७

प्रत्यययुक्त प्रयोग निम्नलिखित हैं :

–ु : एक०।बहु० पुं० : एक्कु १५, सउ १६

[–ु प्रत्यय अकारान्त विशेषण शब्दों में लगता है, जो विशेष्य के प्रत्यययुक्त होने पर, स्वतः विशेष्य के रूप में अथवा विशेष्य के अन्तर आते हैं।]

–ा : एक०पुं० : केहा १५, तेहा १५, वद्धा १५, [ड]हरा १६, दित्ता १६, मत्ता १६, वेरंगा १७, एहा १९ सुहावा १८

–ी : एक०स्त्री० : जलाली १६, एही १८

[यह –ी अकारान्त।आकारान्त विशेषण शब्दों में लगा है]

–ा : बहु०पुं० : सवाणा १५,एहा १६, तेहा १६, इतरा १८, संदा १८

–ें : बहु० पुं० (विकृत) : आधूघाडें १७

[इस प्रत्यय का उपयोग विशेषण के विकृत रूप-निर्माण के लिए किया गया है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

–अहि : द्वि०पु० : झांखहि १५, आख[हि] १५

–अइ : तृ०पु० एक०पुं०।स्त्री० : भिज्जइ १५, सोहइ १६, मोहइ १६, धावइ १८, परइ १८, सोहइ १८, चाहइ १८

–अंहि : तृ०पु० बहु० पुं० : सोहंहि १६, दीसंहि १७, उवीसंहि १७

–अ : तृ० पु० बहु० पुं० : पर १८

क्रिया : संभावनार्थ वर्तमान :

–उ : द्वि०पु० एक० पुं० : वेहु १५, वेहु १५

–इज्जइ । –इय्यइ : तृ० पु० एक० पुं० : वन्निज्जइ १५, किय्यइ १५, मंडिय्यइ १६

क्रिया : सामान्य भूत और भूत कृदन्त :

–ऊ : तृ०पु० एक० पुं० सामान्य भूत : हू १७

–ओ : वही वही : हो १७

–ए : तृ०पु० बहु० पुं० सामान्य भूत : परे १६

[सामान्यभूत अक०क्रियाओं के वचन और लिंग कर्त्ता के अनुसार तथा सक० के कर्म के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत् :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

—अ : एक० ।बहु० : मल १८, मल १८

—इ : एक० बहु० : [नि] हालि १६, करि १६, डहि १६, निहालि १७, डहि १८, डहि १८, निहालि १८

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

—अति : तृ० पु० एक० स्त्री० : पइसति १८, वानति ३२

—अंद : तृ० पु० बहु० पुं० : अक्खंदहं १५

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : विधि :

—उ : द्वि०पु० एक०पुं० : वेहु १८

क्रियार्थक संज्ञा :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थान सूचक :

—ु : एथु १५

अव्यय : स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : संयोजक :

—ं : नं १७, नं १७

अव्यय : निषेध सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : निश्चय सूचक :

—ू : मयणू १६

इ : गोरइ १७

वि : एक्केणवि १६

हिं : घाघरेंहिं १७

तु : तु १८

अव्यय : संबोधन सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : परिमाण सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : प्रश्नसूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

पंचम नख-शिख

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्त्ता कारक (मूल)

एक०पुं०।स्त्री० विभिन्न स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

पुं० : वेस १९, वेस १९, अम्वेअल २०, रवि २०, टीका २१, टीका २२, पात २२, कुज २४, चांदा २५, कोह २६, मुहससि २६

स्त्री० : टीका २२, सोह २६, कांठीवेंटी २६, गउडि २७

एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ु।–उ प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

–ु : मांडणु २३, तागु २३, भूसणु २३, हारु २४, हारु २४, अवहारु २४, थणहरु २४, हारु २५, जलु २५, मांडणु २५, उजालु २५, आलु २६, जणु २६, उवेसु २७, मोलु २७

–उ : जालउ २३, तागउ २३, ठेरउ २४

एक०स्त्री० संज्ञा शब्दों के कोई प्रत्यय युक्त रूप नहीं हैं।

बहु० पुं० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

दसण २२, दिठहुल २०, पात २२, कुडीपुत २३

बहु०पुं० संज्ञा शब्द –ु तथा–े प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं :

–ु : जणु २६, सुआणु १९

–े : तरुणे २०, तारे २०, तारे २१

बहु०स्त्री० ईकारान्त शब्द –ं प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

भउहीं २१, चंदहाईं २५

संज्ञा : कर्त्ता (विकृत)

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म० (मूल)

एक०पुं०।स्त्री० विभिन्न स्वरांत संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

पुं० : टाक १९, अछण २२, कापड २६, वान २७

स्त्री०: खोंपवली २०, टीका २१, वुद्धि २२, जोन्ह २७

एक०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ु ।उ प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

–ु : अवहारु २४, उढणु २६, रूउ २६

–उ : सोना जालउ २३

एक०स्त्री० के प्रत्यययुक्त और बहु० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (विकृत) :

प्रत्ययहीन रूप के कोई उदाहरण नहीं मिलते हैं।

एक० पुं० संज्ञा शब्द –हि प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

मयणहि २३

एक०स्त्री० के कोई प्रयोग नहीं हैं।

बहु० पुं० अकारान्त शब्द ँ प्रत्यय युक्त है :

बनवारां २२

बहु०स्त्री संज्ञा शब्द –ँ प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

चंदहाईं २५

संज्ञा : करण :

प्रत्ययहीन रूप में कोई उदाहरण नहीं मिलते है।

एक० पुं०।स्त्री० में –ँ प्रत्यय मिलता है :

राहूं २०, लाँछि २८

बहु०पुं०।स्त्री० का कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : संप्रदान :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा-संबंध :

प्रत्ययहीन सामासिक प्रयोग इस प्रकार मिलते हैं :

एक०।बहु०,पुं०।स्त्री० :कांछा [पँ]ह्लण २६, कांठी वेंटी २५, कुडीपुत २२, धणुअडणीं २१, निलाडी सरिसी २१, मुहससि २२, मुहससि ओलगं २२, सरय जलय २५, मुहससि २६

कभी-कभी समास एक० संबंधी को –ु युक्त करके बनाए गए हैं :

एक : सूतु तरीअन्हु २४

एक०संबंधी के साथ एक०।बहु० पुं०।स्त्री० में–हि प्रत्यय मिलता है:

एक०पुं० : चांदहि ऊपर २१, गांगहि जलु २५, वेसहि मोलु २७

बहु०स्त्री० : चांदहि चंदहाईं २५

एक०संबंधी के साथ एक०पुं० में –ेर।–ेरउ प्रत्यय मिलते हैं :

ेर : सूतेर हारु २५, वीजेर चांदहि २५, अंगेर उजालु २५

ेरउ : सूतेरउ हारु २४

एक०संबंधी के साथ बहु०पुं० में –र तथा –रे प्रत्यय मिलते हैं :

–र : ताडर पात २२

–रे : सोह रे पात २२

एक०संबंधी के साथ एक०स्त्री० में –केरि प्रत्यय का प्रयोग हुआ है:

[पं]हुण केरि सोह २६

बहु० संबंधी के साथ एक०पुं० में –न्हु अथवा –न्हु प्रत्यय लगा कर 'केरउ' अथवा 'कर' का प्रयोग हुआ है :

–न्हु : ते(वे?)डेन्हु वाधेन्हु केसं २०, हारन्हु अवहारु २४

–न्हु केरउ : गउडिन्हु केरउ उवेसु २७

–न्हु कर : तरीअन्हु कर हारु २४

एक०संबंधी के साथ बहु०स्त्री० ० में –करीं प्रयुक्त मिलता है :

काम्त्र करीं धण् अडणीं २१

संज्ञा : अधिकरण :

एक० पुं।स्त्री० दोनों में ही प्रत्ययहीन रूप मिलते हैं :

पुं० : मण २०

स्त्री० : आंट २२

बहु० शब्दों के प्रत्ययहीन उदाहरण नहीं हैं।

एक०पुं० में तीन प्रत्यय मिलते हैं :

अकारान्त में : –ि : म्वाझथि २०,

अकारान्त में : –ॆं : आगें १९, थणहर माझें २४, राउलें २७

,, : –ॆ : गलेहि २३, आंतरे २४

एक० पुं०।स्त्री० में –हि। हि प्रत्यय मिलता है :

कांठहि २३, जउणहि २५

एक० पुं०।स्त्री० में –ं प्रत्यय मिलता है :

केसं २०, ओलगं २२, विचं २५

एक० पुं० में –हिं प्रत्यय मिलता है :

–हिं : आंगहिं २५

बहु०पुं०।स्त्री० में –न्हु प्रत्यय मिलता है :

–न्हु : कानन्हु २२, सोहन्हु २४, सवन्हु २४

संज्ञा : संबोधन :

एक० पुं० में प्रत्ययहीन प्रयोग मिलते हैं :

वर्व्वर २१, वर्व्वर २१, वर्व्वर २१

एक०स्त्री० के प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

एक० पुं० में –ू, –े तथा –ो प्रत्यय युक्त प्रयोग मिलते हैं :

–ू : राहू १९

–े : घेठे १९

–ो : वंडिरो १९, वंडिरो २२, वंडिरो २४, वंडिरो २६

बहु० के कोई उदाहरण न प्रत्ययहीन के हैं और न प्रत्यययुक्त के।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त के केवल दो कारकों के उदाहरण मिलते हैं :

–हि : कर्म० एक० पुं० : मोहि २६

–ारे : संबंध० बहु० पुं० : अम्हारे २०

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है :

कर्त्ता० (मूल) एक० पुं० : तु १९, तूं २१

प्रत्यययुक्त केवल दो उदाहरण मिलते हैं :

–इं : करण० एक०पुं० : तइं १९, तइं १९

सर्वनाम :तृतीय पुरुष [और अनिश्चयवाचक सर्वनाम तथा संकेतवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग इस प्रकार हैं :

कर्म० (मूल) एक० स्त्री० : एह २१

कर्म० (विकृत) एक०पुं० : स १९, एह २१, आन २६

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है :

–ो : कर्ता० (मूल)।कर्म० (मूल)एक०पुं०।स्त्री० : सो २३, सो २४, सो २७, सो २७

–ा : कर्ता० (मूल) बहु०स्त्री० : ताहि २१

–े : कर्म० (विकृत) वि० बहु०पुं०।स्त्री० : ते१९, ते२०, ते २५

–ारउ : संबंध० एक०पुं० : तारउ २६

–ारे : ,, ,, : तारे २७

('तारउ' के स्थान पर 'तारे' का प्रयोग संबंधवान के विकृत रूप में होने के कारण किया गया लगता है।)

–ारि : संबंध ० एक० स्त्री० : तारि २१

–ही : ,, ,, : वाही २५

सर्वनाम : संबंधकारक । [तथा संबंध वाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं:—

विशेषण एक०स्त्री० : ज २०, ज २६

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है:

–ो ; सर्व० कर्म० (मूल) एक०पुं० : जो २४

: वि० बहु० स्त्री० : जे २५

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :

वि० एक० पुं० : को २४

कर्ता० (मूल) एक०स्त्री० : काहु २१

प्रत्यययुक्त प्रयोग नहीं है।

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त केवल एक प्रयोग मिलता है :

–णी : संबंध०वि०एक०स्त्री० : आपणी २२

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :—

एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : एक २०, कीस १९, दिठ २७, नो २२, पा (पां)च २३, वि २६, सव २६, साव २०, सेंदूरी २६, सेलदही २६

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है :

–उ : एक० पुं० : कइसउ २४, जइसउ २५, कलिअ [उ] २५

[उ प्रत्यय ऐसे अकारान्त पुल्लिग विशेषण शब्दों में लगा है जो प्रत्यययुक्त विशेष्य के साथ स्वतः विशेष्य की भांति अथवा विशेष्य के अनंतर प्रयुक्त हुए हैं।]

–ा : एक० पुं० : वेटुला २२

–ो : ,, ,, : सरसो २३, अइसो २७

–र : स्वार्थिक एक०पुं० : जेहर १९, तेहर १९, केहर २२, धवलर २६, जेहर २७, तेहर २७

–ी : एक०।स्त्री० : सरिसी २१, अइसी २७

[–ी प्रत्यय अकारान्त। आकारान्त विशेषण शब्दो में लगा है।]

–ु : बहु०।पुं० : सवु २७

–े : बहु० पुं० : मीठे १९, राते २३

[–े प्रत्यय अकारान्त आकारान्त विशेषण शब्दों में लगा है।]

–ं : बहु० पुं०।स्त्री० :रयणिमुहां २१, रूरीं २१, कइसीं २१, जइसीं २१

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

–असि : द्वि०पु० एक०पुं० : [वो] लसि १९, भूलसि १९, वानसि १९, देखसि २१, वारसि २२, हारसि २२

–अइ : तृ०पु०पुं०।स्त्री० : [भा] वइ २२, नावइ २२, [मू]-झइ २४, खीजइ २६, पइसइ २७, दीसइ २८

– इ : तृ० पु० एक० पुं० : आथि २७

–अथि।अथि : तृ०पु० बहु० पुं० : भावंथि १९, मूझथि २०

–अ : तृ०पु० बहु० पुं० : फूल २०

क्रिया : संभावनार्थ वर्तमान :

– अइ : द्वि०पु० एक०पुं० : रूचइ २७

–ईजइ : तृ०पु० एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : कीजइ २३, हसीजइ २३, कीजइ २६, खीजइ २६

–इए : तृ०पु० बहु०पुं० : गणिए २१

–अइं : तृ०पु० बहु० पुं० : सोहइं २२

क्रिया : सामान्यभूत और भूत कृदन्त :

– अउ : तृ० पु० एक०पुं० सामान्यभूत : भउ २४

–इअउ : तृ०पु० एक०पुं० भूत कृदन्त : मिलिअउ २५

–एउ : वही : मांडेउ २८

–एल : वही : पसारेल २७

–इअल : वही : पँह्लिअल २५, ओढिअल २६

–इआ : वही : गंठिया २३

–इले : वही : पह्लिले २२

–एतले : वही : घेतले २०

–ए : तृ०पु०बहु०पुं० सामान्यभूत : दीठे १९, दीठे १९, तूछे २०, हारे २१

–ए : वही भूत कृदन्त : रांगे २२, माते २३

–एन्हु : वही : वाधेन्हु २०

–अइ : तृ०पु० एक०स्त्री० सामान्य भूत : भइ २२

[सामान्य भूत अकर्मक क्रियाओं के वचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सक० के वचन और लिंग कर्म के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत् :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

-इ : एक०।बहु०: देखि १९, देखि २०, चा[हि] २१, लहि २३, देखि २४, देखि २४, सुणि २६, देखि २६, छाडि २७

–ें : एक० : हुतें २३

क्रिया : वर्त्तमान कृदन्त :

– अतु : द्वि० पु० एक ० पुं० : वानतु १९

– अंत : तृ० पु० बहु० पुं० : सराहंत २६

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त :

कोई उदाहरण नही हैं।

क्रिया : विधि :

– अउ : द्वि० पु० एक० पुं० : तोरउ २७

– उ : द्वि० पु० एक० पुं० : देखु २१, देखु २१, वोल २७

क्रियार्थक संज्ञा :

कोई उदाहरण नही हैं।

अव्ययों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थानसूचक :

प्रत्ययहीन : कत १९, कतहू १९, ऊपर २१

–ं : उपरं २०

अव्यय : काल सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नही है।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

–ं : एवं २२, एवं २३

े– : कइसे २०, जइसे २०, कइसे २६, जइसे २७

अव्यय : संयोजक :

प्रत्ययहीन : त २७

–ु : जणु २१, जणु २२, जणु २७

–ि : जणि २०, जणि २५

–ो : जो २७

अव्यय : निषेधसूचक :

प्रत्ययहीन : न २१, न २४

अव्यय : निश्चय सूचक :

हि : हि २१

इ : सावइ २०

तु : तु २१

हु।हू : हू १९, हु २०, हू २३

ए : सोए २४

अव्यय : संबोधन सूचक :

रे : एक० : रे १९, रे १९, रे २१, रे २१, रे २१, रे २२ रे २३

अरे : एक० : अरे २१, अरे २१

अव्यय : परिमाण सूचक :

प्रत्ययहीन : अति २६

–ु : विणु २२

अव्यय : प्रश्न सूचक :

प्रत्ययहीन कि।की : की १९, कि २७

षष्ठ नख-शिख

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्त्ताकारक (मूल)

एक० पुं०।स्त्री० विभिन्न स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

पुं० : कवि ३५, कवि ४०, जूझ ३८, तिहु[वन?]४०, सोडर ३२

स्त्री० : जवाध ४२, जीभ ३२, रति ४४, लाछि ४३, वानणी ३६, वूधि ३६, सोह ४१

एक०पुं० अकारान्त और अकारान्त संज्ञा शब्द क्रमशः –ु और –उ प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं :

–ु : पनु २८, काम्वदेउ २८, निलाडु २९, वानु २९, चां[दु] ३०, नाकु ३१, काम्वदेउ ३२, वोलु ३४, मोलु ३४, मांडणु ३८, हारु ३९, संसारु ३९, वेसु ४१, आलवालु ४२, निवासु ४२, वेसु ४३

–उ : सोलडहउ २९, ओडिअउ ३०

बहु०पुं० ।स्त्री० विभिन्न स्वरांत संज्ञा शब्द भी प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

पुं० : चांद ३५, धडिवन ३४, मंगल कलस ३७,

स्त्री० : नखत वाल ३७, भउंह ३०

बहु०पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –ा प्रत्यय के साथ भी मिलते है :
फाटा ३२, हिआ ३४, कूडा ४०
बहु०स्त्री० संज्ञा शब्द प्रत्ययुक्त रूप में नहीं हैं।

संज्ञा : कर्त्ता : विकृत रूप :

प्रत्ययहीन प्रयोग एक ही है :
एक० पुं० : काम्व ३१
एक० पुं० अकारान्त संज्ञा शब्द –इं प्रत्यय के साथ मिलते हैं :
–इं : काम्वदेवइं ४०
बहु०पुं० अकारान्त सज्ञा शब्द भी –इं प्रत्यय के साथ मिलते है :
– इं : ओठइं ३५
स्त्री० एक० अथवा बहु० सज्ञा शब्दों के कोई उदाहरण नही हैं।

संज्ञा : कर्म (मूल)

एक० पुं० : संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में नहीं हैं।
एक०स्त्री० : सज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :
छाय ४४, रोमराइ ३८, वोड ४०, सोभ ३६, सोभ ४३, सोह ३५, सोह ३८, सोह ३९, सोह ४०, सोह ४२, एकावलि ३७, एक आवलि ४१, कांचुली ४०
एक० पुं० –ु।उ प्रत्ययों के साथ मिलते हैं :
– ु : उवेसु २८, रजायसु २९. लेखु ३२, हथिआरु ३२, काजलु ३३, चांदु ३३, हरिणु ३३, वोलु ३५, प [यह्ल] णु ३६, उपमानु ३६, सनाहु ४०, राउलु ४५
–उ : निवाडउ ३८
बहु० पुं० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूपों में मिलते हैं :
हथिआर २८, कपोल ३३, चूडा ३
बहु०पुं० : आकारान्त संज्ञा शब्द ें प्रत्यय के साथ मिलते हैं :
टोकें ३१
बहु० स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (विकृत)

एक०पुं० संज्ञा शब्द –ही प्रत्यय के साथ मिलते हैं :
जगही ३२, वृहस्पति ही ३२,
एक०स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।
बहु० पुं० संज्ञा शब्द–ुं तथा –हीं प्रत्यय के साथ मिलते हैं :
–ुं : धणुहुं ३१
–ीं : कनवासहीं ३४

बहु०स्त्री० संज्ञा शब्द ँ– प्रत्यय के साथ मिलते हैं :

वथुं ४५

संज्ञा : करण :

एक०पुं०।स्त्री० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में नही हैं।

एक०पुं०स्त्री० में तीन प्रत्यय मिलते हैं : –ँ, –इं, तथा –इं सहुं :

–ँ : भइं २८

–इं : गुणइं ३०, भयइं ३३, खगुसइं ३४

–इ सहुं : काछडइ सहुं ४१

बहु० पुं० मे –हिं प्रत्यय मिलता है :

पार्याहि ४२

बहु० स्त्री० के कोई उदाहरण नही है।

संज्ञा : संप्रदान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : अपादान :

प्रत्ययहीन प्रयोगों के कोई उदाहरण नहीं है।

एक० पुं० में –लई प्रत्यय मिलता है :

तलिलई ३५

एक० स्त्री० तथा बहु० के कोई उदाहरण नही हैं।

संज्ञा : संबंध

एक०।बहु०, पुं०।स्त्री० सामासिक रूप इस प्रकार है :

नखत वाल ३७, मगल कलस ३७, वारि ओडु ३८, समुदाइ कज ३६

कभी-कभी समास संबंधी को उकारान्त करके बनाए गए हैं :

चंदु ओलग ३७

बहु० पु० सबंधी के साथ एक०।बहु०,पुं०।स्त्री० में–ह प्रत्यय का प्रयोग हुआ है

–ह : सान्हीहिं आडाहं आखिहिं ३०, सान्हाइं पुडह नाकु ३१, वानाहं सोइर ३१, तरुणाहं हिआ ३४, वीवी फलह सोह ३५, पवालाह सोह ३५, असो(अ)पल्लवहं सोह ३६, आघहं जूझ ३८, [सा]तहं भासहं राउलवेल ४६

एक०पुं० संबंधी के साथ एक०पुं०।स्त्री० में –ह प्रत्यय का प्रयोग मिलता है :

पुं० : काम्वह ३१, पइ्हगह निरी ४१, काम्वदूमह आलवालु ४२, काजह मांझु ४५

स्त्री० : घरह सोह ३८

एक०स्त्री०सम्बन्धी के साथ –हि प्रत्यय का प्रयोग हुआ है :

संकरीहि भालिहि ३१

एक०पुं०सम्बन्धी के साथ –ह। हिर, एक०स्त्री० संबंधी के साथ –हि तथा बहु०पुं०संबंधीके साथ-हुं लगा कर –करइ तथा –करउ प्रत्ययों का प्रयोग

मिलता है :

—करइ : सोहहि करइ पाखइ ३८

—करउ : काम्वदेवह करउ रजायसु २९, आठम्विहि करउ चां[दु] ३०, भालिहि करउ काजु ३१, पूनिवहि करउ चांदु ३३, लाछिहि करउ निवासु ४२, कापडहिर करउ वेसु ४३, पाटणोहि करउ वेसु ४३, मोतीहुं करउ हारु ३९

एक० पुं०।स्त्री० संबंधी के साथ बिना कोई प्रत्यय लगाए और बहु०पुं० संबंधी के साथ —हं प्रत्यय लगा कर एक०स्त्री० मे —करी प्रत्यय का प्रयोग हुआ है :

मुह करी सोभ ३६, पडिकरी कांचुली ४०, वेसहं करी लाछि ४३

एक०।बहु० संबंधी के साथ बहु० पुं० में —केरा प्रत्यय का प्रयोग मिलता है :

सोना केरा चूडा ३९

एक० पुं० संबंधी के साथ —ह और एक०स्त्री० संबंधी के साथ —हि प्रत्यय लगा कर बहु० पु० में करा।कराह का प्रयोग मिलता है।

करा : पूनिवहि पूनिवहि करा चांद ३५,सोनाह करा मंगल कलस ३७

कराह : काम्वदेवह कराह घरह ३८

एक०पुं० संबंधी के साथ बहु०स्त्री० में —करी प्रत्यय लगा मिलता है :

अपांविवे करीं खणुसइ ३४

बहु०पु० संबधी के साथ —हु तथा स्त्री०सबंधी के साथ —हिं प्रत्यय लगाकर —करइ प्रत्यय लगा ह :

चाखुहुकरइ भयइं ३३, आखिहिं करइं गुणइं ३०

बहु०स्त्री०संबंधी के साथ बहु०पुं० में —र प्रत्यय लगा मिलता है :

आंखिर फाटा ३२

संज्ञा : अधिकरण :

प्रत्ययहीन संज्ञा शब्द केवल एक० पुं० में है : समुदाइ कज ३६, ओलग ३७ स्त्री० और बहु० के उदाहरण नही हैं।

एक०पुं० में —इ,—ि।—ी —ु, —उ प्रत्यय मिलते है :

—इ : पाखइ ३३, पाखइ ३८, हिअइ ४४

—ि।—ी : ऊपरि २९, निडालि ३१, जगी (गि?) ३४, मांझि ३८

—ु : काजु ३१, ओडु ३८, माझु ४५

—उ : करउ ३१

एक० पुं०।स्त्री० में —ं प्रत्यय मिलता है :

णहं ३७

बहु० पुं० में —इं। तथा—हिं।—हीं प्रत्यय मिलते हैं :

–इं : कोडइं ३५

–हिं।हीं : कानहीं ३४, हाथहीं ३९, पायहीं ३९, लोकहिं ४२, वोलहिं ४४

संज्ञा : संबोधन :

एक० पुं० संज्ञा शब्द ही प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं :

गौड २८

एक० स्त्री० और बहु० के प्रत्ययहीन अथवा प्रत्ययहीन अथवा प्रत्यय-युक्त प्रयोगों के कोई उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

प्रत्ययहीन प्रयोग नही हैं।

प्रत्यययुक्त प्रयोग का केवल एक उदाहरण मिलता है .

–ारइ: संबध० बहु० स्त्री० : अम्हारइ २८

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष :

प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है :

प्रत्ययहीन कर्म० (विकृत) बहु० पुं० : तुम्ह ४०

–हुं : कर्त्ता० (मूल।विकृत) एक०पुं० : तुहुं २८, तुहुं ३२

–इं सहुं : करण० एक०पुं० : तइं सहुं २८

–म्हहिं सरिसउ : करण० बहु०पुं० : तुम्हहिं सरिसउ ४४

[करण० के उपर्युक्त दोनों रूपों में अन्तर सामान्य और आदरात्मक रूपों का है।]

–म्हारा : संबध० बहु० पुं० : तुम्हा[रा] वेस ४०

सर्वनाम : तृतीय पुरुष [एवं अनिश्चय वाचक सर्वनाम तथा संकेतवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :

कर्ता० (मूल) एक०स्त्री० : स ३५, स ३६, स ३८, स ४१, स ४३, स ४३

कर्म० (विकृत) वि० एक० पुं०।स्त्री० : स ३६, स ३९, आन ४०,

प्रत्ययुक्त प्रयोगों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार हैं :

–ो कर्ता०।कर्म० (मूल) एक०पुं०।स्त्री० : सो ३०, को ४३ कोइ ३६, को ४५

–ान्ह : कर्ता० (मूल) बहु०पुं० : सान्ह ३०

–ा : वि० एक०स्त्री० : वा ४०

–ु : वि०।स०कर्ता० (मूल) एक०पुं० : एउ २९, आनु ३८, आनु ४४, एहु ३०, एहु ३९

–इ : कर्ता० (मूल) एक० पुं०।स्त्री० : कोइ ३६

–ेइं : कर्ता० (विकृत) एक०स्त्री० : तेइं ४३, तेइं ४४

–ें	: कर्ता० (विकृत)	बहु०	पुं०।स्त्री०		तें ३१, तें ३६, तें ३९, तें ४०, तें ४१
–े	: कर्म० (विकृत)	बहु०	पुं०		३२,: ते३३, ४०
–न्ह	: कर्म० (विकृत)	बहु०	पुं०	:	तेन्ह ३४
–ास	: संबंध०	एक०	स्त्री०	:	तास ३८
–हि। हि करउ	: ,,	एक०	पुं०	:	तहि २९, तहि करउ ३५, तहि ४३
–ेहि करइ	: ,,	,,	,,	:	तेहि करइ ३५
–ाह	: ,,	एक०	स्त्री०	:	ताह ४२
–ाह करी	: ,,	,,	,,	:	ताह करी ३६
–ाहि करी	: ,,	,,	,,	:	ताहि करी ४२
–ें	: ,,	बहु०	पुं०	:	तें २९
–ाहं	: ,,	,,	,,	:	सान्हाहं ३१
–ीहिं	: ,,	,,	स्त्री०	:	सान्हीहिं ३०
–हिं	: अधिकरण०	बहु०	पुं०	:	एहिं ३४

सर्वनाम : संबंध वाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :

वि० एक०स्त्री० : ज३५, ज४१, ज४३, ज४३, ज४३

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है :

–ो : सर्व० कर्म० (मूल) एक०पुं० तथा बहु० स्त्री० : जो ४१, जो ४५

–सु : सर्व० कर्म० (विकृत) एक०पुं० : जसु ४१

–े : सर्व० कर्ता० (मूल) तथा वि० बहु० पुं० : जे ४०, जे ४२

–हिं : सर्व० संबंध० बहु० स्त्री० : जहिं ४४

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :

सर्व० कर्ता० (मूल) एक० पुं० : को २८, को २८, को ४२, को ४४

,, कर्म० (मूल) ,, ,, : काइं ३२

प्रत्यययुक्त प्रयोग केवल निम्नलिखित हैं :

–ें : सर्व० कर्ता० (मूल) बहु० : कें ३४, कें ३४

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है :

–णइ : संबंध० वि० एक० पुं० : आपणइ ४४

–णी : संबंध० ,, ,, स्त्री० : आपणी ३६

–णाह : संबंध०वि० बहु० पुं० : आपणाह २८

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं :

एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : आन ४०, उंन ३०, एह ४५, रत ४०, विअ ४१, सतावीस ३७, सव ४०, सात ३८, सुवेस ४५, दुई ३०, दुई ३३, निरी ४१, मालवी २८, जाउं २८,

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है :

–ु : एक०।बहु० पुं० : एकु २८, अउरु २८, रतु ३०, सुरेखु ३१, रतु ३३, एहु ३९, आनु ४४, अउरु ४५

–उ।उं : एक०।बहु० पुं० : सारिखउं २९, किसउ २९, जिसउ २९, रूरउ ३०, ऊंचउ ३०,–इसउ ३०, जूनउ ३०, ठेंचउ ३०, जइसउ ३०, रूरउ ३१, अइसउ ३२, तइसउ ३२, अइसउ ३२, रूरउ ३३, जिसउ ३३, कइसउ ३३, केतउ ३४, सुहावउ ३५, अइसउ ३७, अइसउ ३९, अणसारउ ९, अ-[णसार] उ ३९, इसउ ४०

[–ु।उ प्रत्यय का प्रयोग केवल ऐसे अकारान्त पुं० विशेषणों के साथ हुआ है जो प्रत्यययुक्त विशेषणों के साथ स्वतः विशेष्य की भांति अथवा विशेष्य के अनन्तर आए हैं।]

–ी : एक०स्त्री० : दुभगी २९, कूडी ३६, इसी ३७, किसी ३८, इसी ४०, जइसी ४२, गोरी ४३, साम्वली ४३, सिंदू-री ४३, पाटणी ४३, इसी ४५, मालवी २८

–े : बहु० पुं० : रूरे ३१

–ा : बहु० पुं० : तीखा ३२, ऊजला ३२, तरला, ३२, जिसा ३३, किसा ३५, उआया ३५, पहुंला ३७, ऊंचा ३७, वाटुला ३७, पीणा ३७, जिसा ३७

–ें : एक० (विकृत) पुं० : उपइलें ओठइं ३५

[इस प्रत्यय का प्रयोग विशेषण का विकृत रूप बनाने के लिए किया गया है।]

–हं।–हिं : एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : रूरीहिं ३०, सवहं वानाहं ३१, सवहं तरुणाहं ३४, एहिं ३४, वाटुलाहं ४२, ऊजलाहं ४२, [सा]तहं भासहं ४६

[—हं।हिं का प्रयोग संबंध कारक के विशेषणों के साथ संबंध कारक प्रत्यय के रूप में हुआ है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जाती है।

क्रिया : सामान्य वर्त्तमान :

—अहुं : प्र० पु० एक०पुं० : अवहरहुं ३६

—अइ : तृ० पु० एक०पुं०।स्त्री० : भूलइ २८, वाझइ २९, भावइ २९, नावइ २९, भावइ ३०, खूझइ ३२, सूझइ ३२, सजइ ३६, अछइ ३६, भावइ ३७, नावइ ३७, धरइ ३८, करइ ३८, भावइ ३९, वहइ ४०, कहइ ४१, पांवइ ४१, पाम्वइ ४२, भावइ ४२, वानइ ४५

—इ : तृ०पु० एक० पुं० : आथि २९, आथि ३४

—अथि : तृ०पु० बहु०पुं० : भावंथि ३५, नावंधि ३५

—अंहि : तृ०पु० बहु० पुं० : पडहिं ३४, भा [व] हिं ३८, पांवहिं ३८, भावहिं ४०

क्रिया : संभावनार्थ वर्त्तमान :

—अहुं : प्र० पु० एक० पुं० : करहुं ३६

—अइ : तृ०पु० एक० पुं०। स्त्री० : वोलइ २८, सी [झ] इ २९, हरइ ३६, भावइ ४१, जूझइ ४४, वूझइ ४५, पइसइ ४५ वूचइ ४५, रूचइ ४५

क्रिया : सामान्य भूत और भूत कृदन्त :

—अउ : तृ० पु० एक० पुं० : सामान्य भूत : खूटउ ३४, हुअउ ३९

—इअउ : तृ० पु० एक० पुं० : सामान्य भूत : ऊतरिअउ ३१, खपिअउ ३४, कियउ ४०

—इअउ : तृ०पु० एक० पुं० : भूत कृदन्त : सिंदूरिअउ २९, चडावियउ ३१, पावियउ ३१, कियउ ३३

—ईनउ : तृ०पु० एक०पुं० : भूत कृदन्त : दीनउ २९, दीनउ ३३

—इउ : तृ पु० एक०पुं० : भूत कृदन्त : भणिउ ४२

—इउ : तृ०पु० एक०पुं० : सामान्य भूत : करिउ ३२

—इआ : तृ०पु० बहु० पुं० : सामान्य भूत : किआ ३३, पइह्लिआ ३९, जिआ ४२

—इआ।इआह : तृ०पु० बहु० पुं० : भूत कृदन्त : पइह्लिआ ३४, [सु]णि [आ] ४२, पइह्लिआह ४१

—ई : तृ० पु० एक० स्त्री० : सामान्य भूत : अवहरी ४३, लाधी ४४, खूधी ४४,

—ई : तृ०पु०,एक०स्त्री० : भूत कृदन्त : लाधी ३५, विलधी ३६, आई ३७, वाधी ३७, पइह्ली ४०,

[सामान्य भूत अक० क्रियाओं के वचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सक० कर्म के अनुसार हैं।]

या : सामान्य भविष्यत् :

–इसी : तृ०पु० एक०पुं० : करिसी ३२

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

–अ : एक०।बहु० : देख ३३, धस ३४, देख ३९, वोड ४०

–इ।ई : ,, ,, : फेडि ३५, आई ३७

–इउ : एक०।बहु० : करिउ ३९, देखिउ ३०, पाविउ ३२, फाडिउ ३३, घालिउ ३३, तूसिउ ३६, करिउ ३६, आविउ ४५

–ें : बहु० : कीएं ३१

क : वर्त्तमान कृदन्त :

–अति : तृ०पु० एक० स्त्री० : वानति ३

– अंतु : तृ०पु० बहु० पुं० : आवंतु २८

– अंति : तृ०पु० बहु० स्त्री० : आवंति ४४

क्रिया : भविष्यत् कृदन्तः

–इकउ : तृ०पु० एक०पुं० : छोडि कउ ४०

क्रिया : विधि :

– अउ : तृ०पु० एक०।बहु० पुं० : वोलउ ४१, धरउ ४३, भणउ ४५

क्रियार्थक संज्ञा :

–अण : पुं० एक० पुं० : सुणण ३५

–इवा संबध० स्त्री० बहु० : अपांविवे करीं ३४

अव्ययों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थानसूचक :

–ं : तहं ३३, तहं ३८, तहं ३८, तहं ३८, तहं ३९

–ां : इहां २८

–ुं : इउं २९

अव्यय : कालसूचक :

प्रत्ययहीन : जवहीं ३९

–ु : पुणु २८, पुणु ३९, पुणु ४१

अव्यय : स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

— ˙ : एवं ४०

अव्यय :संयोजक :

त : त ३६, त ३९, त ४०
पर : पर ४४
कि : कि २९, कि ३८
ज : ज २८, ज ३५, ज ३८
जणु : जणु ३३, [ज]णु ३५, जणु ३७

अव्यय : निषेध सूचक :

न : न ३०, न ३४, नही ४०
—नउ : नउ ३२

अव्यय : निश्चय दृढ़ता तथा सूचक :

—ू : कउणू ४१
हि।ही : हि २८, नही ४०, ही ४१
इ : कोइ ३६, सइ ३७, सइ ४०
जि : जि ३९
तु : तु ३०, तु ३१, तु ३१
हुं : भउहहुं ३०, दुहुं ३८
हु : हु २८, हु ३३
हीं : सहीं ३६, जवहीं ३९, हीं ४३,

अव्यय : संबोधन सूचक :

रे । अरे : एक० पुं० : रे ४१, अरे ४०
हो : बहु० पुं० : हो ४१, हो ४१
र : एक० पुं० : र ३४, र ३७, र ३७, र ४०, र ४२, र ४३, र ४३, र ४३

अव्यय : परिमाण सूचक :

अति : अति ४४

अव्यय : प्रश्न सूचक :

कि : कि ४१
कहा : कहा २९

४. रचना के शब्द-रूपों की विभिन्न अपभ्रंशों में स्थिति

क्रमसंख्या के अनंतर कोष्ठकों में दी हुई संख्याएँ रचना के अंशों की हैं : १ से लेकर ६ तक की सख्याएँ रचना के छः नखशिखों की हैं, ७ की संख्या रचना के आदि-अंत की है।

संज्ञा : कर्ताकारक (मूल रूप)

१. (१,२,३,४,५,६) : एक० पुं० : प्रत्ययहीनता : प० पू० द० : तगारे ८० बी, ९५ बी १; उ० : संदेश० ५२, ५५, : मपू०: उक्ति० ५९; १।

२. (१,२,३,४,५,६,७) : एक०स्त्री० : प्रत्ययहीनता : प०पू०द०: तगारे ८७, बी, ९८ बी; उ० : संदेश० ५४, ५६; बी; मपू० : उक्ति० ५९, १।

३. (१,२,३,४,५,६) : एक०पुं० : अकारान्त में : –ु : प०पू०द०.तगारे ८० बी; मपू० : उक्ति० ५९. १। उ० : संदेश० ५२।

४. (३,४,५,६) : एक०पुं० : अकारान्त में : –उ : प० पू० द० : तगारे ८० बी; उ० : संदेश० ५३।

५. (२,३,४,५,६) : बहु०पुं० : प्रत्ययहीनता : प०पू०द० तगारे ८४ ९६ बी, उ० : अकारान्त में संदेश० ५२; मपू० : उक्ति० ५९.१।

६. (२,६) : बहु०स्त्री० : प्रत्ययहीनता : प० पू० द० : तगारे ८७, ९३ बी, ९९ बी; उ०: अकारान्त में संदेश० ५४; मपू० उक्ति० ५९.१।

७. (२,५) : बहु०पुं० :–ँ : पू० द० : तगारे ८४ बी ९६ बी; मपू० : उक्ति० ५९. १।

८. (३,५) : बहु० पुं० : –ु : प०पू० : तगारे ८४ बी।

९. (१) : बहु० पुं० : –ां।

१०. (४, ६) : वहु० पुं० : अकारान्त में : –ा : प० पू० द० : तगारे ८४ बी; उ० : संदेश० ५३; मपू० : उक्ति० ५९. १।

११. (३) : बहु० स्त्री० : ईकारान्त में :–अउ : प०पू० : तगारे ८–७।

१२. (५) : बहु० स्त्री० : –ं ; मपू० : उक्ति० ५९. १।

संज्ञा : कर्ताकारक (विकृत रूप)

१३. (६) : एक० पुं० : प्रत्ययहीनता : उ० : संदेश० ५२, ५५; मपू० : उक्ति० ५९. १।

१४. (६) : एक० पुं० : –इं : प० : तगारे ८१ बी ।

१५. (६) : बहु० पुं० : –इं : प०द० :नपुं०: तगारे ८४ बी।

संज्ञा : कर्मकारक : (मूल रूप)

१६. (५) : एक० पुं० : प्रत्ययहीनता : प०पू०द० : तगारे ८० बी, ९५ बी; उ०, अकारान्त में : संदेश० ५२, ५४; मपू० : उक्ति० ५९. २ ।

१७. (१, २, ५, ६) : एक०स्त्री० : प्रत्ययहीनता : प० पू० द० : तगारे ८७, ८९ बी, ९८ बी; उ० : संदेश० ५४, ५६; मपू० : उक्ति० ५९. २ ।

१८. (१,२,३,४,५,६) : एक०पुं० : अकारान्त में: –ु : प० द० :तगारे ८० बी. उ० : संदेश० ५२; मपू०: उक्ति० ५९. २ ।

१९. (५,६) : एक०पुं० : अकारान्त में : –उ : प०द० : तगारे ८०बी; उ० : संदेश० ५३; मपू० : उक्ति० ५९. २ ।

२०. (६) : बहु० पुं० : प्रत्ययहीनता : प०पू०द० : तगारे ८४ बी; उ०: अकारान्त में संदेश० ५२; मपू० :उक्ति० ५९. २ ।

२१. (४) : बहु०स्त्री० : प्रत्ययहीनता : प०पू० द० : तगारे ८७, ९३ बी, ९९ बी; उ० : संदेश० ५४, ५६; मपू० : उक्ति० ५९. २ ।

२२. (६) : बहु० पुं० :–े : पू० : तगारे ८४ बी; मपू० : उक्ति० ५९. २ ।

संज्ञा : कर्मकारक (विकृत रूप)

२३. (२,५) : एक०पुं० :–हि : मपू० : उक्ति० ५९. ७ ।

२४. (३) : एक०स्त्री० :–हिं: मपू० उक्ति० ५९. ७ ।

२५. (३,६) : बहु०पुं०।स्त्री० –हिं।हीं: मपू० :उक्ति० ५९. ७ ।

२६. (३) : बहु०पुं० : –ा : प०पू० द० : तगारे ८४ बी ।

२७. (५) : बहु० पु० :–ां (तुल० मपू० –ां : उक्ति० ५९. २)

२८. (३,४,६) : बहु०पुं० :–ु, ु–ं : प० पू० में–ु : तगारे ८४ बी।

२९. (४,५,६) : बहु०स्त्री० : –ं : मपू० :उक्ति० ५९. २ ।

संज्ञा : करण कारक

३०. (१,७) : एक० पुं० : —ँ : प०पू० : तगारे ८१ बी, ९५ बी २; मपू० : उक्ति० ५९. ३ ।

३१. (४) : एक० पुं० :—ु।

३२. (४) : एक०पुं० : अकारान्त में : —ेण :प०पू०द० :तगारे ८१बी; उ० : संदेश० ५२ ।

३३. (५) : एक०पुं०।स्त्री० :—ं : मपू० : इकारान्त में : उक्ति० ५९. ३ ।

३४–३५. (६) : एक०पुं०:अकारान्त में: –इं। अइं : प० :तगारे ८१ बी।

३६. (६) : एक०पुं०:–इं सहुं : (तुल० मपू०–सउं:उक्ति०६०.१०) ।

३७. (४) : एक०स्त्री० :–हि :उ० : संदेश० ५४, ५६; मपू० : उक्ति० ५९. ३, ५९. ७ ।

३८. (६) : बहु०पुं० :–हिं :प० द० :तगारे ८५बी,९६बी; उ०:संदेश० ५२; मपू० : उक्ति० ५९. ३, ५९.७।

संज्ञा : संप्रदान कारक

३९. (४) : बहु०पुं० :–ा ।

संज्ञा : अपादान कारक

४०. (४) : एक० पुं०:–इं : (तुल०प० करण० –इं: तगारे ८१ बी)।

४१. (६) : एक० पुं० : लई ।

संज्ञा : संबंध कारक

४२. (१,३,४,५,६) : एक०।बहु०, पुं०।स्त्री० : (अ) समास : प्राचीन तथा मध्य भारतीय आर्य भाषा से आगत।

(आ) प्रत्ययहीनता : प०पू०द० : तगारे ८३बी, ८६बी, ८७, ९८बी; उ० : संदेश० ५१ बी १, ५४, ५५ ।

४३. (२,४,६,७) : एक०।बहु०पुं०।स्त्री० : –हं : प० : तगारे ८३ बी, ८६ बी, ८७, ९१, ९३ बी ३, ९५ बी ३, ९६ बी।

४४. (४,६) : एक०।बहु० पुं० : केरा : प०द० : तगारे १०३।

४५. (२,४,५,६) : एक०पुं०।स्त्री० : –हि।ही : प० द०: तगारे ८३ बी, ८७, ९१बी, ९८ बी ;उ० : संदेश० ५१ ए, ५६।

४६. (७) : एक०पुं० : –इ।

४७. (२,६) : एक०पुं०।स्त्री० :–ह : प०पू०द० :तगारे ८३बी, ८७, ९१, ९५ बी ३, ९८बी; उ० : संदेश० ५१ ए, ५२, ५४।

४८. (१,५) : एक०।बहु० पुं०। स्त्री० : –न्हु : मपू०:उक्ति० ५९. ४।

४९. (१) : एक० पुं० :–हुं: प० तगारे ८३बी,९५ बी ३।

५०–५१. (५) : एक० पुं० :–ेर, –ेरउ ।

५२. (५) : एक० पुं०: केरउ : प० द०:तगारे १०३ ।

५३. (५) : एक० पुं०: कर : मपू० :उक्ति० ५९.४ ।

५४. (६) : एक० पुं० : करइ (तुल०कर : मपू० : उक्ति० ५९.४)

५५. (६) : एक० पुं०: करउ (तुल० कर:मपू० : उक्ति० ५९.४)

५६. (६) : एक० पुं० : करइं : (तुल० कर :मपू० : उक्ति० ५९.४)

५७. (२) : एक० स्त्री०: –हंचि,–हंची ।

५८. (३) : एक० स्त्री०: –णी ।

५९. (५,६) : एक० पुं० स्त्री० : –ु ।

६०. (५) : एक० स्त्री०: केरि : प०द० : तगारे १०३ ।

६१. (६) : एक० स्त्री० : करी : मपू० : उक्ति० ५९. ४ ।

६२. (५,६) : बहु० पुं० : –र ।

६३–६४. (६) : बहु० पुं० : करा।कराह (तुल०कर:मपू०:उक्ति०५९.४)।

६५. (५) : बहु० पुं० : –रे ।

६६. (५,६) : बहु० स्त्री० : करीं : मपू० :उक्ति० ५९. ४ ।

६७. (३) : बहु०स्त्री० : –हिं : (तुल०प० – हिम् : तगारे ९९बी); मपू० : उक्ति० ५९. ७ ।

संज्ञा : अधिकरण कारक

६८. (१,२,३,५,६) : एक०पुं० । स्त्री० : प्रत्ययहीनता : उ० : संदेश० ५१ बी२, ५२, ५४; मपू० :अकारान्त :उक्ति०५९. ५ ।

६९. (३,५,६) : एक० ।बहु०पुं०।स्त्री० : —ं : मपू० :उक्ति० ५९. ५ ।

७०. (५) : एक०,पुं०।स्त्री० : –हि:प० पू० द० :तगारे ८२ बी, ८७, ९२ बी, ९५ बी ४, ९८ बी; उ० : सदेश० स्त्री० : इकारान्त में ५६; मपू० : उक्ति० ५९. ७ ।

७१. (१,३,६) : एक० पुं० :अकारान्त: –इ: :प० द० :तगारे ८२ बी; उ० : संदेश० ५४ ।

७२. (१,६) : एक० पुं० :– ु ।

७३. (२,४,५,६) : एक० पुं० : –ि।–ी : प०द०: अकारान्त में तगारे ८२ बी; उ० : संदेश० ५२, ५४, ५५; मपू० : उक्ति० ५९. ५ ।

७४. (२)　: एक० पुं० : –ि हि : उ० : संदेश० ५२।

७५. (२,५,७)　: एक०पुं० : –ें : पू० : तगारे ८२ बी;, मपू० : उक्ति० ५९. ५ ।

७६. (६)　: एक० पुं० : –इं : प० : तगारे ८२ बी ।

७७. (३,५)　: एक० पुं० : –े प० पू० द० : तगारे ८२ बी, ९५ बी ४: मपू० : उक्ति० ५९. ५ ।

७८. (४,६)　: एक० पुं० : –उ ।

७९. (१,३,४,५,६) : बहु० पुं०।स्त्री० : –हिं।हीं: प० :तगारे ८५ बी, ८७, ९३ बी२, ९६ बी, ९९ बी; मपू० : उक्ति० ५९. ७ ।

८०. (५)　: बहु० पुं० ।स्त्री० : –न्हु : मपू० : उक्ति० ५८ ।

८१. (३)　: बहु० पुं० : प्रत्ययहीनता : उ० :संदेश० ५२, ५५; मपू० : उक्ति०५९.-५ ।

८२. (४)　: बहु० पुं० :–हु ।

८३. (२)　: बहु० पुं० : अकारान्त में: –िहं :प० : तगारे ८५ बी; उ० : संदेश० ५२ ।

संज्ञा : संबोधन कारक

८४. (२,५,६)　: एक०पुं०। स्त्री० : प्रत्ययहीनता : प०पू०द० :तगारे ८० बी ८७, ८९ बी, ९५ बी १, ९८ बी; उ० : अकारान्त में संदेश० ५२; मपू० : उक्ति० ६२।

८५. (३,४)　: एक० पुं० : अकारान्त में : –ु : प० : तगारे ८०बी ।

८६. (५)　: एक० पुं० : –ू ।

८७. (२)　: एक० पुं० : – –े ।

८८. (५)　: एक० पुं० : – ो ।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष

८९. (१,५)　: कर्म० (विकृत) एक०पुं० : –हि। हिं : मोहि। मोंहि : मपू० : उक्ति० ६६ : १ ।

९०. (३)　: संबंध० बहु०पुं० : –णउं : अम्हाणउं ।

९१. (५)　: संबंध०बहु०पुं० :–अम्हारे : (तुल०मपू० अम्हार :–उक्ति० ६६.१) ।

९२. (६)　: संबंध०बहु०स्त्री० :–रइ : अम्हारइ : (तुल० मपू० अम्हार : उक्ति० ६६. १) ।

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष

९३. (४,५) : कर्ता० (मूल) एक०पुं० :प्रत्ययहीनता : तू। तूं : (तुल० मपू०तुं : उक्ति० ६६. २) ।

९४. (६) : कर्ता०(मूल) एक०पुं० : –हुं :तुहुं :प०द० :तगारे १२० बी ।

९५. (२) : कर्म० (विकृत) एक०स्त्री० : –ोही : तोही : मपू० : उक्ति० ६६.२।

९६. (६) : कर्म० (विकृत) बहु०पुं० : प्रत्ययहीनता : तुम्ह : प० तगारे १२० बी; मपू० : उक्ति० ६६. २।

९७. (५) : करण० एक० पुं० : –इं :तइं: :प० तगारे १२० बी; मपू० उक्ति० ६६. २ ।

९८. (६) : करण० एक० पुं० :–इंसहुं : तइंसहुं

९९. (२) : करण०एक०स्त्री० :–झचि : तुझचि ।

१००. (६) : करण०बहु०पुं० :–हिं सरिसउ : तुम्हहिं सरिसउ : (तुल० सरिसउ–उ० : संदेश० ७३) ।

१०१. (२) : संबंध० एक०पुं० : –ो : तो : पू० : तगारे १२० बी।

१०२. (६) : संबंध० बहु० पुं० : –ारा : तुम्हारा ।

सर्वनाम : तृतीय पुरुष तथा अनिश्चय वाचक

१०३. (३) : सर्व०कर्ता०:मूल: एक०स्त्री० :–इन (तुल०प०इणि : तगारे १२५ तथा उ०इणि : संदेश० ५८)।

१०४. (१,३,४,५,६,७) : सर्व०कर्ता।कर्म (मूल।विकृत) : एक०पुं० ।स्त्री० :ो : सो : प०पू०द० : सो : तगारे १२३ ए; उ० उ०संदेश० ५८ अ; मपू० : उक्ति० ६६. ३ ।

१०५. (२,५,६) : सर्व० कर्त्ता० (मूल), एक०पुं०। स्त्री० : को : (तुल० उ० प्रश्नवाचक को : संदेश० ५९ ए, तथा मपू० : उक्ति० ६६. ६)।

१०६. (१) : सर्व० कर्ता० (मूल) एक०पुं० : कोऊ –उक्ति० ६६. ७ ।

१०७. (६) : वही : पुं०।स्त्री० – इ : कोइ : उ० : संदेश० ५९ बी ।

१०८. (२) : सर्व : कर्ता०(मूल) । कर्म(विकृत)एक०पुं०।स्त्री० : –े :ते: पू० : तगारे १२३ ए ।

१०९. (१,६) : सर्व०कर्ता० (मूल) अथवा वि० एक०पुं० :–ु : आनु : (तुल० प०द०अण्णु :तगारे १३०)।

११०. (६,७) : वही :एउ : प० : तगारे १२४ ए:उ० : संदेश० ५८ ।

१११. (३,६) : सर्व०कर्ता० (मूल) अथवा वि०एक० । बहु०पुं०–एहु : प०पू०द० : तगारे १२४ए : उ० : संदेश० ५८ अ।

११२. (५) : सर्व०कर्ता० (मूल) ।कर्म० (विकृत) बहु०स्त्री० :–ा :ता।

११३. (३,४) : वही : सा: प० : तगारे १२३ ए६; उ० : संदेश० ५८ ए ।

११४. (६) : वही: वा ।

११५. (५,६) : सर्व० कर्ता० (मूल) एक०स्त्री० :प्रत्ययहीनता : स : प०: तगारे १२३ ए. ६ ।

११६. (५) : वही : एह: प० द० :तगारे १२४ ए ३; उ०: संदेश० ५ ८ए।

११७. (६) : सर्व०कर्ता० (विकृत) एक०स्त्री० : –ें : तेइं : मपू० : उक्ति० ६६. ३ ।

११८. (२,६) : सर्व कर्ता० (मूल) बहु० पुं० : –ान्ह : सान्ह ।

११९. (४,५,६) : सर्व० कर्ता० (मूल) कर्म० (विकृत) तथा वि०बहु०पुं०। स्त्री० –े :–ते : प०द० : तगारे १२३ ए ५; उ०: संदेश० ५८ ए; मपू०उक्ति० ६६. ३ ।

१२०. (६) : सर्व०कर्ता० (विकृत) बहु०स्त्री० : –ें : तें : :प०: तगारे १२३ ए ५ ।

१२१. (५,६) : सर्व०कर्म० (विकृत) वि०एक०पुं०।स्त्री० :प्रत्ययहीनता :स: पू० : पुं० :तगारे १२३ ए ४ ।

१२२. (१,५,६) : वही :आन: (तुल० प०पू०द० अण्ण :तगारे १३०) ।

१२३. (१) : सर्व०कर्म० (विकृत) एक०स्त्री० :– हि : ताहि : मपू० : उक्ति० ६६. ३ ।

१२४. (६) : सर्व०कर्म० (विकृत) बहु० : –ेन्ह : तेन्ह ।

१२५. (३) : सर्व०कर्म० (विकृत)बहु० पुं० : –हिं : आनहिं (तुल० संज्ञा कर्म०(विकृत)–हिं : मपू० उक्ति० ५९. २)।

१२६. (२,४) : सर्व०कर्म० (विकृत) तथा वि० बहु० पुं० :—ें :जें ।

१२७. (२) : सर्व०करण० एक० पुं० :–ेंहचा : तेंहचा।

१२८. (२) : सर्व० करण० बहु० पुं० –ेंहचे : तेंहचे।

१२९. (५) : सर्व० संबंध० एक० पुं० : –ारउ : तारउ।

१३०. (५) : सर्व० संबंध० एक० पुं० : –ारे : तारे।

१३१. (५) : सर्व० संबंध० एक० पुं० :–ारि : तारि।

१३२. (५) : सर्व० संबंध० एक०स्त्री० : ाही : वाही।

१३३. (६) : सर्व० संबंध० एक० पुं० :–हि :तहि: :प०: तगारे १२३ ए ४।

१३४. (६) : वही :–हि करउ : तहि करउ ।

१३५. (६) : वही :–ेहि करइ : तेहि करइ ।

१३६. (६) : सर्व०संबंध० एक०स्त्री० :–ाह : ताह : प० : तगारे १२३ ए६।

१३७. (६) : वही :–हि करी : तहि करी ।
१३८. (६) : वही :–हि करी : ताहि करी ।
१३९. (१,६) : सर्व०संबंध०एक०स्त्री० :– ास।ासु : तास । तासु : द० : तगारे १२३ ए ६ : (तुल०उ०तस्स तथा तसु : संदेश० ५८ अ)।
१४०. (४) : वही: – सु : तसु : प० : तगारे १२३ ए. ६।
१४१. (१) : सर्व०संबंध० एक०स्त्री० :–ाकरि : ताकरि: मपू०: उक्ति० ६६.३ ।
१४२. (६) : सर्व०संबंध०बहु० पु ० : –ें : तें।
१४३. (६) : सर्व०सबंध०बहु० पु ० –ाहं :सान्हाहं।
१४४. (६) : सर्व०संबंध०बहु० स्त्री० :–ीहिं :सान्हीहिं ।
१४५. (६) : सर्व० अधि० बहु० पु ० :–हिं : एहिं : (तुल० बहु०स्त्री० : प० : तगारे १२४ ए३, १२५ ए३)।

सर्वनाम : संबंधवाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण]

१४६. (५,६) : सर्व० तथा वि० एक० पु ।स्त्री० : प्रत्ययहीनतता : ज ।
१४७. (१,३) : वि० एक० पु ०।स्त्री० : –ा : जा : : प० द० : स्त्रीलिंग– तगारे १२६ ए. २ ।
१४८. (१,२,३,४, ५,६,७) : सर्व०कर्ता (मूल) ।कर्म (मूल) तथा वि० एक० पु ०। स्त्री०: –ो : जो : प०पू०द० : पु ० में तगारे १२६ ए १; उ०:संदेश०५८बी; मपू०: उक्ति०६६.४।
१४९. (१,६) : सर्व०कर्म० (विकृत) एक०पु ० :–सु:जसु: उ० :संदेश० ५८ बी।
१५०. (२) : वि०एक०स्त्री० : –े :जे
१५१. (४,५,६) : सर्व०कर्ता० (मूल)तथा वि० बहु० पु ०।स्त्री०: –े :जे: प० द० : तगारे १२६ ए १ : मपू० : उक्ति० ६६.५।
१५२. (६) : सर्व०संबंध० बहु० स्त्री० :–हिं :जहिं ।
१५३. (३,६) : सर्व० अधि०।वि० एक० पु ० :–हिं : जहिं : प० द० तगारे १२६ ए १ ।

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण]

१५४. (२,५,६) : सर्व० कर्ता० (मूल) । कर्म० (मूल) एक०पु ०।स्त्री० : प्रत्ययहीनता : को : : प०पू०द० : तगारे १२७ ए३ : उ० : संदेश० ५९ ए : मपू० : उक्ति० ६६.६।
१५५. (३) : सर्व०कर्म० (मूल) एक०पु ०: का।

१५६. (३,६) : सर्व० कर्म० (मूल) एक० पुं० प्रत्ययहीनता : काइं : प०द० : नपुं० तगारे १२७ ए ३।

१५७. (५) : सर्व० कर्ता० (मूल) एक०पुं० : -ु : काहु ।

१५८. (२) : वि० एक० पुं० : -ा : चा ।

१५९. (६) : सर्व करण० एक० पुं० :-ें : कें : (तुल० केँइं: मपू० : उक्ति० ६६.६)।

१६०. (३) : सर्व०संबंध० एक० स्त्री०-सु : कासु : प०पू०द०: तगारे १२७ ए ३ ।

१६१. (३) : वही -सुतणी : कासुतणी : प०द० : तगारे १०४।

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]

१६२. (७) : सर्व०संबंध० एक०पुं० : -णु : आपणु :(तुल० आपणु कें ह :मपू० : उक्ति० ६६. ८)।

१६३. (६) : सर्व० संबंध० तथा वि० एक०पुं०:-णइ :आपणइ: (तुल० मपू० : आपण : उक्ति० ६६.८)

१६४. (५,६) : सर्व० संबंध० तथा वि० एक० स्त्री० :-णी आपणी : मपू० : उक्ति० ६६. ८ ।

१६५. (६) : सर्व० संबंध० तथा वि०बहु०पुं०:-णाह:आपणाह।

गुणवाचक विशेषण

१६६. (१,२,३,४,५,६) : एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : प्रत्ययहीनता : मपू० : उक्ति० ६४।

१६७. (६,७) : एक०।बहु० पुं०।स्त्री० : -हं।-हिं विशेष्य का कारक-प्रत्यय ।

१६८. (१,२,३,४,५,६) : एक० ।बहु० पुं० : -ु :मपू० : उक्ति० ६४।

१६९. (१,३,५,६) : एक०।बहु० पुं० : -उ।ऊ।

१७०. (४,६) : एक०।बहु० पुं० (विकृत)-ें : मपू० : उक्ति० ६४।

१७१. (२,४,५) : एक० पुं० : ा ।

१७२. (५) : एक० पुं० : -ो ।

१७३. (५) : एक० पुं० : -र ।

१७४. (१,२,३,४,५,६,७) : एक।० स्त्री० : -ी : मपू० : उक्ति० ६४ ।

१७५. (३,५) : बहु० पुं०।स्त्री० : -ं : मपू० : उक्ति० ६४।

१७६. (५,६) : बहु० पुं० : -ें : मपू० : उक्ति० ६४ ।

१७७. (३,४,६) : बहु० पुं० : -ा ।

क्रिया : सामान्य वर्तमान काल

१७८. (६) : प्र० पु० एक० पुं० : –अहुं : (तुल० प०पू०एक० –अउ तथा प० बहु० –अहु ; तगारे १३६ बी)।

१७९. (२,५) : द्वि० पु० एक०पुं० :–असि : प०पू० :तगारे १३६ बी; उ० :संदेश० ६२ : मपू० : उक्ति० ७१ ।

१८०. (४) : द्वि०पु० एक०पुं० : –अहि:प०द० : तगारे १३६ बी; उ०: संदेश० ६२।

१८१. (४,५) : तृ०पु० एक०।बहु०पुं० : –अ :मपू० :एक०: उक्ति० ७१ ।

१८२. (१,२,३,४,५,६,७) : तृ० पु० एक० पुं०।स्त्री० : –अइ : प०पू०द०: तगारे १३६बी; उ० : संदेश०६२; मपू०:उक्ति० ७१ ।

१८३. (३,५,६) : तृ०पु० एक० पुं०।स्त्री० :– : इ: आथि: : मपू० : उक्ति० ७१।

१८४. (३) : तृ० पु० एक०स्त्री० : –अति : मपू०: उक्ति०७१ ।

१८५. (२,३,४,६) : तृ० पु० बहु०पुं०।स्त्री :–अहिं: प०:तगारे १३६ बी; (तुल०द०–अहिम्:वही) ; उ०:संदेश० ६२:

१८६. (१,५,६) : तृ० पु० बहु० पुं० : –अंथि : (तुल० – अंति : प०द० : तगारे १३६बी) ।

१८७. (२) : तृ० पु० बहु० पुं० : –उ :

क्रिया : संभावनार्थ वर्तमानकाल :

१८८. (६) : प्र० पु० एक० पुं० : –अहुं : (तुल० सामान्य वर्त० –अउं: प०पू०:तगारे १३६ बी) ।

१८९. (४) : द्वि० पु० एक० पुं० : –अउ ।

१९०. (१,२,५,६) : तृ० पु० एक० पुं०।स्त्री० : –अइ (तुल०सामान्य वर्त० –अइ : प०पू०द०:तगारे १३६ बी ।

१९१. (४) : तृ० पु० एक०बहु०पुं०।स्त्री० : –इय्यइ (तुल०–इअइ:द० : तगारे १४१) ।

१९२. (४) : वही : इज्जइ : द० :तगारे १४१: उ० : संदेश०७१।

१९३. (१,५) : वही : ईजइ : (तुल०–ईज: मपू० : उक्ति० ७२) ।

१९४. (२) : तृ०पु० बहु० पुं० : –एं ।

१९५. (३,५) : तृ०पु० बहु० पुं० : –अइं (तुल०सामान्य वर्त० – अइम्: प० द० : तगारे १३६बी) ।

१९६. (५) : तृ० पु० बहु० पुं० : –इए ।

क्रिया : सामान्यभूत काल [और भूत कृदन्त]

१९०. (१) : तृ० पु० एक० पु० भूत कृदन्त :–अउ :उ० :संदेश० ६७।

१९८. (३,५,६) : तृ० पु० एक० पु० भूत कृदन्त : –इअउ : प०पू० :तगारे १४८ बी; उ० :संदेश० ६७ ।

१९९. (५,६) : तृ० पु० एक० पु० सामान्यभूत : –अउ : उ०:संदेश० ६७।

२००. (५,६) : तृ० पु० एक० पु० भूतकृदन्त : –इअउ :प० पू० :तगारे १४८ बी ; उ०:संदेश० ६७ ।

२०१. (३,६) : तृ० पु० एक० पु० भूतकृदन्त : –ईनउ ।

२०२. (४) : तृ० पु० एक० पु० सामान्यभूत :–ऊ ।

२०३. (४) : त० पु० एक० पु० सामान्यभूत : –ओ ।

२०४. (५) : तृ० पु० एक० पु० कृदन्त : –एउ ।

२०५. (५) : तृ० पु० एक० पु० भूतकृदन्त : –एल ।

२०६. (५) : तृ० पु० एक० पु० भूतकृदन्त : –इअल ।

२०७. (५) : तृ० पु० एक० पु० भूतकृदन्त : –इआ :(तुल० पू०:इअअ । तगारे १४८ बी) ।

२०८. (५) : तृ० पु० एक० पु० भूतकृदन्त : –इले ।

२०९. (५) : वही : –एतले ।

२१०. (६) : तृ० पु० एक० पु० भूतकृदन्त : –इउ : प०द० : तगारे १४८ बी; (तुल० उ० पूर्वकालिक –इउ : संदेश० ६८)।

२११. (६) : तृ० पु० एक० पु० सामान्यभूत : –इउ :प०द० :तगारे १४८ बी; (तुल० उ० : पूर्वकालिक –इउ : संदेश० ६८) ।

२१२. (२) : तृ०पु० भूतकृदन्त बहु०पु० : –इअ :प०पू०द० : तगारे १४८बी; उ०:संदेश०६७ मपू० :उक्ति० ७५।

२१३. (४,५) : तृ० पु० बहु० पु० सामान्यभूत : –ए :मपू० :उक्ति० ७५।

२१४. (५) : तृ पु० बहु० पु० भूत कृदन्त : –ए : मपू० :उक्ति०७५।

२१५. (५) : तृ० पु० बहु० पु० भूतकृदन्त : –एन्हु ।

२१६. (६) : तृ० पु० बहु० पु० सामान्यभूत : –इआ :(तुल०पू० इअअ: तगारे १४८ बी) ।

२१७. (६) : तृ० पु० बहु० पु० भूतकृदन्त : –इआ ।इआह : (तुल०पू०

इअअ: तगारे १४८)।

२१८. (६) : तृ० पु० एक० स्त्री० सामान्यभूत :-ई : प० पू० तगारे १४८बी; उ० : संदेश० ६७; मपू०:उक्ति० ७५।

२१९. (२,३,६,७) : तृ० पु० एक० स्त्री० भूतकृदन्त :-ई :प०पू० तगारे १४८बी: उ० : संदेश० ६७; मपू०:उक्ति० ७५।

२२०. (५) : तृ०पु० एक०स्त्री० सामान्यभूत : -अइ : उ०:संदेश० ६७; मपू० : उक्ति० ७५।

क्रिया : सामान्य भविष्यत् काल

२२१. (६) : तृ० पु० एक०पुं० : -इसी : (तुल०प०-इसइ:तगारे १३९ बी)।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त

२२२. (२,४,६) : एक०।बहु० : - अ :मपू० :उक्ति० ८०।

२२३. (४,५,६) : एक०।बहु० : - इ :प०पू०द०:तगारे १५१ बी; :उ०: संदेश०६८; मपू०:उक्ति० ८०।

२२४. (६) : वही : -ई :पू०:तगारे १५१बी।

२२५. (३,५,६) : एक०।बहु० : —ँ :मपू० :उक्ति० ८२।

२२६. (६) : एक०।बहु० : -इउ :प०:तगारे १५१बी; उ०:संदेश० ६८।

क्रिया : वर्त्तमान कृदन्त

२२७. (२,३,५) : द्वि० पु० एक० पुं०।स्त्री० :-अतु।

२२८. (२,७) : तृ० पु० एक० पुं० : - अत :मपू० :उक्ति० ७८,८०।

२२९. (४,६) : तृ० पु० एक० स्त्री० : -अति : मपू० : उक्ति० ८१।

२३०. (६) : तृ० पु० एक०पुं० : -अंतु : प०:तगारे १४७ ए; उ०: संदेश० ६४; (तुल०मपू०:उक्ति० ७८)।

२३१. (३,५) : तृ० पु० बहु० पुं० : - अंत :प०पू०द० : तगारे १४७ए: उ०:संदेश०६४; मपू० : उक्ति० ७८, ८०।

२३२. (४) : तृ० पु० बहु० : पुं० -अंद।

२३३. (६) : तृ० पु० बहु० स्त्री० : -अंति :प०पू०द० :तगारे १४७ए; उ०:संदेश० ६४।

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त

२३४. (६) : तृ० पु० एक० पुं० : -इ कउ।

क्रिया : विधि

२३५. (२,३,५,६) : द्वि० पु० ।तृ०पु० एक०।बहु०पुं० : –अउ : प०द० : तगारे १३८ बी; उ० : तृ०पु० में : संदेश० ६३ ; मपू० : उक्ति०७४।

२३६. (३,४,५) : द्वि० पु०।तृ०पु०एक०पुं० : –उ : प०पू०द० : तगारे १३८ बी; उ० : द्वि० पु० में; संदेश० ६३; मपू० : उक्ति० ७४।

क्रियार्थक संज्ञा

२३७. (६) : एक ० पुं० : –अण : प०पू० : तगारे १५० बी; उ०:संदेश० ६९; मपू० : उक्ति० ८३।

२३८. (२) : एक० पुं० : –एवउ : प०द० : तगारे १४९ बी; उ० : एव्वउ : संदेश० ७०।

२३९. (६) : एक० पुं० :–इवा ।

अव्यय : स्थानसूचक

२४०. (५) : कत,ऊपर,ऊपरं : प्रत्ययहीनता ।

२४१. (२,३,४) : एथु,तेथु : –ु प०द० : तगारे १५३ बी; मपू० : एथुं: उक्ति० ६८।

२४२. (१,६,७) : जहं, तहं, : उ० : तहं : संदेश०७४।

२४३. (६) : इहां : –ां : मपू० : उक्ति० ६८।

२४४. (६) : इउं :–ुं ।

अव्यय : कालसूचक

२४५. (६) : जव : प्रत्ययहीनता : मपू० : उक्ति० ६८ ।

२४६. (३) : तं :–ं : उ० : संदेश० ७४।

२४७. (६) : पुणु : –ु : (तुल० कार्यप्रणाली सूचक पुणु : प०पू०द० : तगारे १५३ सी);उ० : संदेश० ७४; मपू० : उक्ति० ८९ ।

अव्यय : स्थिति सूचक

२४८. (३) : पर : प्रत्ययहीनता : उ० : संदेश० ७४ ।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक ।

२४९. (५,६) : एवं : –ं :संस्कृत तत्समता
२५०. (५) : कइसे :—े :(तुल० मपू० कैसें :उक्ति० ६८) ।
२५१. (७) : जेम्व, तेम्व : – व : प० द० : जेम, जेवं, तेम, तेवं : तगारे १५३ सी; उ० : जेम, तेम, संदेश० ७४; :मपू० जेम, तेंम:उक्ति० ६८ ।

अव्यय : संयोजक

२५२. (६) : पर :प्रत्ययहीनता :उ० :संदेश०७४।
२५३. (६) : कि : ,, : मपू० : उक्ति०८९।
२५४. (५,६) : ज, त : ,, : मपू० : उक्ति० ८९ ।
२५५. (१) : जं : –ं : उ० : संदेश० ७४।
२५६. (४) : नं : –ं : (तुल० प० द० णं: तगारे १५३ डी :, उ० णं : संदेश० ७४) ।
२५७. (२,५,६) : जणु,जइसउ : –ु : प० जणु : तगारे १५३ डी:, उ० संदेश० ७४।
२५८. (३) : अनु : –ु : प० : तगारे १५४ ।
२५९. (३,५) : जो : –ो ।
२६०. (५) : जणि : –ि :प० : तगारे १५३ डी।
२६१. (३) : जउ ।

अव्यय : निषेधसूचक

२६२. (३,५,६) : न । ण : प्रत्ययहीनता : ण प० पू०द० में : तगारे १५३ डी; न तथा ण उ० में : संदेश०७४; : न मपू० में :उक्ति० ८९।
२६३. (६) : न ही ।
२६४. (३,६) : नउ : –उ : पू० : तगारे १५३ डी।
२६५. (३) : ना : –ा ।

अव्यय : निश्चय एवं दृढ़तासूचक

२६६. (५,६) : हि। ही : प्रत्ययहीनता : मपू० : उक्ति०८९।
२६७. (५) : ए : प्रत्ययहीनता ।
२६८. (१,३,४,५,६) : इ प्रत्ययहीनता : पू० : तगारे १५३डी; उ० : संदेश० ७४ ; मपू० : उक्ति०८९।

२६९. (४) : वि :प्रत्ययहीनता ।
२७०. (४,५,६) : तु : प्रत्ययहीनता।
२७१. (४,६) : –हिं।ही : (तुल० मपू० –हिं : उक्ति० ८९।)
२७२. (१,३,६) : ऊ।उं : (तुल० मपू० –उ : उक्ति० ८९)।
२७३. (२) : उव : (वही) ।
२७४. (२,४,६) : –ू :(तुल० मपू०–उ : उक्ति० ८९) ।
२७५. (६) : हूं । हुं
२७६. (३,५,६) : हूं : प० द० : तगारे १५३डी।
२७७. (२) : निरु : प्रत्ययहीनता : (तुल० णिरु : प०द० : तगारे १५३ डी); उ० संदेश० ७४।
२७८. (२,६) : जी।जि : प० द० : तगारे १५३ डी।

अव्यय : संबोधन सूचक

२७९. (५,६) : एक० पुं० : रे : प्रत्ययहीनता : प्राचीन भारतीय आर्य भाषा से प्राप्त : तगारे १५५।
२८०. (६) : एक० पुं० : र : प० : तगारे १५५।
२८१. (५,६) : एक० पुं० : अरे : प्रत्ययहीनता : प०पू०द० : तगारे १५५; मपू० : उक्ति० ८९ ।
२८२. (६) : बहु० पुं० : हो : प्रत्ययहीनता ।

अव्यय : परिमाणसूचक

२८३–२८४. (१,३,६) : अति, सुरु : प्रत्ययहीनता ।
२८५. (१) : मणु, मणु : –ु ।
२८६. (१,५) : विणु : –ु : प०पू०द० : तगारे १५३डी ।

अव्यय : प्रश्न सूचक

२८७. (१,२,५,६) : कि : प्रत्ययहीनता : मपू० : उक्ति० ६६.६।
२८८. (५) : की : ,, : वही
२८९. (६) : कहा : –ा ।

५. रचना का सप्त भाषात्मक रूप

ऊपर के अध्ययन को देखने से ज्ञात हुआ कि कुल २८९ शब्द-रूप रचना में आते हैं। इनमें से १२ विशेषण के हैं। विशेषणों के संबंध में ऊपर कहा गया है कि तीनों विवेचन-ग्रंथों तगारे, संदेश० तथा उक्ति० में उनके विवेचन में विस्तार-वैषम्य है। इसी प्रकार ७८ रूप ऐसे हैं जो उक्त तीन ग्रंथों में नहीं मिलते हैं। इन १२+७८ =९० रूपों को निकाल देने पर विभिन्न अपभ्रंशों और औक्तिक भाषाओं के रूपों की स्थिति रचना में निम्नलिखित है :—

कुल	प०	पू०	द०	उ०	मपू० :
१९९	१०९	५९	७१	७५	१११

अतः स्थूल रूप से कहा जा सकता है कि रचना में सर्वाधिक बाहुल्य प० तथा मपू० के रूपों का है।

विभिन्न अंशों में इन रूपों की स्थिति निम्नलिखित है :—

अंश	कुल रूप	प०	पू०	द०	उ०	मपू०
१	३२	१९	१४	१७	१७	२०
२	४०	२७	१९	२३	२६	२८
३	५०	३८	२२	२८	२५	२७
४	४२	३१	१६	२६	२६	२६
५	७६	४५	३१	३८	३४	५७
६	१२०	७३	४२	४८	५३	६९
७	१४	१०	७	५	८	१०
योग	३७४	२४३	१५१	१८५	१८९	२३७

इस विवरण से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है कि प० तथा मपू० के रूपों का अनुपात रचना में समस्त रूप से परस्पर समान किन्तु अन्यों की अपेक्षा अधिक है। प० के रूपों का बाहुल्य इसलिए भी हो सकता था कि वह एक सर्वमान्य साहित्यिक माध्यम बन गई थी। मपू० की वह स्थिति नहीं थी। वह एक औक्तिक भाषा मात्र थी। इसलिए उसके रूपों के आधिक्य का एक मात्र कारण यही ज्ञात होता है कि रचना मपू० के किसी क्षेत्र में की गई और वहीं की भाषा को रचना की सामान्य भाषा के रूप में ग्रहण किया गया; केवल विभिन्न नखशिखों में रोचकता लाने के लिए नायिकाओं की प्रादेशिकता के अनुसार तत्तत् प्रदेशों की औक्तिक भाषाओं के तत्त्व भी रख दिए गए। एक बात यहाँ यह भी दर्शनीय है कि मपू० के लगभग आधे आए हुए रूप

न प० में पाए गए हैं और न उन अपभ्रंशों में जिनके क्षेत्रों से विभिन्न नखशिखों की नायिकाएँ आई हैं।

प्रथम नखशिख के प्राप्त अंशों में नायिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं आता है। इसमें विभिन्न अपभ्रंशों में प्राप्त व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है : मपू० २०, प० १९, द० १७, उ० १७, पू० १४। इसके जो व्याकरण-रूप किसी अपभ्रंश में नहीं मिलते हैं, वे निम्नलिखित हैं :

संज्ञा कर्ता० (मूल) बहु० पुं० : –ां
संज्ञा अधि० एक० पुं० : – ु
गुण० वि० एक०।बहु०पुं० : – उ । ऊ

ये रूप कदाचित् वर्णित नायिका की औक्तिक भाषा से लिए गए हैं। – ां और – उ । ऊ प्रत्यय पश्चिमी हिन्दी के हैं, इसलिए इस नखशिख की नायिका पश्चिमी हिन्दी प्रदेश की ज्ञात होती है।

द्वितीय नखशिख के प्राप्त अंशों में भी नायिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं आता है। इसमें आये हुए विभिन्न अपभ्रंशों के व्याकरण–रूपों का योग क्रमशः है : मपू० २८, प० २७, उ० २६, द० २३, पू० १९। इसमें आए हुए निम्नलिखित व्याकरण-रूप ऐसे हैं जो किसी अपभ्रंश में नहीं मिलते हैं :

संज्ञा, संबंध०एक०स्त्री० :	(–हं) चि, (–हं) ची
सर्व० द्वि० पु० करण० एक० स्त्री० : तुझ चि:	(–झ) चि ।
सर्व०कर्म(विकृत) तथा वि० बहु० पुं० : जें :	–ें ।
सर्व० तृ० पु० करण० एक० पुं० : तेंहचा :	(–ेंह) चा ।
सर्व० तृ० पु० करण० बहु० पुं० : तेंहचें :	(–ेंह) चें ।
संबंधवाचक वि० एक० स्त्री० : जे :	–े ।
प्रश्नवाचक वि० एक० स्त्री० : चा :	–ा ।
क्रिया, सामान्य वर्त०, तृ० पु० बहु० पुं० :	–उ ।
क्रिया, संभाव० वर्त०, तृ०पु० बहु० पुं० :	–एं ।
क्रिया , सामान्य भवि० तृ० पु० एक० पुं० :	–ई ।

इनमें आए हुए प्रत्यय – चा और उसके विभिन्न रूपों से तथा प्रश्नवाचक वि०एक०पुं० चा से यह प्रकट है कि नखशिख की भाषा मराठी का ही कोई पुराना रूप है। अपने दक्षिणी अपभ्रंश के निरूपण का आधार डॉ० तगारे ने ऐसी अपभ्रंश रचनाओं को बनाया है जो महाराष्ट्र प्रदेश में रची गयी थीं, और ये रूप उन रचनाओं में नहीं आते हैं, इसलिए यह प्रकट है कि तृतीय नखशिख की रचना में कवि ने तत्कालीन औक्तिक मराठी की सहायता ली है।

तृतीय नखशिख के भी प्राप्त अंशों में नायिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं

है। उसमें आने वाले विभिन्न अपभ्रंशों के व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है : प० ३८, द० २८, मपू० २७, उ० २५, पू० २२ । तृतीय नखशिख के ऐसे व्याकरण–रूप जो इनमें नहीं आते हैं, निम्नलिखित हैं :—

संज्ञा, कर्ता० (मूल) बहु ० पुं० :	–उं ।
संज्ञा, संबंध० एक० स्त्री० :	–णी ।
सर्व० प्र० पु० संबंध ० बहु ० पुं० : अम्हाणउं :	–णउं ।
सर्व० तृ० पु० कर्म (विकृत) बहु० पुं०: आनहिं :	–हिं ।
निषेध सूचक अव्यय : ना :	–ा ।

– णी तथा –आणउं प्रत्ययों से यह भाषा पुरानी पश्चिमी राजस्थानी तथा गुजराती के निकट दिखाई पड़ती है। प० में ये रूप नहीं मिलते हैं, इसलिए ऐसा ज्ञात होता है कि तृतीय नखशिख में कवि ने तत्कालीन औक्तिक पुरानी पश्चिमी राजस्थानी और गुजराती के रूपों का पुट देने का प्रयास किया है।

चतुर्थ नखशिख का विषय एक टक्किणी नायिका है, जो उ० अपभ्रंश क्षेत्र की है। इसमें प्राप्त व्याकरण–रूपों का योग क्रमशः है : प० ३१, मपू० २६, द० २६, उ० २६, पू० १६। इस में यह दर्शनीय है कि प० के अनंतर उ० का योग द० तथा मपू० के बराबर ही है।

पंचम नखशिख का विषय एक गौड़ी नायिका है, जो पू० अपभ्रंश क्षेत्र की है। किन्तु इस नखशिख में विभिन्न अपभ्रंशों के व्याकरण–रूपों का योग क्रमशः है : मपू० ५७, प० ४५, द० ३८, उ० ३४, पू० ३१। इस नखशिख में यह दर्शनीय है कि पू० के रूपों का योग सबसे कम है, और सबसे अधिक योग मपू० के रूपों का है।

षष्ठ नखशिख की नायिकाएं मालवी है। इस नखशिख में विभिन्न अपभ्रंशों में पाये जाने वाले व्याकरण–रूपों का योग क्रमशः है: प० ७३, मपू० ६९, उ० ५३, द० ४९, पू० ४३। मालवा की अपभ्रंश को उपर्युक्त विश्लेषण में डॉ० तगारे के आधार पर प० के अंतर्गत रखा गया है, किन्तु यहाँ भी मपू० के रूपों का योग प० के लगभग बराबर ही है, यह दर्शनीय है।

आदि-अंत में विभिन्न अपभ्रंशों के रूपों का योग क्रमशः है : मपू० १०, प० १०, उ० ८, पू० ७, द० ५, जिससे यह संभावना और भी स्पष्ट हो जाती है कि कवि ने रचना की सामान्य भाषा के लिए मपू० के किसी रूप को चुना था।

ऊपर हमने देखा है कि शिलालेख धार में प्राप्त हुआ बताया जाता है, और यहाँ हम देखते हैं कि रचना मपू० के किसी रूप में प्रस्तुत की गई है। हमने यह भी देखा है कि रचना के भौगोलिक तत्त्व उसको दक्षिण कोसल ले जाते हैं और यहाँ हम देखते हैं कि विभिन्न प्रदेशों की नायिकाओं का नखशिख वर्णन करने में उक्त प्रदेशों की बोलियों का व्यवहार अपनी सीमित जानकारी भर करते हुए जहाँ कवि को आवश्यकता होती है वह मपू० तथा प० के रूपों का प्रयोग धड़ल्ले से करता है। पंचम और षष्ठ नखशिख

इसके सबसे ज्वलंत उदाहरण हैं। प० के रूपों का अधिकता से मिलना इस कारण भी संभव है कि वह एक व्यापक साहित्यिक माध्यम के रूप में प्रयुक्त होने लग गई थी। किन्तु मपू० प्रायः औक्तिक भाषा के रूप में ही प्रयुक्त हो रही थी। इसलिये मपू० के रूपों का इतनी ही बहुतायत से मिलना जितनी बहुतायत से प० के मिलते हैं, यह प्रमाणित करता है कि रचना और संभवतः रचयिता का मपू० से अधिक निकट का संबन्ध था। फलतः रचना मूलतः दक्षिण कोसल की ज्ञात होती है, जो वर्णित दो नायिकाओं के मालवी होने तथा कदाचित् धार के राजकुल से उनके संबंधित होने के कारण कभी धार में उत्कीर्ण करके किसी भवन में लगाई गई। इसके विपरीत यदि यह रचना मूलतः मालवा में निर्मित की गई होती, तो इसमें मपू० को इतनी प्रमुखता न प्राप्त होती जितनी उसको हुई है।

इस प्रसंग में यह भी दर्शनीय है कि रचयिता की असाधारण सहानुभूति ही नहीं एक प्रकार से उसका पक्षपात भी मालवी नायिकाओं के साथ है, जिनका नखशिख वह सबसे अधिक बढ़ा-चढ़ा कर शिलाखंड की १८ पंक्तियों में करता है, जब कि शेष प्रदेशों की नायिकाओं के नखशिखों का औसत उसके तिहाई से भी कम केवल ५ पंक्तियों में। हो सकता है कि इसीलिए और भी यह काव्य धार में उत्कीर्ण करा कर किसी मंदिर में लगाया गया हो।

फलतः प्रस्तुत लेखक का मत है कि रचना सामान्य रूप से दक्षिण कोसली में रची गई थी जिसमें नायिकाओं की प्रादेशिकता के अनुसार उनकी औक्तिक बोलियों के कुछ तत्त्व रक्खे गए थे। रचना का आदि-अंत दक्षिण कोसली में है, और नखशिखों में क्रमशः पश्चिमी हिन्दी, मराठी, पुरानी पश्चिमी राजस्थानी अथवा गुजराती, टक्किणी, गौड़ी तथा मालवी के तत्त्व हैं, यही रचना का सप्त भाषात्मक रूप है, जिसकी ओर उसके रचयिता ने

[सा] तहं भासहं जइसी जाणी। (४६)

कह कर संकेत किया है।

राउलबेल
(पाठ)

[१][1][ॐ] नमः सिध (धे) [भ्यः ॥]
रोडे (डें) राउल वेल वखाणा(णी) ।
जइ – – – इ आपणु ज [णी ॥]
जा (जो) जेम्व जाणइ सो तेम्व वखाणइ ।
हासे (सें) तोसे (सें) राजइ राणइ ॥

– – – – – – – – – – – – [।] – – – – – – [२] भा[ल]उ भावइ ॥
आंखिहि काजल तरलउ दीजइ । [आ]छउ तुछउ फूलु– – जइ ॥
अहर तंबोलें मणु मणु रातउ । सोहृ देइ कवि आन ि– – – [॥]
– – – – – – – – – – – – – – [।] – [३] तुम – स तम्वहीं मोहंथि ॥
जाला कांठी गलइ सुहावइ । आनु कि – –इं ताकरि [पां] वइ ॥
एहइ तरुणिहुँ माण्डणु भालउ । जं जसु रूचइ सो – – – – – – – – [॥]
– – – – – – – – – – – – – – [।] – – [४] लो ता – मांडीजइ ॥
रातऊ कंचआ अति सुठु चांगउ । गाढउ वाघउ – – – इ आंगउ ॥
–वुहां पहिरणु भालउ भावइ । तासु सोह कि कछडा पांव [इ ॥]
– – – – – – – – – – – – – – [।] – – – – – – [म] [५] णु मणु – – ॥
विणु आहरणें जो पायेन्हु सोह । आन वनां तहं मोंहि अति कोह ॥
अइ[सी] वेटिया जा घरु आवइ । ताहि कि तूलिम्व [क]ोऊ पांवइ ॥

[॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥]

– – – – – – – – – – – – – [।] – [६] हुं वेस न [ण?] – क देखसि ॥
वलिअहि वाघ लिअहि जे चांगिम्व । ते वानतु को – – वी (?) वागिम्व ॥
– अहि आंतु जें विअइल फूल्लें । अछउ ताउं कि तेंह चें वोल्लें ॥
– – – – – – – – – – – – – – – – [।] – – – – आ [७] छंहि गोह ॥
का[नि]हिं घडिवनहं चि जे रेख । ते ची(चि)न्तवंतहं आनिक ओख ॥
– – कचि कांठी कांठिहि सोहइ । लोकहं ची दिठि मांड चि खोहइ ॥
आंगिहिं ला ि– – – – – – – – [।] – – – – – – – – – – – – – – डा ॥
पडिह [८] कांचू वोडा लाठा । [आ]निकु वानू जो एथु धेठा ॥
आविलु काछडा दढ गाढा । आनिकु जोवण ऊ[ज?]व थाढा ॥
हाथिहिं रीठें ऊजल लान्ह । जो चुडि तागे आविल सान्ह ॥

---

१. कोष्ठकों में दी हुई संख्याएँ शिलालेख की पंक्तियों की हैं जो इस पाठ में उनके प्रारम्भ में दी जा रही हैं ।

--------- पाटी गाढी । जणु काम्वे [९] ---- ली माढी ॥
पाइहिं पाहंसिया निरु चांगा । लोणचि आनि [क] मांडी आंगा ॥
गोल्ले आ[नं]दिअ तुम्नचि देसु । आनिक तेंह चा तो वेस ॥
चा वल भण हुणि तो मेढी झांखइ । ते आपुली गम्वारिम्व आख [१०] इ ॥
अइसी --- तरुणिम्व मांडी । पातली को भाउअ छांडी ॥
--कचि अइसी राउल सो [ही] । देखत तोही मयणुव मोही ॥

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

एहु कानोडउं का इसउ झांखइ । वेसु अम्हाणउं ना जउ देख [११] इ ॥
आउंडउ जो राउ [ल सो] हइ । थइ नउ सो एथु कोचकु न मोहइ ॥
डहरउ आंखिहिं काज [ल] दीनउ । जो जाणइ सो थइ नउ वानउ ॥
करडिम्व अनु कांचडिअउ कानहिं । काइं करेवउ सोहहिं आ [१२] नहिं ॥
गलइ पुलूकी भ[वइ ?] कांठी । कासु तणी साहर इन ढिठी ॥
लांवन्न लांवउ कांचू रात[उ] । कोकु न वेखतु करइ उमातउ ॥
थणहिं सो ऊंचउ किअउ राउल । तरुण। जोवन्त करइ सो वाउल ॥
वाह [१३] डिअउ सो म्वालउ दीहउ । [म्वाल] उ आथि न तहुं जणु चाहउ ॥
[हा]थहिं माठिअउ सुठु सोहहिं । [ते]थु खूता जण सयलइ चाहहिं ॥
पहिरण फरहरें पर सोहइ । राउल दीसतु सउ जण मोहइ ॥
झुणि नेउरा [१४] णी कान सुहावइ । अरो (?) रक--कासु न भावइ ॥
हांसगइ जा चालति अइसी । सा वाखर णहुं राउल कइसी ॥
जहिं घरे अइसी ओलगं पइसइ । तं घरु राउल जइसउं दीसइ ॥

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

[१५] केहा टेल्लिपुतु तुहुं झांखहि । अ ----वु वेहु तुहुं आख[हि] ॥
वेहु एक्कु सो एथ वन्निज्जइ । [जो?] अक्खंदहं हीआ भिज्जइ ॥
अड्डा केह पाहु जो वद्धा । सो प्पर तेहा गोरीं लद्धा ॥
चंद सावाणा टीहा किय्यइ । जें महुं [१६] एक्केणवि मंडिय्यइ ॥
अंघिहिं कय्यल डहरा वित्ता । जो [नि]हालि करि मयणू मत्ता ॥
कंय्यडिअहि सोहहिं वुइ गन्न । म(मं)डन संडन डहि परे अन्न ॥
कंठी कंढि जलाली सोहइ । एहा तेहा सउ जणु मोह [१७] इ ॥
आघूघाडें थणहिं जो कंय्यू । सो सन्नाहु अणंग हो नं -॥
[कं] य्यू विय्ययहिं जे थण दीसहिं । ते निहालि सव वत्थु उवीसहिं ॥
गोरइ अंगि वेरंगा कंय्यू । संझहि जोन्हहि नं संगउं हू ॥
पहिरणु घाघरेंहिं जो केरा । कछ [१८] डा वछडा डहि पर इतरा ॥
सूथना म्रि क --इला प [हि] र णु । पालइं पाखउ धावइ तसु जणु ॥

एहा वेहु सुहावा ठेल्ल । आन्न तु संदा डहि परइ वोल्ल ॥
एही टक्किणि पइसति सोहइ । सा निहालि जणु मल म [१९] ल चाहइ ॥

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

कीस रे वंडिरो टाक तु [वो]ल[सि।] राहू आगें वानतु भूलसि ॥
तंइ की कतहू वेस रे दीठे। जेहर तेहर वानसि घेठे ॥
गौड सुआणु स तइं कत दीठे। ते देखि वेस कि भावंथि मीठे ॥
ते(वे?) [२०] डेन्हु वाघेन्हु केसं ज ल डहिम्ब। खोंपवली एक हु रे---सम्ब ॥
खोंपहि ऊपरं अम्वेअल कइसे। रवि जणि राहूं घेतले जइसे ॥
विठहुल फूल अम्हारे म्वाझथि। ते देखि तरुणे सावइ मूझथि ॥
तूछे फूल तारे मण [२१] हारे। रयणिमुहां जणु गणिए तारे ॥
रे रे वर्व्वर देखु रे तूं चा[हि]। तारि निलाडी सरिसी काहु ॥
भउहीं तु रूरीं देखु वर्व्वर कइसीं। ताहि काम्व करीं धणु अडणीं जइसीं ॥
अरे अरे वर्व्वर देखसि न टीका। चांदहि ऊपर एह [२२] भइ टीका ॥
वेटुला टीका केहर [भा]वइ। मुह ससि ओलगं च - । नावइ ॥
विणु वनवारां अछण नो वारसि। वुद्धि रे वंडिरो आपणी हारसि ॥
कानन्हु पहिले ताडर पात। जणु सोहइं एवं सोह रे पात ॥
गूआ रांगे द [२३] सण रे. राते। आंट कुडीपुत त -- माते ॥
कांठहि मांडणु पा[च?] लर तागु। सो लहि मयणहि एवं भैअल लागु ॥
मासें सोना जालउ कीजइ। मोत्ता सरसो हुतें हू हसीजइ ॥
गंठिआ तागउ गलेहि सो भूस[२४]णु। जो देखि वंडिरो को न[मू?] झइ जणु ।
सूतु तरीअन्हु करउ [जो] हारु। सो देखि हारन्हु भउ अवहारु। [।]
थणहर माझें जो हारु सुतेरउ। सोहन्हु सवन्हु सोए कुज ठेरउ ॥
पारडी आंतरे थणहरु कइसउ। [२५] सरय जलय विचं चांदा जइसउ ॥
सूतेर हारु रोमावलि कलिअ [उ]। जणि गांगहि जलु जउणहि मिलिअउ। [।]
पैहिअल वाही जे चंदहाईं। वोजेर चांदहि ते चंदहाईं ॥
आंगहि मांडणु अंगेर उजालु। कांठी [२६] वेढी वंडिरो आलु ॥
काछां [पैं] ह्लरण केरि ज सोह। आन सराहंत सुणि मोहि अति कोह ॥
वि उढण सेंदूरी सेलवही कीजइ। रूउ देखि तारउ सव जणु खीजइ ॥
धवलर कापड ओढिअल कइसे। मुहससि [२७] जोन्ह पसारेल जइसे ॥
अइसो उवेसु जो गउडिन्हु केरउ। छाडि सो वान त दिठ सवु तोरउ। [।]
जेहर रूचइ तेहर वोलु। तारे वेसहि आथि कि मोलु ॥
अइसी गउडि ज राउलें पइसइ। सो जणु ला[२८]छि मांडेउ दीसइ ॥

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

गौड तुहुं एकु को पनु अउर वर क [रि?]
को तइं सहुं भइं वोलइ।
ज पुणु मालवी उवेसु हि आवंतु
काम्वदेउ जाउं आपणाह हथिआर हु भूलइ।
इहां अम्हार [२९] इ बुभगी खोंप करिउ वाधइ।
तहि सारिखउं कहा इउं आथि एउ कि सी[झ]इ।
खोंपहि ऊपरि सोलडहउ वीनउ वानु तें किसउ भावइ।
जिसउ सिंदूरिअउ रजायसु काम्वदेवह करउ नावइ।
नि [३०] लाडु रतु रूरउ सुपवाणु न सान्ह उंन ऊंचउ।
सो देखिउ आठम्विहि करउ चां[दु] इसउ भावइ।
केर एहु ओडिअउ जूनउ ठेंचउ।
भउंह हुं र वुई तु रूरीहिं सान्हीहिं आडाहं आंखिहिं करइं गुणइं
ज [३१] इसउ काम्व करउ [ध]णुहुं चडावियउ।
निडालि टीकें तु रूरे कीएं तें काम्वह अ-य-
संकरी हि भालिहि करउ काजु पावियउ।
सान्हाहं पुडहं नाकु तु रूरउ सुरेखु।
सोइर वानाहं सवहं ऊतरिअउ [३२] अइसउ करिउ तुहुं (?) लेखु।
आंखिर फाटा तीखा ऊजला तरला ते वानति जीभ इ[सी?] सूझइ।
तइसउ हथिआर पाविउ काम्वदेउ जगही काइं करिसी
अइसउ वृहस्पति ही नउ मू(सू?)झइ।
[३३] आंखिहि र तु रूरउ काजलु वीनउ कइसउ।
जणु चाखुहु करइं भयइं कियउ - - - जिसउ।
पूनिवहि करउ चांदु फाडिउ हरिणु पालइ घालिउ
दुई कपोल जिसा किआ।
ते देख तहं [३४] सवहं तवणाहं
अपांविवे करीं खणुसइं धस धस पडहिं हिआ।
कन्हासहीं कानहीं वा[न?]इ करउ खूटउ वोलु।
कें कें केतउ न खपिअउ एहि जगी(गि?) आथि न मोलु।
तेन्हर पइहिया घडिव[३५]न किसा भावंथि।
[ज]णु पूनिव हि पूनिव हि करा चांद कोडइं तहि करउ
सुहावउ वोलु सुणण का[ज] फेडि उआया नावंथि।
तेहि करइ तलि लईं उपइलें ओठइं सकवि सोह लाधी।
ज वींवी फलहं(?)प[३६]वालाहं असो[अ]पल्लवहं तें तुसिउ विलधी।
समुदाइ कज मुह करी सोभ सजइ
कोह प [ग्रह?] ण उउ ब उपमाउ करइं।

वूधि आपणी अछइ स कूडी वानणी
त।(ि)ह करी करिउ सहीं अवहरहुं।
[३७] तं एकावलि - - इ एक वाधी सइ र इसी भावइ
जणु मुह चंदु ओलग णहं नखत वाल सतावीस
हा - री आई अइसउ नावइ।
थण र पहुला ऊंचा वाटुला पीणा
सोनाह करा मंगल कलस जिसा भा [३८] वहिं।
आनु कि काम्वदेवह कराह घरह
वारि ओड् तास सोह पावहिं।
तिवलिहि मोझि रोमराइ स किसी धरइ।
ज सोहहि करइ पाखइ दुहुं आथहं जूझ तहं निवाडउ करइ।
तहं मांडणु सात [३९] - -उ मुणाणि हुं
मोती हुं करउ एकु जि हारु।
स सोह देख तहं अइसउ भावइ
अणसारउ अ[णसार]उ हुअउ एहु संसारु।
त पुण् जवहीं तें हाथहीं पायहीं पइह्लिआ सोना केरा चूडा।
स देखि [४०] तुम्हा [रा] जे वेस ते सव भावहिं कूडा।
तें रत (त्त)इसी वोड वाही पडि करी पइह्ली ज कांचुली
सइ र आन सोह कवि वहइ।
अरे काम्वदेवइं सनाहु कियउ
त एवं तुम्ह नही छोडि कउ इसउ तिहु [४१] [वन?] ही कहइ॥
पइह्लणहं निरी पइह्लिआह काछडइं सहुं ज सोह
स कि कउण् वेसु पांवइ।
आ - चंग ि - थि वि अरे गौड हो गोल्ला हो
वोलउ जो जसु भावइ॥
तें पुणु - - - - टी एक आवलि।
[४२] - - ी व ताहि करी सोह को पाम्वइ।
जवाध ताह काम्वदूमह आलवालु जइसी भावइ॥
पायहि र रतूपल - जिआ।
जे लोकहिं लाछिहि करउ निवासु भणिउ [सु] णि [आ]॥
- - - - वाटुलाहं ऊजला [४३] [हं]
- - - करी ज - - - ी।
तेइं र सवहीं वेसहं करी ज लाछि स अवहरी॥
कापडहि र करउ ज गोरी तहि सिंदू[री] हि वेसु।
ज साम्वली तहि र पाटणी हि करउ।

आ – मं – – – – – – – – – – – हं।
को स सोभ घर [४४] उ – – – छाय तेइं पर लाधी।
जहिं आवंति रति आपणइ हिअइ अति सुठु खूधी॥
तुम्हइं स – – – ल तुम्हहिं सरिसउ बोलहिं को जूझइ।
म – – – – – – – – – – – – –
आ [४५] नु – – – इ वानइ जो वथु काजह मांझ वूझइ॥
एह इसी सुवेस जहिं आवउ पइसइ
– [रा ?] उलु वूचइ।
अउरु भाणउ को क – – – – हु त – – – – – – रूच [४६] इ [॥]
॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

रोडें राउल वेल वखा [णी।]
[सा]तहं भासहं जइसी जाणी॥
एउ निसुणत – – त – – – – –।
– – – उ [?] हासें तोसें सोइ [॥]
– ी – – – – – – – इ [४७] – – – [।]
ध – – – – – – – – ी – – – – – [॥]

भाषान्तर

[१][1] [ॐ] नमः सिध(द्धे)भ्यः ॥
रोड के द्वारा राउलवेल (राजकुल—विलास) कही गई
-------अपना जानकर।
जो जिस प्रकार जानता है, वह उस प्रकार वर्णन करता है,
राजा और राणा के हास-तोष के लिए।
--------------[।] --------- [२] भला भाता है।
आँखों में काजल तरल दीजिए, अच्छा तुच्छ फूल ------।
अधर तांबूल द्वारा थोड़ा-थोड़ा रक्त हो गया है, [जो] कवि [कहता है]----
अन्य ही शोभा देता है ।
-------------। [३] ------- को मोहते हैं।
(उसके) गले में जालकंठी[2] शोभा देती है, क्या और कोई [आभरण] उसकी---
पाता है ?
तरुणी का मंडन इस प्रकार का भला है कि जिसको रुचे------- [।]
------------- [।]-- [४]-- --मांडिए।
रक्त [वर्ण का]कंचुक अत्यधिक चंगा (अच्छा) है, [और]——अंग गाढ़ा (कस कर)
बंधा हुआ है।
——भला परिधान भाता है, उसकी शोभा क्या कछड़ा पा सकता है ?
----------------- [।]-------[५] कुछ कुछ --।
बिना आभरण के पैरों की जो शोभा है, वहां अन्य जो वर्ण हैं उन से मुझे अत्यन्त क्रोध
होता है।
ऐसी बेटी जिस घर में आवे, उस [घर] को तुल्यता में क्या कोई [घर] पा
सकता है ?
[॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥]
------------- [।]- [६] ------- देखता है।
वलिअ (केश-बन्धन) को बांध लेने की जो चंगिमा (मनोहरता) हो रही है, उसका
वर्णन करते हुए- - -लग रहा है।
[केशों के रूप में] - जो आंत (भयानक) अहि इन विचकिल फूलों के पास हैं,
[अच्छा] हो कि वे तावत् उनसे (केशों से) बोलें।
------------- [।] ------- [७] गोह (योद्धा) हैं ।
[कानों] में धडिवन[3] की जो रेखाएँ हैं, वे चिन्तनशीलों की बांकी ओख (दाह)
[का विषय] हैं।

---

१. कोष्ठकों में दी हुई संख्याएँ शिला लेख की पंक्तियों की हैं।

२. एक जालीदार कंठाभरण।

३—एक कर्णाभरण।

---- कंठ में जो कंठी शोभा देती है, वह लोक की दृष्टि को मंडित कर उसे क्षुब्ध करती है।

अंगों में------ [।] ------------- ।

पटी के [८] सुंदर कंचुक और चादर का जो बांका वर्ण होता है, वह भी यहाँ पर घर्षित है।

[तेरा] आविल (मलिन) कछड़ा दृढ़ और प्रगाढ़ है, [और तेरा] बांका यौवन ---स्तब्ध (गर्विष्ठ) है।

हाथों में रिष्ट उज्ज्वल और लान्ह (छोटे) हैं और उनसे लगे हुए ही जो तागे हैं, वे आविल (मलिन) हैं।

------------गाढ़ी पट्टी है, मानो कामदेव [९]---सन्नाह युक्त है।

[तेरे] निश्चय ही चंगे (भले) पैरों में पादहंसिका[४] है, जिसने अंग में बांका लावण्य मांड रक्खा है।

गोल्ल (गोदावरी क्षेत्र के निवासी) आनंदित [होकर] तुझसे कहते है कि तेरा वेष उनके [वेष] से बांका है।

ऐ हूणि, मेढी (गड़रिया ?) क्या वल भाष कर [तुझे] झंखे ? वह तो आपूर्ण ग्राम्यता [ही] बताता है।

[१०] ऐसी---तरुणता मांडी है, [ऐसी] पातली (पतले शरीर की स्त्री) को, हे भाई, किसने छोड़ा है ?

----राउल (राजभवन) में तू ऐसी शोभित है कि तुझे देखते हुए मदन भी मोहित है।

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

ये कानोड (कर्णाट-उत्कल निवासी) क्या ऐसा है कि झंखें यदि ये हमारे वेष को न देखें ?

[११] राउल, जो तू आपिण्ड [संपूर्ण शरीर से] शोभित हो रही है, यहाँ कोई व्यक्ति नहीं है सो (जो) [तू ही] बता मोहित न हो जाए।

[तेरी] आंखों में जो डहर (अल्प) काजल दिया हुआ है, [कवि को] जो [कुछ] ज्ञात है, वह उसका वर्ण (सवर्ण) नहीं है।

[तेरे] कानों में करडिम[५] और कांचडियां[६] (?) हैं, [अतः] अन्यों (अन्य आभरणों) को शोभा के लिए क्या कर्तव्य (करना) है ?

४—पैरों का एक घुंघरूदार आभूषण।

५—करट या गण्डस्थलों काएकआभरणजोकानोंसेलटका करपहना जाताहै।

६—एक प्रकार का कर्णाभरण (?) ।

[१२] [तेरे] गले में खोखली कंठी भाती है, यह किस की घृष्ठ शृंखला है?
लंबा [तेरा] लांवझ और रक्त [वर्ण का तेरा] कंचुक है; तू [भले ही] न कहे,
वे देखते ही उन्मत्त करते हैं।

ऐ राउल, सो (जो) [तू] अपने स्तनों को ऊंचा किए हुए है, वह देखते हुए तरुणों को
बावला कर देता है।

[१३] [तेरी] जो बाहें हैं, वे मल्ल – भीत (दीवाल) के अवष्टम्भन स्तंभ – के
समान दीर्घ हैं, — — — मानो मल्ल – भीत के अवष्टम्भन स्तंभ – भी उनके
से नहीं हैं।

[तेरे] मृष्ट (मसृण किए हुए) हाथों की सुष्ठु शोभा को वहां पर समस्त भग्नाश जन
चाहते हैं।

[तेरा] परिधान फरहराने पर शोभा देता है, [और] राजभवन में वह [परिधान]
दीखता हुआ सब जनों को मोहित करता है।

[उसकी] नूपुरों की ध्वनि [१४] कानों में सुहाती है, — — — — — — किसको नहीं
भाती है?

जिस हंस-गति से वह इस प्रकार चलती है, वह (हंसगति) वाखर (पक्ष- आधी) भी
राउल [की गति] सी नहीं है।

जब ही (?) घर में ऐसी स्त्री अवलग्नता (सेवा) में प्रवेश करती है, तब घर राउल
(राज-भवन) जैसा दीखता है।

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

[१५] ऐ टेल्लिपुत्र (तिलंगी का पुत्र– तैलंग), तू कैसा है कि तू भी झंखता है?——
देख कि तू भी कहता है,

'[तुममें से] एक भी [ऐसी] देखी तो उसका यहां वर्णन किया जाए [जिसका वर्णन
करते] हुओं के हृदय भीगते (स्निग्ध होते) हैं।

जो किसी प्रकार की बाधाओं के चरण में बंधा, उसने और केवल उस प्रकार के व्यक्ति
ने गोरियों को प्राप्त किया।

चंद्रमा के सवर्ण [कोई पदार्थ] दिनों के लिए भी यदि [निर्मित] किये जाएँ, तो
इन्हें [१६] एक (अकेले) [इसके] मुख से ही बना लिया जाए।

आंखों में हल्का और दीप्त काजल है, जिसे निहार कर मदन भी मत्त [हो रहा] है।
दोनों गण्ड कय्यडियों[७] से शोभा दे रहे हैं, [जिसके कारण] अन्य मंडन-संडन
(आदि ?) दग्ध हो चुके हैं।

७—एक प्रकार का कर्णाभरण।

कंठ में जो जलारी (जल्लार देश की) कंठी शोभित है, वह ऐसे-वैसे सब जनों को मोहत करती है।

[१७] आधे उघाड़े स्तनों पर जो कंचुक है, वह मानो अनंग का सन्नाह हो रहा है।

कंचुक के बीच में जो स्तन दिखाई पड़ते हैं, उन्हें निहार कर [लोग] सब वस्तुओं की उपेक्षा करते हैं।

गोरे अंग पर दोरंगा कंचुक [ऐसा लगता] है, मानो संध्या और ज्योत्स्ना का संगम हुआ है।

घांघरे का जो परिधान है, [१८] [उसको देख कर] इतर कछड़ा और बछड़ा [पछेला] दग्ध हो जाते हैं।

यह परिधान ऐसा है मानों उसका [एक] पक्ष से [दूसरे] पक्ष में दौड़ जाता हो।"

देखो, इस प्रकार के टेल्ल (तिलंगे) के स्वाभाविक वचन हैं, [उसके] अन्य सान्द्र (स्निग्ध) बोल तो दग्ध हो जाते हैं।

[राज-भवन में] प्रवेश करती हुई इस प्रकार की टक्किणी शोभा दे रही है, और इसको निहार कर लोग [आंखें] मल-मल कर [१९] देख रहे हैं।

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

एं वंडिरा (बंदी), तू कैसा है कि तू टक्क की कहता है? ऐ राहु (पलित केश वाले), [इसके] आगे [के अंशों में तू] वर्णन करते हुए भूल रहा है।

तेरे द्वारा क्या नहीं ये वेष देखे गए हैं, अथवा जैसे-तैसे ही, ऐ धृष्ट, [इनका] तू वर्णन कर रहा है?

जो गौड़ सुवर्ण (सुवेश) होते हैं, तेरे द्वारा ये कहां देखे गये? [उन्हें] देखने के अनंतर क्या तुझे [अन्य] वेष मीठे लगते हैं?

[२०] बंधनों (?) से बंधे हुए [उस वेष के] केशों में जो रम्यता होती है, क्या एक भी अन्य वेष की खोंपावली उसकी बराबरी कर पाती है?

खोंप के ऊपर [बंधा हुआ] आमेल (आपीड)[८] कैसा [लगता] है कि मानों राहु के द्वारा गृहीत रवि जैसा हो।

[उसकी] दृष्टि के फूल [जब] हमारे माध्यसथ्य में फूलते (विकसित होते) हैं, उन्हें देख कर समस्त तरुण जन मोहित हो जाते हैं।"

[उसके दृष्टि-पुष्प को देखकर] फूल तुछ हो गए और तारे मन में [२१] हार गए, मानों [इसी कारण] तारे रजनी-मुख गिने जाते हैं।

८—जूड़े के ऊपर बांधी जाने वाली माला अथवा इसी नाम का एक शिरोभूषण।

अरे वर्व्वर [बंदी] तू ध्यान से देख; उसकी ललाटिका के सदृश क्या है?
अरे वर्व्वर [बंदी] तू देख; [उसकी] भौहें कैसी रूरी (सुन्दर) हैं, वे कामदेव के धनुष की अड्डणी जैसी हैं।
अरे अरे वर्व्वर [बंदी] तू [उसके] तिलक को नहीं देखता है? यह [मानो] [२२] चंद्रमा के ऊपर टीका हुई है।
[उसका] वर्तुल टीका किस प्रकार का भाता है कि [मानो] मुख-शशि की अवलग्नता (सेवा) में- - -नमित होता हो।
बिना बनवारे (पनवारे)[९] को दिए तू उसके लिए नव आसन का निवारण कर रहा है, [जिससे] ऐ वंडिरा (बंदी), तू अपनी बुद्धि को हार रहा है।
कानों में [उसने जो] ताड़ के पत्ते पहने हैं,[१०] [वे ऐसे लगते हैं] मानो इस प्रकार शोभा के पत्ते शोभित हों।
गूआ से रंगे हुए [२३] [उसके] दांत [ऐसे] राते (रक्तवर्ण के) हैं कि उसी आंट (द्वेष) से कपर्दिका-पुत्र -- मत्त [हो रहे] हैं।
कंठ में मंडन (आभूषण) पांच लड़ों का [जो] तागा है, उसको प्राप्त करके [मानो] मदन को इस प्रकार भेदक लगा हो।
मास पर (?) सोने की जाली की जाए [तो] मुक्ता के साथ होने पर भी [वह] हंसी जाए।
ग्रथित तागा ही [उसके] गले में भूषण है, [२४] जिसको देख कर, ऐ वंडिरा (बंदी) कौन जन मोहित नहीं होता है?
[उसके गले में] सूत का [बना हुआ] तडितों का जो हार है, उसको देख कर [अन्य प्रकार] के हारों का अपहार (त्याग) हो गया।
[उसके] भारी स्तनों के मध्य जो सूत का हार है, वह [मानो] सबों की शोभाओं के मध्य में स्थविर (वृद्ध) कुज (मंगल) ---- हो।
पारडी (पराद्रिका)[११] के पीछे [उसका] भारी स्तन कैसा है कि [२५] जैसे शरद् के जलद के बीच चंद्रमा हो।
[उसका] सूत का हार रोमावली से [इस प्रकार] कलित हो गया (मिल गया) है कि मानो गंगा का जल यमुना [के जल] में मिल गया हो।
उसकी जो चंद्रहाइयां (चंद्रिकाएँ) उसने पहनी हैं, वे चंद्रहाइयां (चंद्रिकाएँ) द्वितीया के चंद्रमा की [हो रहीं] हैं।

९—वर्णमाला—पान के आकार का एक शिरोभूषण जो मस्तक पर लटकता रहता है।

१०—ताड़ के पत्तों के आकार का एक कर्णाभरण (तरकी ?)।

११—एक प्रकार का बहुत महीन मलमल।

[उसके] अंगों में मंडन [उसके] अंगों का औज्ज्वल्य है और उसकी कंठी का [२६] वृन्त, ऐ वंडिरा (बंदी), [अपनी अवर्णनीयता के कारण] आल (कलंकारोपण) [का कारण] बन गया है।

काछों के पहिनने की जो शोभा है, [उसके समक्ष] अन्यों (अन्य परिधानों) की सराहना होते सुन कर मुझे अति क्रोध [होता है]।

[उसके लिए] दो ओढ़निया सेंदूरी[१२] और सेलदही[१३] की की जाएँ, तो [उसका] रूप देख कर सब जन क्षीण हो जाएँ।

[उसने] जो धवल कपड़ा ओढ़ रखा है, वह कैसा लगता है जैसे मुख-शशि ने [२७] ज्योत्स्ना प्रसारित की हो।

गौड़ीयाओं का क्योंकि ऐसा उद्देश (नाम) है, तब (इसलिए) उस वर्ण को छोड़ कर दिष्ट (कथित) समस्त [वर्णों] को तोड़ डालिए।

[जिसे] जैसा रुचे [वह] वैसा बोले, [किन्तु] उसके वेष का क्या (कोई) मूल्य है?

ऐसी गौड़ी जब राउल [राजभवन] में प्रवेश करती है, [तब] वह [राउल] मानो [२८] लक्ष्मी के द्वारा मंडित दीखता है।"

॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

ऐ गौड़, तू एक [ही भाग्यशाली] है, और मैं होड़ लगाता हूं कि दूसरा और कौन बल

[कर के ?] कौन तुझसे भय में (भय के कारण) बोले ?

[किन्तु] जो फिर मालवीयाएँ हैं, [उनके] उद्देश (नाम) आते ही कामदेव अपने यावत् हथियार भी भूल जाता है,

[मनमें यह कहते हुए] "वे यहां हमारी (हमारे शरीर की) ही दो भागी खोंप [बना] कर छोड़ेंगी।"

उसके सरीखा क्या है इस लोक में [कोई] कि इस प्रकार सीझे (कष्ट झेले) ?

[उनकी] खोंपों के ऊपर जो सौलड़ा दिया हुआ है, उसका वर्ण कैसा भाता है, जैसे वह कामदेव के सिन्दूरित राजादेश को नमस्कार कर रहा हो।

[३०] [उनके] ललाट रक्त [वर्ण के] रूरे [सुन्दर] और सुप्रमाण हैं; वे नीचे या ऊंचे नहीं हैं।

उन्हें देखने पर अष्टमी का चांद ऐसा भाता है कि यह बूढ़े-ठेंचे उत्कल-निवासी का [ललाट] हो।

१२—एक धारीदार कपड़ा।

१३—दक्षिण भारत का एक महीन मलमल।

उनकी दोनों रूरी (सुन्दर) भौंहों की भी आड़ की आंखों की प्रत्यंचा के द्वारा तो
जैसे [३१] काम [देव] ने कर में धनुषों को चढ़ाया हो।
ललाट में तो [उन्होंने] जो रूरे (सुन्दर) तिलक दिए हैं, उन्होंने काम के– – – –
शंकरी (पार्वती) के भाल के कार्य के लिए पाया है।
उनके पुट (संयोग) में आने वाली नाक तो ऐसी रूरी (सुन्दर) और सुरेख
(सुघड़) है कि [उसके वर्ण से] सब वर्णों का सौंदर्य उतर गया है, [३२] ऐसा
किया है तूने भी लेखा।
[उनकी] आंखों की फांकें तीखी, उज्ज्वल और तरल हैं, [और] उनका वर्णन करती
हुई जिह्वा [इस प्रकार ?] क्षुब्ध होती है।
वैसा हथियार पाकर कामदेव जगत् को क्या करेगा, ऐसा बृहस्पति को भी नहीं
सूझता है ।
[३३] रक्त [वर्ण की] आंखों में जो रूरा (सुन्दर) काजल दिया हुआ है, वह
कैसा है, मानों चक्षुओं के भय से– – –जैसा किया हो।
पूर्णिमा के चन्द्रमा को फाड़ कर और हरिण को पक्ष में (अलग) डाल कर
[उसके] दोनों कपोल जैसे [विधाता] ने किए (बनाए) हों।
उन्हें देख कर वहां (३४) सब तरुणों के हृदय [उन्हें] न पाने की खुनस (मानसिक
पीड़ा) के कारण धँस-धँस पड़ते हैं। कानों में के कनवासों (कनपासों)
का वर्णन करने के लिए बोल खूट (कम पड़)
रहा है।
कौन-कौन और कितना नहीं खपे ? इस जगत् में [इनका] मूल्य नहीं है।
उन्हें पहिनने के अनन्तर घडिवन (झुमके?) [३५] कैसे भाते हैं,
मानों पूर्णिमा ही पूर्णिमा के दो चांद उनकी क्रोड़ में उनके स्वाभाविक बोल
सुनने के लिए [अपना] कार्य छोड़ कर समीप आए हुए अपने को नमित
करते हों।
[उनके] नीचे-ऊपर के ओष्ठों ने कवि [कहता है,] वह शोभा प्राप्त की है
जो कुंदरुओं, प्रवालों [३६] और अशोक–पल्लवों से उन्होंने तुष्ट कर ले ली [है]।
[पति से] उनके समुदाय (मिलन) के लिए [उनके] मुख की शोभा सज रही है,
[यदि] कोई भी [उनके] परिधान का हरण करे तो उपमान करूं।
अपनी जो बुद्धि है, वह कूड़ी (अपटु) बाननी (नटी-नर्तकी) है इस कारण
उसको ही त्याग देता हूं।
[३७] [उन्होंने] जो एक एकावली [गले में] – – बाँधी है, वह इस प्रकार
भाती है,
मानो मुखचंद्र की अवलग्नता (सेवा) में नभ में सत्ताईस नक्षत्र- बालाएं

----आई हुईं इस प्रकार नमस्कार करती हों।
[उनके] स्तन प्रभूत, ऊंचे, वर्तुल और पीन हैं,
[वे] सोने के मंगल-कलश जैसे भाते हैं।
[३८] अन्य कि [वे] कामदेव के घटों की [जो] वारि (जल) की ओट में हों,
शोभा पाते हों।
त्रिवली में रोमराजि है, और उसको वे कैसे धारण करती हैं
कि [मानो] शोभा के पक्ष में दो आधों का युद्ध हो [और वह] वहां [उस युद्ध का]
निवारण करती हो।
वहां मंडन सात (?) - [३९] ------
और मोती का एक ही हार है।
उस[की] शोभा देख कर वहां ऐसा लगता है
कि यह संसार असार [ही असार] हो गया है।
तो फिर जब उन्होंने हाथों और पैरों में सोने के चूड़े पहने,
उसे देखकर [४०] तुम्हारे जो वेष हैं, वे सब कूड़ा (बेकार) लगते हैं।
उन्होंने रक्त जैसी चादर और उसी पटी (वस्त्र) की जो कंचुकी पहनी है,
वह और ही शोभा, कवि कहता है, वहन करती है।
अरे, कामदेव ने सन्नाह [धारण] किया है,
तो वह इस प्रकार तुम्हें नहीं छोड़ने को है, ऐसा तीनों [४१] भुवन ही कहता है।
परिधानों के अवशेष को पहन कर काछड़े से जो शोभा [होती] है,
वह [शोभा] क्या कोई [भी] अन्य वेष पाता है?
--अच्छा---दोनों, अरे गौड़ देशवासियो, गोदावरी क्षेत्रवासियो,
बोलो जो जिसे भावे।
उन्होंने फिर----- एक अवली (एकावली)
[४२] ---- उसकी शोभा को कौन पावे?
[उनकी] जवाध (जवार्घ)[१४] कामद्रुम के आलवाल जैसी भाती है।
[उनके] पैरों के द्वारा रक्तोत्पल---जीते जा चुके हैं,
जिन्हें लोक में लक्ष्मी का निवास कहा हुआ सुना गया है।
---- वर्त्तुल और उज्ज्वल
[४३] ---- की ----।

१४—जौ के आकार की सोने की गुरियों की वह माला जो आधी अर्थात् गले में केवल सामने की ओर रहती है।

उन्होंने सब वेषों की जो लक्ष्मी (कान्ति) थी, उसका अपहरण कर लिया।
कपड़े का ही जो गोरी है, उसका सिन्दूरी वेष है।
---------- जो सांवली है, उसका पाटणी का -- है।
---------- ।
कोई उस शोभा को [४४] धारण करो, पर [जान लो कि] उसने छाया [मात्र] प्राप्त की
[कि] जिनके आते ही अपने हृदय में रति अत्यधिक क्षुब्ध हुई।
तुम ही----- तुम्हारे साथ बातों में कौन जूझे (युद्ध करे) ?
अन्य [४५] --- वर्णन करे उनका जो वस्तुएं कार्य में वह [आवश्यक] समझे।
इस प्रकार ऐसी सुवेष जिस [घर] में आकर प्रविष्ट हों,
--वह राउल (राजकुल) कहा जमावे।
और कोई कहे -------- रुचे।
[४६] ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥
रोड के द्वारा [यह] राउलवेल (राजकुल-विलास) कही गई,
और सात भाषाओं की, जैसी उसकी जानी थी ॥
इसे सुनते हुए ---------[।]
---- यह हास-तोष के लिए -[।]
------------[४७]--[।]
-------- ---- --- -[।]

शब्दानुक्रमणी

संख्याएँ शिलालेख की पंक्तियों की हैं।

अइस : वि० (ईदृश)=ऐसा, इस तरह का : अइसी ५, अइसी १०, अइसी १४, अइसी १४, अइसो २७, अइसी २७, अइसउ ३२, अइसउ ३२, अइसउ ३७, अइसउ ३९

अउर : वि० (अपर)=अन्य, दूसरा, तद्भिन्न : अउरु २८, अउरु ४५

अंग : पुं०=(अङ्ग)=शरीर : अंगि १७, अंगेर २५, (दें०आंग)

अंधि : स्त्री० (अक्षि)=आंख, नेत्र : अंधिहिं १६

अक्ख् : सक (आ+ख्या)=कहना, बोलना : अक्खंदहं १५

अछ् : अक : (अस्)=होना : अछउ ६, अछइ ३६

अछण : पुं० (आसन)=बैठने का स्थान : अछण २२

अडणी : स्त्री० (अड्डन)=ढाल, फलक (?) : अडणीं २१

अड्ड : (देशज)= वाधा :अड्डा १५

अणंग : पुं० (अनङ्ग)=कामदेव, मन्मथ : अणंग १७

अणसार : वि० (असार)=सारहीन : अणसारउ ३९, अ [णसार?] उ३९

अति : अ० (अति) : अति ४, अति ५, अति २६, अति ४४

अनु : अ० (अन्यथा)=तथा : अनु ११

अन्न : वि० (अन्य)= दूसरा : अन्न १६

अम्वेअल : पुं० (देशज)= (१) आमेल, आमलेग अथवा आमेलय नाम का शिरोभूषण, (२) जूड़े के ऊपर बांधी जाने वाली माला : अम्वेअल २०

अम्ह : स० (अस्मत्)= हम : अम्हाणउं १०, अम्हारे २०, अम्हारइ २८

अरे : अ० (अरे)=संभाषण का सूचक अव्यय : अरे २१, अरे २१, अरे ४०, अरे ४१

अवहर् : सक० (अप+हृ)=अपहरण करना, छीन लेना, दूर करना : अवहरहुं ३६, अवहरी ४३

अवहार : पुं० (अपहार)=अपहरण, परित्याग : अवहा[रु] २४

असोअ : पुं० (अशोक)=असोअ पल्लवहं ३६

अहर : पुं० (अधर)=ओष्ठ : अह[रु] २

अहि : पुं० (अहि)=सर्प : अहि ६

आअ : वि० (आगत)=आया हुआ : आई ३७

आउंड : (आ+पिण्ड)=शरीर-समेत : आउंडउ ११

आंखि : स्त्री० (अक्षि)=आंख, नेत्र : आंखिहिं २, आंखिहिं ११, आंखिहिं करइं ३०, आंखिर ३२, आंखिहिं ३३

आंग : पुं० (अङ्ग)=शरीर : आंगउ ४, आंगिहिं ७, आंगहिं २५ (दे० अंग)

आंट : स्त्री० (देशज)=द्वेष : आंट २३

आंत : वि० (आन्त)=भयानक : आंतु ६

आंतर : पुं० (अन्तर)=मध्य, भीतर : आंतरे २४
आख् : सक० (आ+ख्या)=कहना, बोलना : आखइ ९, आखहि १५
आग : पुं० (अग्र)=आगे का भाग : आगें १९
आछ् : अक० (अस्)=होना : आछहिं ७
आछ : वि० (अच्छ)=स्वच्छ, निर्मल : आछउ २
आठम्वि : स्त्री० (अष्टमी)=आठवीं तिथि : आठम्विहि करउ ३०
आड : स्त्री० (देशज)=ओट, आड़ : आडाहं ३०
आथि : अ० (अस्ति)=है : आथि १३, आथि २७, आथि २९, आथि ३४
आध : पुं० (अर्ध)=आधा : आधूघाडें १७, आधहं ३८
आन । आन्न : स०, वि० (अन्य)=दूसरा : आन २, आनु ३, आनु ५, आनहिं ११, आन्न १८, आन २६, आनु ३८ [आ] न ४०, आनु (?) ४४
आनंदिअ : वि० (आनंदित)=हर्षित ९
आनिक : वि० (आणिक्क-देशज)=वक्र, बांका :आनिक ७,आनिकु ८, आन्निकु ८, आनिक, ९, आनिक ९
आपण : वि० (आत्म+तण)=स्वीय, स्वकीय : आपणु १, आपणी २२, आपणाह २८, आपणी ३६, आपणइ ४४
आपुल : वि० (आपूर्ण)=पूर्ण,भरपूर : आपुली ९
आल : पुं० (आल)=कलंकारोपण, दोषारोपण : आलु २६
आलवाल : पुं० (आलवाल)=क्यारी, थाला : आलवालु ४२
आव् : सक० (आ+या)=आना, आगमन करना : आवइ ५, आवंतु २८, आवंति ४४, आविउ ४५
आवलि : स्त्री० (आवलि)=पंक्ति, श्रेणी : रोमावलि २५, एक आवलि ४१
आविल : वि० (आविल)=मलिन,अस्वच्छ : आविलु ८, आविलु ८
आहरण : पुं० (आभरण)=भूषण, अलंकार : आहरणे ५
इ : अ० (एव)=ही : इ ३, इ १२, इ १३, इ १७,इ २०, इ २८,इ ३६, इ ३७, इ ४०, इ ४४
इउं : अ० (इओ < इतस्)=इस लोक में, यहां :इउं २९
इतर : वि० (इतर)=अन्य,दूसरा : इतरा १८
इन : सर्व० (एतत्) : यह : इन १२
इस : वि० (ईदृश)=ऐसा :इसउ १०, इसउ ३०, इसी ३७, इसी ४० इसउ ४०, इसी ४५
इहां : अ० (इह)=यहां, इस जगह : इहां २८
उआय : वि० (उपागत)=समीप में आया हुआ : उआया ३५
उंन : वि० (ऊन)=न्यून, हीन : उंन ३०
उघाड् : वि० (उद्घाट)=खुला हुआ, अनाच्छादित : आधूघाडे १७

उजाल : पुं० (औज्ज्वल्य ?) = उज्ज्वलता : उजालु २५

उढण : पुं० (ओड्ढण – देशज) = उत्तरीय, ओढनी : उढणु २६

उपइल : वि० (उत्पतित) = ऊंचा, उन्नत, ऊपरका : उपइलें ३५

उपमान : पुं० : उपमानु ३६

उमात : वि० (उम्मत्त < उन्मत्त) = उन्मादयुक्त : उमातउ १२

उवेस : पुं० (उद्देस < उद्देश) = नाम–निर्देश–पूर्वक वस्तु–निरूपण : उवेसु २७, उवेसु २८

ऊंच : वि० (उच्च) = ऊंचा : ऊंचउ १२, ऊंचउ ३०, ऊंचा ३७

ऊजल : वि० (उज्ज्वल) = निर्मल, स्वच्छ : ऊजल ८, ऊजला ३२, ऊजलाहं ४२

ऊतर् : अक० (अव + तृ) = उतरना, नीचे नाआ : ऊतरिअउ ३१

ऊपर : अ० (उपरि) = ऊपर : ऊपरं २०, ऊपर २१, ऊपरि २९

ए : अ० (एव) = ही : सोए २४

एअ : स० (एतत्) = यह : एउ २९, एउ ४६

एक : वि० (एक) = एक : एक २०, एकु २८, एकावलि, ३७, एक ३७, एकु ३९, एकआवलि ४१ (दे० एक्क)

एक्क : वि० (एक) = एक : एक्क १५, एक्केण १६, (दे० एक)

एथु : अ० (एत्थ < अत्र) = यहाँ, यहाँ पर : एथु ८, एथु कु११; एथु १५

एवं : अ० (एवं) : एवं २२, एवं २३, एवं ४०

एह : वि० (ईदृक्) = इस प्रकार का या इसके जैसा : एहइ ३, एहा १६, एहा १८, एही १८, एह ४५

एह : वि०। स० (एतद्) = यह : एहु १०, एह २१, एहु ३०, एंहि ३४, एहु ३९

ओख : पुं० (ओष) = दाह : ओख ७

ओठ : पुं० (ओष्ठ) = होठ : ओठइं ३५

ओड : स्त्री० (देशज) = ओट, आड़ : ओडु ३८

ओडिअ : वि० (ओड्डिअ < ओड्रीय) = उत्कल देशीय : ओडिअ ३०

ओढ् : सक० (देशज) = ओढ़ना : ओढिअल २६

ओलग : स्त्री० (दे० ओलग्गा) = सेवा, चाकरी, भक्ति : ओलगं १४ ओलगं २२, ओलगं ३७

कइस : वि० (कीदृश) = कैसा : कइसी १४, कइसे २०, कइसीं २१, कइसउ २४, कइसे २६, कइसउ ३३

कउण : स० (कः + पुनः ?) = कौन । कउणू ४१,

कंचुअ : पुं० (कञ्चुक) = चोली : कंचुआ ४ (दे० कंच्यू)

कंठ : पुं० (कण्ठ) = गला : कंठि १६

कंठी : स्त्री० (कण्ठिका)=गले का एक आभरण : कंठी १६
कंयूयडिअ : स्त्री० (देशज)=कान का एक आभरण : कंयूयडिअहि १६ (तुल० 'कांचडिअ')
कंयय : पुं० (कञ्चुक)=चोली : कंयूयू १७, कंय्यू १७
कछड़ा : पुं० (कक्षा)=एक प्रकार का पहनावा : कछडा ४, कछडा १७
कज : पुं० (कार्य)=काज : कज ३६
कत : अ० (कुत्र)=कहां : कतहूं १९, कत १९
कनवास : पुं० (कर्ण+पार्श्व)=कान का एक आभरण : कनवासहीं ३४
कपोल : पुं० (कपोल)=गाल : कपोल ३३
कय्यल : न० (कज्जल)=काजल : कय्यलु १६
कर् : सक० (कृ)=करना : करेवउ ११, करइ १२, करइ १२, करि १६, क[रि ?] २८, करि २९, कीए ३१, करिउ ३२, करिसी ३२, करिउ ३६, करहुं ३६, करइ ३८
कर : पुं० (कर)=हाथ : करउ २९, करउ ३१
करडिम्व : (करट+इमा)=कानों में पहना जाने वाला एक आभरण (करट अर्थात् गण्डस्थल पर लटकते रहने के कारण जिसका यह नाम पड़ा होगा) : करडिम्व ११
कलस : पुं० (कलश)=घड़ा : कलस ३७
अलिअ : वि० (कलित)=युक्त, सहित : कलिअउ २५
कवि : पुं० (कवि)=कविता करने वाला : कवि २, कवि ३५, कवि ४०
कह : सक० (कथ्य)=कहना, बोलना : कहइ ४१
कहा : अ० (कथम्)=क्या : कहा २९
का।काइं : अ० (किम्?)=क्या : का १०, काइं, ११, कासुतणी १२, कासु १४, काइ ३२
कांचिडअ : स्त्री० (देशज)=एक कर्णाभरण : कांचडिअउ ११ (तुल० कंयूयडिअ)
कांचुली : स्त्री० (कञ्चुलिका)=चोली : कांचुली ४०
कांचू।काचू : पुं० (कञ्चुक)=चोली : काचू ८, कांचू १२
कांठ : पुं० (कण्ठ)=गला : कांठिहि ७, कांठहि २३
कांठी : स्त्री० (कण्ठिका)=गले का एक आभरण : कांठी ३, कांठी ७, कांठी १२, कांठी २५
काछ : स्त्री० (कक्षा)=कमर पर बांधने का एक वस्त्र : काछां २६
काछडा : पुं० (कक्षा)=काछा : काछडा ८, काछडइं ४१
काज : पुं० (कार्य)=काज : काजु ३१, काज ३६, काजह ४५
काजल : पुं० (कज्जल)=काजल : काजल २, काज[लु] : ११, काजलु ३३,
कान : पुं० (कर्ण)=कान : [कानि]हिं ७, कार्नाहि ११, कान १४, कानन्हु २२, कानहीं ३४

खप् : अक० (क्षर्) = नष्ट होना : खपिअउ ३४
खीज् : अक० (खिज्ज < खिद्) = खेद करना, उद्विग्न होना, क्षुभित होना। खीजइ २६
खूझ् : अक० (क्षुभ्) = क्षोभ पाना, क्षुभित ोना : खूझइ ३२
खूट् : अक० (खुट्ट-देशज) = खूटना, कम पड़ना : खूटउ ३४
खूत : वि० (खुत्त-देशज) = भग्नाश : खूता १३
खूध : वि० (क्षुब्ध) = क्षोभ प्राप्त, घबड़ाया हुआ : घूधी ४४
खोंप . स्त्री० (देशज) = सिर के बाल : खोंपवली २०, खोंपहिं ऊपरं, २० खोंप २९, खोपहिं ऊपरि २९,
खोह् : सक० (क्षोभय्) = विचविलत करना, धैर्य से च्युत करना : खाहइ ७
गइ : स्त्री० (गति) = चाल : गइ १४
गउडि : स्त्री० (गौडीया) = गौड़ निवाविनी : गउडिन्हु केरउ २८ गउडि २७
गंठिअ : वि० (ग्रथित) = गूँथा हुआ : गंठिआ २३
गण् : सक० (गणय्) = गिनना, गिनती करना : गणिए २१
गन्न : पुं० (गण्ड) = गाल, कपोल : गन्न १६
गम्वारिम्व : स्त्री० (ग्राम + पाल + इमा) = ग्रामीणता, ग्राम्यता : गम्वारिम्व ९
गल : पु० (गल) = गला, ग्रीवा, कण्ठ : गलइ ३, गलइ १२ गलहि २३
गांग : स्त्री० (गङ्गा) = गंगा नदी : गांगहि २५
गाढ : वि० (गाढ) = निबिड़, सान्द्र, मजबूत, दृढ़ : गाढउ ५४ गाढा ८, गाढी ८
गुण : पुं० (गुण) = प्रत्यंचा, धनुष का रोदा : गुणइं ३
गूआ : पुं० (गुवाक) = एक प्रकार की सुपारी : गूआ २२
गोर : पुं० (गौर) = शुक्ल वर्ण : गोरी १५, गोरइ १७, गोरी ४३
गोल्ल : पुं० (गौल्य) = गोदावरी क्षेत्र का निवासी : गोल्ले ९, गोल्ला ४२
गोह : पुं० (देशज) = ग्राम प्रमुख, योद्धा, पुरुष : गोहा ६
गौड : पुं० (गौड) = बंगाल का एक भाग अथवा उसका निवासी : गौड १९, गौड २८, गौड ४१
घर : पुं० (घड < घट?) = घर, मकान : घरु ५, घरु १४, घरे १४
घर : पुल० (घड < घट) = घड़ा : घरइ ३८
घाघर : पुं० (घग्घर-देशज) = लंहगा : घाघरेंहि केरा १७
घाल् : सक० (घल्ल-देशज) = डालना, फेंकना : घालिउ ३३
घेतल : वि० (गृहीत) = पकड़ा हुआ : घुतले २०
चंद : पुं० (चन्द्र) = चन्द्रमा : चंद १५ चंद ३७
चंदहाई : स्त्री० (चन्द्र + भाविका ?) = चन्द्रिका : चदहाई २५, चंदहमई २५
चडाव् : सक० (देशज) = चढ़ाना : चडावियउ ३१
चाखु : पुं० (चक्षुष्) = आंख, नेत्र : चाखुहु करइं ३३

चांग : वि० (चंग-देशज) = सुंदर, मनोहर, रम्य: चांगउ ४, चांगिम्व ६, चांगा ९

चांद : पुं० (चन्द्र) = चंद्रमा : चांदहि २१, चांदा २५, चांदहि २५, चां (दु) ३० चांदु ३३, चांद ३५

चाल् : अक० (चल्) = चलना, गमन करना : चालति १४

चाह् : सक० (देशज) = देखना : चाहउ १३, चाहंहि १३ चाहइ १८, चा (हि) २१

चीन्तवंत: वि० (चिन्तावत्) = चिंतापर : चिन्तवंतहं ७

चूड : पुं० (देशज) = हाथों या पैरों में पहना जाने वाला वलय : चूडा ३९

छांड् : सक (छंड—देशज) = छोड़ना : छाडी १०,

छाय : स्त्री० (छाया) = छाया : छाय ४३

छोड् : सक० (छोटय्) = मुक्त करना : छोडि कउ ४०

ज : सर्व० वि०: (या) = जो : जसु ३, १४, जे १७, जे २५, ज० २०, ज २६, ज ४०, जसु ४१, ज ४१, जे ४२, ज ४३, ज ४३, ज ४३ जहि ४४ जहि ४५ (दे० 'ज, जे')

ज : अ० (जं < यत्) = कि : ज २८, ज ३५, ज ३८ (दे० जं)

ज : अ० (यदा) = जब : जहि १४, ज २७

जइस : वि० (यादृश) = जैसा, जिस प्रकार का : जइसउं १४ जइसे २०, जइसी २१, जइसउ २५, जइसे २७, जइसउ ३०, जइसी ४२, जइसी ४६

जउ : अ० (यदि) = यदि : जउ १०

जउण : स्त्री० (यमुना) = यमुना नदी : जउ़णहि २५

जं : अ० (यत्) = कि : जं ३

जग : पुं० (जगत्) = संसार : जगहीं ३२ , जगी (जगि ?) ३४

जण : पुं० (जन) = मनुष्य, लोग : जणु १३, जणु १३, जणु १३, जणु १६, जणु १८, जणु १८, जणु २४, जणु २६

जणि : अ० (देशज ?) = इव, मानो : जणि २०, जणि २५

जणु : अ० (देशज ?) = इव, मानो : जणु ८, जणु २१, जणु २२, जणु २७, जणु ३३, जणु ३५, जणु ३७

जल : पुं० (जल) = पानी : जल २५

जलय : पुं० (जलद) = मेघ : जलय २५

जलाल : पुं० (जल्लार) = एक अनार्य देश : जलाली १६

जव : अ० (यदा) = जब : जबहीं ३९

जवाध : पुं० (यवार्ध) = कण्ठ का एक आभरण, एक प्रकार का जवाहार : जवाध ४२

जा : वि० (यत्) = जो : जा ५, जा १४

जाउं : वि० (यावत्) = जितने भी : जाउं २८

जाण् : सक० (जा) = जानना : जाणइ १, जाणइ, ११ जाणी ४६
जाल : पुं० (जाल) = जाली : जाला कांठी ३, जालउ २३
जि : अ० (एव) = ही : जि ३९ (तुल० जी)
जिअ : वि० (जित) = जीता हुआ, पराभूत : जिआ ४२
जिस : वि० (यादृश) = जैसा, जिस प्रकार का : जिसउ २, जिसउ ३३, जिसा ३३, जिसा २७ (तुल० जइस)

जी : अ० (एव) = ही : जी ८ (तुल० जि)
जीभ : स्त्री० (जिह्वा) = जीभ, रसना : जीभ ३२
जूझ् : अक० (जुझ्झ < युध्) = लड़ना, लड़ाई करना : जूझइ ४४, १८,
जूझ : न० (युद्ध) = लड़ाई, संग्राम : जूझ ३८
जून : वि० (जुण्ण < जीर्ण) = बुड्ढा, पुराना : जूनउ ३०
जे : वि० (यः) = जो : जे ६, जे ७, (तुल० जे, जो)
जें : वि० बहु० (इमे) = ये : जें ६, १५
जेम्व : अ० (यथा ?) = जिस प्रकार : जेम्व १
जेह : वि० (यादृश) = जैसा : जेहर १९ , जेहर २७
जो : वि०। सर्व० (यः) = जो : जो ५, जो ९, जो ११, जो १५, जो १६, जो १७, जो १७, जो २४, जो ४१, जो ३५ (तुल० ज)

जो : अ० (यतः) = क्योंकि : जो ११, जो २७
जोव् : सक० (जोअ-देशज) = देखना : जोवन्त १२
जोवण : पुं० (यौवन) = तरुणता : जोवणु ७,
जोन्ह : स्त्री० (ज्योत्स्ना) = चंद्र-प्रकाश : जोन्हहि १७, जोन्ह २७
झांख् : सक० (देशज) = उपालंभ देना, अथवा अक० = संतप्त होना, निःश्वास लेना : झांखइ ९, झांखइ १०, झांखहि १५

झुणि : पुं० (ध्वनि) = शब्द, आवाज़ : झुणि १३
टक्क : पुं० (टक्क) = देश-विशेष : टक्किणि १८ (दे० टाक)
टाक : पुं० (टक्क) = देश-विशेष : टाक १९ (दे० टक्क)
टीका : पुं० (देशज) = तिलक : टीका २१, टीका २२, टीका २२, टीके ३१
टीह : पुं० (दीह < दिवस) = दिन : टीहा १५,
टेल्ल : पुं० (अप०) = त्रिलिंग-निवासी, तिलंगा : टेल्लि १५, टेल्ल १८
ठेंच : वि० (देशज) = अपाहिज : ठेंचउ ३०
डह् : अक० (दह्) = जलना : डहि १६, डहि १८, डहि १८,
डहर : वि० (देशज) = लघु, छोटा, क्षुद्र : डहरउ ११, [ड] हरा १६,
ढिठ : वि० धृष्ट = ढीठ : ढिठी १२
णवि : अ० (न) = नहीं १६

णह : पुं० (नभस्) = आकाश ; गगन : णहूं ३७
णहुं : अ० (णहि < नहि) = नहीं : णहुं १४
त : स० (तत्) = वह : तसु १८, तहि सारिखउ २९, तहि करउ ३६, तहि ४३, तहिर ४३
त : अ० (तु) = तो : त २७, त ३६, त ३९, त ४०
तइस : वि० (तादृश) = वैसा, उस तरह का : तइसइ ३२
तं : अ० (तदा) = तब : तं १४
तंबोल : पुं० (ताम्बूल) = पान : तंबोलें २
तरल : वि० (तरल) = चंचल, चपल : तरल ३२, तरला, ३२
तरीअ : स्त्री० (तडिआ < तडित) = बिजली : तरीअवन्हु कर २४
तरुण : वि० (तरुण) = जवान : तरुणिहुं ३, तरुणां १२ तरुणिम्व १०, तरुणे २०, तरुणाई ३४,
तल : पुं० (तल) = अधोभाग : तलि लईं ३५
तहं : अ० (तत्र) = वहां : तहं ५, तहं ३३, तहं ३८, तहं ३८ तहं ३९, तहं ४६
तह : वि० (तथा) = उस प्रकार का ; : तहुं १३,
ता : स० (तद्) = वह : ताकरि ३, तासु ४, ताहि ५, तारि २१, ताहि २१, तारउ २५, तारे २७, तास ३८, ताहकरी ३६, ताह ४२, ताहि करी ४२
ताउं : अ० (तावत्) = उस समय तक : ताउं ६
ताग : न० (तग्ग-देशज) = धागा : तागे ८, तागु २३, तागउ २३
ताड : पुं० (ताल) = ताड़ : ताडर २२,
तारअ : पुं० (तारक) = ग्रह-नक्षत्र : तारे २०, तारे २१
तिवलि : स्त्री० (त्रिवलि) = नाभि के पास उदर ही की तीन रेखाएं : तिवलिहिं माझि ३८
तिहुवन : पुं० (त्रिभुवन) = आकाश-पाताल-मर्त्यलोक : तिहु [वन?] ४०
तीख : वि० (तिक्ख < तीक्ष्ण): पैना, तेज : तीखा ३२
तु : अ० (तु) = तो : तु ३, तु १८, तु ३१, तु ३०, तु ३१, तु ३१,
तु।तूं : सं० (त्वम्) = तुम : तुझचि ९ तुहुं १५, तुहुं १५, तु [हुं] १९, तंइं १९, तइं १९, तूं २१, तइं सहुं २८, तुहुं २८, तुहुं ३२,
तुछ : वि० (तुच्छ) = अल्प : तुछइ २
तुम्ह : सर्व० (त्वम्) = तुम : तुम्हा [रा] ४०, तुम्ह ४०, तुम्हइं ४४, तुम्हहिं सरिसउ ४४,
तूछ् : तुच्छ होना : तूछे २०
तूलिम्व : स्त्री० (तुल्य, + इमा) = समानता , सरीखापन : तूलिम्व ५
तूस् : सक० (तोषय्) = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना : तूसिउ ३६

तोतें : सर्व० बहु० (ते) = वेः ते ६, तेंहचें ७६, ते ७ तेंहचा ९, ते ९, ते १७, ते १९, ते २०, ते २५, तें २९, तें ३१, ते ३२, ते ३३, तेन्हर ३४, तेहि करइ ३५, तें ३६, तें ३९, ते ४०, तें ४०, तें ४१, तेंहर ४३

तेथु : अ० (तत्र) = वहाँ : तेथु १३ तेइं ४४, (दे० ता)

तेम्व : अ० (देशज) = उस प्रकार : तेम्व १

तेह : वि० (तादृश) = उसके जैसा, वैसा : तेहा १५, तेहा १६, तेहर १९, तेहर २७

तो : सर्व० (त्वम्) = तुम : तो ९, तो (?) ९, तोही १०

तोर : सक० (तोड<तुड्) = तोड़ना : तोरउ २७

तोस : पुं० (तोष) = संतोष : तोसें ४६

थ् : अक० (अस्) = होना : थइ ११, थइ ११

थण : पुं० (स्तन) = कुच : थर्णाहि १२, थर्णाहि १७, थण १७, थणहरु २४, थणहरु २४, थण ३७

थाढ : वि० (थड्ढ < स्तब्ध) = निश्चल, अभियानी, गर्वीला : थाढा ८,

दढ : वि० (दृढ) = मजबूत, बलवान, पोढा : दढ ८

दसण : पु० (दशन) = दाँत : दसण २२

दिठ : वि० (दे० दीठ)

दिठ : वि० (दिष्ट) = कथित, प्रतिपादित : दिठ २७

दिठहुल : पुं० (दृष्टि + फुल्ल) = दृष्टि का पुष्प : दिठहुल २०

दिठि : स्त्री० (दृष्टि) = दृष्टि, नजर : दीठि ७

दित्त : वि० (दीप्त) = प्रकाशित, कांतियुक्त, चमकीला : दित्ता १६

दीज् : सक० (दिज्ज–प्रा०) देना : दीजइ

दीठ : वि० (दृष्ट) = देखा हुआ : दीठे १९, दीठे १९

दीन : वि० (दिण्ण < दत्त) = दिया हुआ : दीनउ ११, दीनउ २९, दीनउ ३३

दीस् : अक० (दृश्) = दिखाई पड़ना : दीसतु १३, दीसइ १४, दीसहिं १७ दीसइ २८

दीह : वि० (दीर्घ) = बड़ा : दीहउ १३

दु : वि० (द्वि) = दो : दुभगी २९, दुहुं १५

दुइ। दुई : वि० (द्वि) = दो : दुइ १६, दुई ३०, दुई ३३

द्रूम : पु० (द्रुम) = वृक्ष : कामद्रूम ४२

दे : सक० (दा) = देना : देइ २ ४९

देख् : सक० (दृश्) = देखना : देखसि ६, देखत १०, देखइं १०, देखतु १२ देखि १९, देखि २०, देखु २१, देखु २१, देखसि २१, देखि २४, देखि २४ देखि २६, देखिउ ३०, देख ३३, देख ३६, देखि [उ ?] ३९

देस् : सक० (देशय्) = कहना : देसु ९
धडिवन : पुं० (देशज) = कान का एक आभरण : धडिवनहंचि ७, धडिवन ३४
धणु : पुं० (धनुष) = धनुष : धणु २१, धणुहुं ३१
धर् : सक० (धृ) = धारण करना, पकड़ना : धरइ ३८ ध[र]उ ४३
धवल : वि० (धवल) = श्वेत : धवलर २६
धस् : अक० (धस्) = धसना, नीचे जाना : धस ३४, धस ३४
धाव् : अक० (धाव्) = दौड़ना : धावइ १८
धेठ : वि० (धृष्ट) = ढीठ : धेठा ८, धेठे १९
न : अ० (न) = नहीं : न ११, न १२, न १३, न १४, न २१, न २४, न ३०, न ३४ (दे० 'नहीं' तथा 'ना')
नउ : स० (अप० नउ) = कोई नहीं : नउ ११, नउ ११
नउ : अ० (अप० णं) = इव : मानो ३२
नं : अ० (अप० णं) = इव, मानो : नं १७, नं १७
नखत : पुं० (नक्षत्र) = ज्योतिष्क-विशेष : नखत ३७
नही : अ० (नहि) = नहीं : नहीं ४० (दे० न तथा ना)
ना : अ० (न) = नहीं : ना ११, ना ३१ (दे० न, नहीं)
नाक : पु० (णक्क-देशज) = नाक, नासिका : नाकु ३१
नाव् : सक० (नम्) = नमन करना, प्रणाम करना : नावइ २२, मावइ २९ नावंथि ३५, नावइ ३७
निडाल : न० (णिलाड < ललाट) = भाल : निडालि ३१ (दे० निलाड)
निरी : वि० (णिरिअ-देशज) = अवशिष्ट : निरी ४०
निरु : अ० (णिरु-अप०) = निश्चित : निरु ९
निलाड : न० (णिलाड < ललाट) = भाल : निलाडु २९ (दे० निडाल)
निलाडी : स्त्री० (ललाटिका) = ललाट पर पहना जाने वाला एक आभरण : निलाडी २१
निवाड . पुं० (निपात) = विनाश : निवाडउ ३८
निवास : पुं० (निवास) = रहने का स्थान : निवास ४२
निसुण् : सक० (नि + श्रु) = सुनना, श्रवण करना : निसुण–४६
निहाल् : सक० (णिभाल < नि + भालय्) = देखना, निरीक्षण करना, [नि]हालि १६, निहालि १७, निहालि १८
नेउर : न० (नूपुर) = स्त्रियों के पैरों का एक आभरण : नेउराणी १३
नो : वि० (नव) = नया : नो २२
पइस् : सक० (पविस < प्रविश्) = प्रवेश करना : पइसइ १४, पइसति १९, पइसइ २७, पइसइ ४५

पइह्ल : सक० (पहिर<परि+धा)=पहनना : पइह्लिया ३४, पइह्लिआ ३९, पइह्लो ४०, पइह्लिआ ४१

पइह्लण : पुं० (परिधान)=पहनावा : पइह्लणह ४१

पड् : अक० (पत्)=पड़ना : पडहिं ३४ (दे० पर्)

पडि : स्त्री० (पटी)=वस्त्र, कपड़ा : पडिह, ७ पडि करी ४०

पनु : पुं० (पण)=शर्त, होड़ : पनु २८

पयह्लण : पुं० (परिधान)=पहनावा : प [यह्ल] णु ३६ (दे० पइह्लण)

पर् : अक० (पत्)=पड़ना : परे १५, पर १८, परइ १८ (दे० पड्)

पर : अ० (परम्)=उपरांत, परन्तु : पर १३, पर ४४

पर : वि० (पर)=केवल, मात्र : पर १५

पल्लव : पुं० (पल्लव)=किशलय, पत्ता : पल्लवहं ३६

पवाण : पुं० (प्रमाण)=सही, ठीक, सच्चा : सुपवाणु ३०

पवाल : पुं० (प्रवाल)=मूंगा, विद्रुम : पवालाहं ३५

पसार् : सक० (प्र+सारय्)=फैलाना : पसारेल २७

पहिरण : पुं० (परिधान)=पहनावा : पहिरणु ४, पहिरणु १३. पहिरणु १७, प[हि]र णु १८

पह्ल : सक० (परि+धा)=पहनना : पहिले २२,

पहुल : वि० (पहुत्त<प्रभूत)=प्रचुर : पहुला ३७

पा : पुं० (पाद)=चरण : पाहु १५

पाआ।पाय : पुं० (पाद)=चरण : पायेन्हु ५, पाइंहि ९, पायहीं ३९, पायहीं ४२ (दे० पा)

पाच : त्रि० (पञ्चन्)=पांच : पाच ल र २३

पांव : सक० (पाम<प्र+आप्). प्राप्ति करना : [पा] वइ ३, पांवइ ४, पावइ ५, पांवियउ ३१, पांविउ ३२, अपांविवेकरी ३४, पांवहि ३८, पांवइ ४१ (दे० पाम्व्)

पाख : पुं० (पक्ख<पक्ष)=ओर, तरफ : पाखइं १८, पाखउ १८, पाखइ ३३, पाखइं ३८

पाटण : गुजरात का नगर-विशेष : पाटणी ४३

पाटी : स्त्री० (पट्टिका)=पट्टी : पाटी ८,

पात : पुं० (पत्र)=पत्ता, पर्ण : पात २२, पात २२

पातल : वि० (पत्तल-देशज)=पतला, कृश : पातली १०

पाम्व् : सक० (पाम<प्र+आप्)=प्राप्त करना : पाम्वइ ४२ (दे० पांव)

पारडी : न० (परार्द्रिका)=एक प्रकार का महीन वस्त्र : पारडी २४

मंड् : सक० (मण्ड्) = भूषित करना : मंडियइ १६
मंडन : न० (मण्डन) = भूषण, भूषा : मंडन १६
मण : पुं० (मनस्) = मन : मण २०
मण : अ० (मणयं < मनाग्) = थोड़ा, अल्प : मणु २, मणु २, [म]णु ५, मणु ५,
मत्त : वि० (मत्त) = मद-युक्त, मतवाला : मत्ता १६
मयण : पुं० (मदन) = कन्दर्प, कामदेव : मयणुव १०, मयणू १६, मयणहि २३
मल् : सक० (मद्द < मृद्) = मींजना, मसलना, मलना : मल १८, मल १८
मांड् : सक० (मण्ड्) = भूषित करना : मांड ७, मांडी ९, मांडी १०, मांडेउ २८
मांडण : न० (मण्डन) = भूषण, भूषा : मांडणु २३, मांडणु २५, मांडणु ३८ (दे० 'माण्डण')
मांझ : न० (मध्य) = बीच : मांझें २४, मांझि ३८, मांझु ४५
माठिअ : वि० (मृष्ट) = मसृण या चिकना किया हुआ : माठिअउ १३
माठी : वि० (माठिअ < माठित) = सन्नाहयुक्त, वर्मितः माठी ९
माण्डण : न० (मण्डन) = भूषण, भूषा : मा[ण्डणु] २, माण्डणु ३, (दे० मांडण)
मात : वि० (मत्त) = मदयुक्त, मतवाला : मातें २३,
मालव : पुं० (मालव) = प्रसिद्ध प्रदेश-विशेष : मालवी २८
मास : पुं० (माष) = उड़द (?) : मासें २३
मिल् : अक० (मिल्) = मिलना : मिलिअउ २५
मीठ : वि० (मिष्ट) = मीठा, मधुर : मीठे १९
मुह : पुं० (मुख) = मुँह : मुहुं १५, मुहां २१, मुहससि २२, मुहससि २६, मुहकरी ३६, मुह ३७
मूझ् : अक० (मुज्झ < मुह्) = मोहित होना : मूझंथि २०, [मू] झइ २४
मेढी : पुं० : (मेढ्रिक) = गड़रिया, जाति-विशेष : मेढी ९
मो : = मुझ- : मोहिं ५, मोहि २६
मोती : पुं० (मोत्तिअ < मौक्तिक) = मुक्ता, मोती : मोती हुं करउ ३९
मोत्ता : स्त्री० (मुत्ता < मुक्ता) = मोती : मोत्ता २३
मोल : पुं० (मुल्ल < मूल्य) = कीमत : मोलु २७, मोलु ३४
मोह् : सक० (मोहय्) = मुग्ध करना : मोहंथि ३, मोही १०, मोहइ ११, मोहइ १३, मोहइ १६
म्वाझथि : पुं० (मज्झत्थ < माध्यस्थ्य) = मध्यस्थता, तटस्थताः म्वाझथि २०
म्वाल : पुं० (मल्ल) = भीत का अवष्टम्भन स्तम्भ : म्वालउ १३
र : अ० (अरे) = संबोधन अथवा पादपूर्ति के लिए प्रयुक्त शब्द : र ३४, र ३८, र ३७, र ४०, र ४३, र ४३, र ४३,
रंग : पुं० (रङ्ग) = वर्ण, रंग : वेरंगा १७
रजायसु : पुं० (राजादेश) = राजाज्ञा : रजायसु २९

रत : पुं० (रत्त < रक्त) = लाल वर्ण, लाल रंग, रक्त, रुधिर : रत्तु ३०, रतु ३३, रत ४०

रति : स्त्री० (रति) = कामदेव की अर्द्धांगिनी : रति ४४

रतूपल : पुं० (रक्तोपल) = लाल कमल : रतूपल ४२

रयणि : स्त्री० (रजनी) = रात : रयणिमुहां २१

रवि : न० (रवि) = सूर्य : रवि २०

रांगिअ : वि० (रञ्जित) = रंगा हुआ : रांग २२

राइ : स्त्री० (राजि) = श्रेणी : रोमराइ ३८

राउल : स्त्री० : एक नायिका का नाम : राउ [ल] ११, राउल १२, राउल १३, राउल १४

राउल : पुं० (राजकुल) = राजगृह : राउल १०, राउलु १४, राउलें २८ [रा]-उलु ४५, राउलवेल १, राउलवेल ४६

राजा : पुं० (राजन्) : राजइ १

राणा : पुं० (राजन्य ?) : राणइ १

रात : पुं० (रत्त < रक्त) = लाल वर्ण, लाल रंग : रातउ २, रातऊ ४, रातउ १२, राते २३

राहु : पुं० (राह-देशज) = पलित या श्वेत केशवाला : राहू १९,

राहु : पुं० (राहु) ग्रह-विशेष : राहूं २०

रीठ : न० (रिष्ट) = वलय (?) : रीठे ८

रूअ : पुं० (रूप) = आकृति : रूउ २६

रूच् : सक० (रुच्च < रुच्) = रुचना, पसंदपड़ना : रूचइ ३, रूचइ २८, रूचइ ४५

रूर : वि० (रूर) = सुंदर : रूरी २१, रूरउ ३०, रूरींहि ३०, रूरे ३१, रूरउ ३१, रूरउ ३३

रे : अ० (रे) = संभाषण में प्रयुक्त अव्यय : रे १९, रे १९, रे २१, रे २१, रे २२ रे २२, रे २३, रे ४१

रेख : स्त्री० (रेखा) = रेखा : रेख ७, रेख ३१

रोड : पुं० = रचना के कवि का नाम : रोड (डें) १, रोडें ४६

रोम : पुं० (रोमन्) = लोम, रोआँ, : रोमावलि २५, रोमांइ ३८

लड : पुं० (देशज) = माला की लड़ियाँ : सोलडहउ २९ (दे० लर)

लडहिम्व : स्त्री० (देशज) = रम्यता, सुन्दरता : लडटिम्ब २०

लद्ध : वि० (लब्ध) = प्राप्त : लद्धा १५ (दे० लाध्)

लर : पुं० (देशज) = माला की लड़ियाँ : पंचलर २३ (दे० लड)

लह् : सक० (लभ्) = प्राप्त करना : लहि २३

लांव : वि० (लम्ब) = लंबा, दीर्घ : लांवउ १२

लांवझ : पुं० (देशज) = वस्त्र-विशेष : लांवझ १२
लाग : वि० (लग्न) = लगा हुआ : लागु २३
लाछि : स्त्री० (लक्ष्मी) = लक्ष्मी : लांछि २८, लाछिहि करउ ४२, लाछि ४३
लाठा : वि० (लट्ठ–दे०) = सुदर, रम्य : ला ठा ८
लाध् : सक० (लभ्) = प्राप्त करना : लाघी ३५, लाघी ३५, लाधी ४४ : दे० 'लद्ध'
लान्हृ : वि० (देशज) = नन्हा, छोटा : लान्हृ ८
ले : सक० (लय < ला) = लेना, ग्रहण करना : लिअहि ७
लेख : पुं० (लेख्य) = लेखा : लेखु ३२
लोक : पुं० (लोक) = जन, लोग, समाज : लोकहंची ७, लोकहिं ४२
लोणचि : स्त्री० (लवणता) = लावण्य : लोणचि ७
वंडिरा : पुं० (बंडि < बन्दिन्) = स्तुति-पाठक, मंगल-पाठक : वंडिरो १९, वंडिरो २२, वंडिरो २४, वंडिरो २६

वखाण् : सक० (व्याख्यानय्) = विवरण देना, कहना : वखाणी १, वखाण ह १ वखाणी ४६

वछडा : पुं० (देशज) = वस्त्र-विशेष, पछेला (?) : वछडा १८
वत्थु।वथु : स्त्री० (वस्तु) = पदार्थ, चीज : वत्थु १७, वथुं ४५
वद्ध : वि० (वद्ध) = बंधा हुआ : वद्धा १५
वन : पुं० (वण्ण < वर्ण) = रंग : वनां ५
वनवार : स्त्रीक्‍० (वण्णवाल < पर्णमाला) = ललाट पर का एक आभरण : वन वारां २२

वन्न : सक० (वण्ण < वर्णय्) = वर्णन करना : वन्निज्जइ १५
वर : पुं० (बल) = बल : वर २ ९८
वर्व्वर : वि० (वर्वर) = पामर, मूर्ख : वर्व्वर २१, वर्व्वर २१, वर्व्वर २१
वलिअ : वि० (वलित) = जिसको बल चढ़ाया गया हो; रस्सी : बलिअ ६
वह : सक० (वह) = धारण करना : वहइ ४०
वा : स० (असौ?) = वह : वाही २५, वाही ४०
वाउल : वि० (व्याकुल) = घबड़ाया हुआ, अथवा (वातूल) = उन्मादग्रस्त वाउल १२

वाखर , पुं० (पक्ष) = आधा : वाखर १४
वाझ् : सक० (वज्ज < वर्जय्) = त्यागना वाझइ २९
वाटुले : वि० (वर्त्तुल) = वृत्ताकार, गोल : वाटुला ३७, वाटुलाहं ४२
वाध : वि० (बद्ध) = बँधा हुआ : वाधउ ४, वाध ६, वाधेन्हु २० वाधी ३७
वान् : सक० (वण्ण < वर्णय्) = वर्णन करना : वानतु ६, वानतु १९ वानसि १९ वानति ३२, वा(न)इ ३५, वानइ ३५

वन : पुं० (वण्ण < वर्ण) = वर्ण : वान्, ८, वानउ ११, वान २७, २९, वानाहं ३१,

वानणी : स्त्री० (वाणिनी) = नटी, नर्तकी, मायाविनी स्त्री : वानणी ३६,

वार् : सक० (वारय्) = रोकना, निषेध करना : वारसि २२

वारि : न० (वारि) = जल : वारि ३८

वाल : स्त्री० (बाला) = बाला, स्त्री : वाल ३७

वाहडिअ : पुं० (बाहु) = हाथ, भुजा : वाहडिअउ १२

वि : वि० (द्वि) = दो : वि० २६, वि ४१

विअइल : पुं० (विचकिल) = चमेली की जाति का एक फूल : विअइल ६

विच : पुं० (विच्च-देशज) = बीच, मध्य : विचं २५

विण : अ० (विणा < विना) = बिना : विणु ५, विणु २२

विग्गय : पुं० (विच्च-देशज) = बीच, मध्य : वियर्याहिं १७

विलघ् : सक० (वि + लभ्) = प्राप्त करना : विलघी ३६

वीज : वि० (विअ < द्वितीय) = द्वितीया तिथि : वीजेर २५

वींवी : स्त्री० (बिम्बी) = कुँदरू की लता : वींवी ३५

वुद्धि : स्त्री० (बुद्धि) = मति, प्रज्ञा : वुद्धि २२ (दे० वूधि)

वूच् : सक० (वुच्च < वच्) = कहना : वूचइ ४५

वूझ : सक० (बुध्) = जानना, समझना : वूझइ ४५

वूधि : स्त्री० (बुद्धि) = मति, प्रज्ञा : वूधि ३६ (दे० वुद्धि)

वृहस्पति : पुं० (बृहस्पति) = देव-गुरु : वृहस्पतिही ३२

वे : वि० (द्वि) = दो : वेरंगा १७

वेंटी : स्त्री० (वृंत + इका) = फल-पत्र आदि का बन्धन : वेंटी २६

वेटी : स्त्री० (बिट्टी-देशज) = पुत्री, लड़की : वेटिया ५

वेटुल : वि० (वर्तुल) = वृत्ताकार, गोल : वेटुला २२

वेड : पुं० (वेढ < वेष्ट) = वेष्टन, लपेटन : वेन्डेन्हु २०

वेल : पुं० (वेल्ल-देशज) = विलास, काम-पीड़ा : राउल वेल ४६

वेस : पुँ० (वेष) = शरीर पर वस्त्र आदि की सज्जा : वेस ५, वेसु ९, वेसु १०, वेस १९, वेस १९, वेसहि २७, वेस ४०, वेसु ४१, वसहं करी ४३, वेसु ४३, सुवेस ४५

वेह : सक० (वीक्ष्) = देखना : वेहु १५, वेहु १८

वोड : पुं० (देशज) = चादर, उत्तरीय : वोडा ८, वोड ४०

वोल्।वोल्ल: सक० (बोल्ल-देशज) = बोलना, कहना : वोल्लें ६, वोलइ २८, वोलउ ४१

वोल : पुं० (बोल–देशज) = बोल, कलकल : वोलु २७, वोलु ३४, वोलु ३५, वोलहिं ४४

वोल्ल : पुं० (बोल–देशज) = बोल, कलकल वोल्ल १८ (दे० वोल)

स : सर्व० स्त्री० (सा) = वह : स १९, स ३५, सही ३६, स ३६ सइ ३७ स ३८, स ३९, स ३९, स ४०, स ४१, स ४३, स ४३

सउ : वि० (सर्व ?) = सउ १३, सउ १६

संकरी : स्त्री० (शङ्करी) = पार्वती : संकरीहि ३१

संगवँ : पुं० (सङ्गम) = नदियों का मिलान : संगउं १७

संझ : स्त्री० (सन्ध्या) = साँझ, सायंकाल : संझहि १७

संडन : मंडन का अनुरणानात्मक शब्द : संडन १६

संद : वि० (सान्द्र) = सघन, निबिड़, : सदा १८

संसार : पुं० (संसार) = जगत्, विश्व : संसारु ३९

सज् : अक० (सस्ज्) = तैयार होना, सजना : सजइ ३६

सतावीस : वि० (सप्तविंशति) = सत्ताईस : सतावीस ३७

सनाह। सन्नाह : पुं० (सन्नाह) = कवच, बख़तर : सन्नाहु १७, सनाहु ४०

समुदाइ : पुं० (समुदाय) = मिलन : समुदाइ ३६

सयल : वि० (सकल) = सब, समग्र : सयलह १३

सरय : पुं० न० (शरद्) = ऋतु-विशेष : सरय २५

सरस : पुं० न० (देशज) = सह, साथ : सरसो २३ (दे० सरिस)

सराह : सक० (सलाह < श्लाघ) = प्रशंसा करना : सराहंत २६

सरिस : वि० (सदृश) = समान : सरिसी २१

सरिस : पु० न० (देशज) = सह, साथ : सरिसउ ४४, (दे० सरस)

सव : स० (सर्व) = सब : सव १७, सवम्हु २४, सव २६, सवु २७, सवहं ३१ सवहं ३४, सव ४०, सवही ४३

सवाण : वि० (सवण) = समान वर्ण का : सवाणा १५

ससि : पुं० (शशिन्) = चंद्रमा : ससि २२, ससि २६

सा : सर्व० : स्त्री० [सा] = वह : सा १४, सा १८

सात : वि० (सत्त < सप्त) = सात : सात ३८, [सा] तहं ४६

सान्ह : सर्व० (देशज) = वह : निर्जीव पदार्थों के लिए : सान्ह ८, सान्ह ३०, सान्हींहि ३०, सान्हाहं ३१

साम्वल : वि० (सामल < श्यामल) = साँवला : साम्वली ४३

सारिख : वि० (सदृश) = समान : सारिखउ २९

साव : स० (सव्व < सर्व) = सब : सावइ २०

साहर : स्त्री० (संकल < शृङ्खला) = जंजीर : साहर १२

सिंदूरिअ।सिंदूरी: वि० (सिन्दूरित) = सिन्दूर से रंगा हुआ : सिंदूरिअउ २९, सिंदूरी ४३

सीझ् : अक० (सिज्झ < सिध्) = निष्पन्न होना : सी (झ) इ २९

सु– : अ० (सु) = अच्छा : सुआणु १९, सुपवाणु ३०, सुरेखु ३२, सुवेस ४५

सुआण : पुं० (सुवाण < सुवण्ण < सुवर्ण) = अच्छा वर्ण : सुआणु १९,

सुठु : अ० (सुठ्ठु < सुष्ठु) = अतिशय, अत्यन्त : सुठु ४, सुठु १३, सुठु ४४

सुण् : सक० (श्रु) = सुनना : सुणि [अ] हि २६, सुणण ३५, सुणिआ ४२

सुत : पुं० (सूत्र) = धागा : सुतेरउ २४ (दे० सूत)

सुपवाण : पुं० (सुप्रमाण) सही : सुपवाणु ३०

सुरेख : (सुरेख) = अच्छी रेखाओं वाला, सुघड़ : सुरेखु ३१

सुहाव् : सक० (सुखाय्) = सुखी करना : सुहावइ ३ सुहावइ १४

सुहाव : वि० (स्वभाव) = स्वाभाविक : सुहावा १८, सुहावउ ३५

सूझ् : अक० (शुध्) = सूझना, जान पड़ना : सूझइ (?) ३२

सूत : पुं० दु० (सूत्र) = धागा : सूतू २४, सूतेर २५, (दे० सुत)

सेंदुर : पुं० (सिन्दूर) = सिन्दूर : सेंदूरी २६

सेलदही : दक्षिण भारत का एक महीन वस्त्र : सेलदही २६,

सो : सर्वं० (स) = वह : सो १, सो ३, सो ११, सो ११, सो १२, सो १२, सो १३, सो १५, सो १५, सो १७, सो २३, सो २३, सो २४, सोए २४, सो २७, सो २७, सो ३०

सो : वि० (सय < शत) = सौ : सोलडहउ २९,

सोइर : पुं० (सौन्दर्य) सुन्दरता : सोइर ३१,

सोना : न० (सुवण्ण < सुवर्ण) = सोना धातु : सोना २३, सोनाह करा ३७, सोना केरा ३९

सोभ : स्त्री० (शोभा) = दीप्ति, चमक : सोभ ३६, सोभ ४३ (दे० सोह)

सोह् : अक० (शुभ्) = शोभना, चमकना : सोहइ ७, सोही १०, [सो] हइ ११, सोहइ १३, सोहहिं १६, सोहइ १६ सोहइ १८, सोह २२,

सोह : स्त्री० (शोभा) = दीप्ति, चमक : सोह २, सोह ४, सोह ५, सोहहिं ११, सोहहिं १३, सोहइं २२, सोहरे, २२, सोहन्हु २४, सोह २६, सोह ३५, सोह ३८, सोहहि करइ ३८, सोह ३९, सोह ४०, सोह ४१, सोह ४२

–हर : पुं० (भर) = भार, गुरुत्व : थणहर माझे २४, थणहरु २४

हथियार : पुं० (देशज) = शस्त्रास्त्र : हथिआरहु २८, हथिआरु ३२

हर् : सक० (हृ) = हरण करना : हरइ ३६

हरिण : पुं० (हरिण) = हिरन : हरिणु ३३

हस् : अक० (हस्) = हंसना, उपहास करना : हसीजइ २३

हांस : पुं० (हंस) = प्रसिद्ध पक्षि-विशेष : हांस १४

हाथ : पुं० (हत्थ < हस्त) = हाथ : हाथिहि ८, [हा] थहिं १३, हाथहीं ३९

हार् : अक० (हारय्) = पराभव पाना : हारे २१, हारसि २२

हार : पुं० (हार) = माला : हारु २४, हारन्हुंकर २४, हारु २४, हारु २५, हारु ३९

हास : पुं० (हास) = हँसी : हासें १, हासें ४६

हि।ही : अ० (हि) = ही : उवेसुहि २८, पूनिवहि पूनिवहि ३५, तिवलिहि ३८, वाही ४०

हिआ।हीअ : न० (हिअय < हृदय) = हृदय, : हीआ १४, हिआ, ३४, हिअइ ४४

हिं।हिं : अ० (हि) = ही : हीं ३९, हीं ४१, हीं ४३, हिं ४४

हु,हू।हुं,हूं : अ० (देशज) = भी : हुं १५, हुं १५, हु २०, हू २३, हुं २८, हु २८, हुं ३२, हु ३३, हुं ३८, हुं ३९

हु : अक० (भू) = होना : हो १७, हू १८, हुअउ ३९

हुत : वि० (भूत) = बना हुआ : हुतें २३

हुण : हुंपुं० (हूण) = इस नाम के प्रसिद्ध अनार्य देश का निवासी : हुणि ९

हो : क्रु० (हो) = संबोधन या आमंत्रण का अव्यय : हो ४१, हो ४१

●